संगीत के उन्नयन में हाड़ौती एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों की भूमिका

Sangeet Ke Unnayan Me Hadoti Evm Dhundhar Kshetra Ke Shikshan Sansthano Ki Bhoomika.

कोटा विश्वविद्यालय कोटा की पीएच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

संगीत विभाग
राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या
महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)
(कोटा विश्वविद्यालय, कोटा)

शोध निर्देशक
डॉ.राजेन्द्र माहेश्वरी
(संगीत प्राध्यापक)
राजकीय जानकी देवी
बजाज कन्या महाविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

प्रस्तुतकर्ता
गणेश लाल बारेठ
(संगीत प्राध्यापक)
सेक्रेड हार्ट महाविधालय
नया नोहरा, बारां,रोड़
कोटा (राजस्थान)

2016

vuØef.kdk

संगीत के उन्नयन में हाड़ौती एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों की भूमिका

Sangeet Ke Unnayan Me Hadoti Evm Dhundhar Kshetra Ke Shikshan Sansthano Ki Bhoomika.

	i"B l[;k
प्राक्कथन	3
vkHkkj çn'ku	7
प्रथम अध्याय	10—55
jkt LFkku dk lkL—frd ifjo'k ¼,d ifjp;½	11
1. राज्य का हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र।	21
2. संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से पूर्व का परिवेश।	35
3. संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के बाद का परिदृश्य।	46
4. संगीत शिक्षण संस्थाओं का वर्तमान स्वरूप।	50
द्वितीय अध्याय	56
हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की संगीत शिक्षण संस्थायें।	57—111
1. संगीत शिक्षक की अवधारणा एवं प्रारम्भिक पाठ्यक्रम।	61—75
2. स्वाधीनता से पूर्व स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान।	76—78
3- स्वाधीनता के पश्चात् स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान।	79&111

1. विश्वविद्यालय स्तर के संस्थान
2. महाविद्यालय स्तर के संस्थान
3 निजी एवं अशासकीय शिक्षण संस्थान

तृतीय अध्याय 112

''कला एवं ललित कला के सामाजिक सरोकार'' 113–196

1. कला का अर्थ (संगीत कला के परिप्रेक्ष्य में) 130–140
2. संगीत शिक्षा का नवीन पाठ्यक्रम। 141–176
3. संगीत कला की सृजनात्मकता एवं सामाजिक सरोकार। 177–189
4. संगीत कला के विभिन्न व्यावसायिक आयाम। 190–196

चतुर्थ अध्याय 197

संगीत शिक्षण संस्थाओं के संगीत शिक्षक कलाकार एवं उनका योगदान। 198–230

पंचम अध्याय 231

राज्य एवं राष्ट्रीय परिवेश में प्रचलित संगीत शिक्षा की दशा व दिशा। 232–249

षष्टम अध्याय 250

उपसंहार, एक भावी शोध संभावनाएँ। 251–260

हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की संगीत शिक्षण संस्थाओं की प्रमुख (झलकियाँ) 261&268

I nHk xUFk I ph 269–271

शोध अभिलेख पत्र

1. संगीत कला के विभिन्न व्यावसायिक आयाम, नवम्बर, 2015 संगीत कार्यालय, हाथरस (उत्तरप्रदेश) ISSN.0970-7824
2. समाज में संगीत की उपयोगिता, यूनिटी ऑफ राजस्थान, जयपुर (पाक्षिक समाचार पत्र) RNI-NO-RAJHIN/2010/34357
3. जीवन में संगीत का महत्व, औदीच्य संदेश (त्रैमासिक) कोटा (रजि.क्र0 26223/74)

çkDdFku

मानवीय मनोभावों की अभिव्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट माध्यम संगीत है जिसके द्वारा शुष्कतम जीवन में सरसता का संचार होता है। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक माना जाता है।

कलात्मक अभिव्यक्ति का प्राकट्य मानव मन का प्रधान गुण माना गया है एवम् मानवीय मन के विभिन्न भागों को अभिव्यक्ति करने की यह प्रवृति आदिम अवस्था से लेकर आज तक चली आ रही है। संगीत कला के पुरातन काल में जहाँ मानव ने स्वतंत्र रूप से विभिन्न भावों को प्रकट किया तो सभ्यता काल तक आते–आते निष्णात कलाकार के रूप में गुरू की अवधारणा प्रकट हुई है।

गुरू की यह अवधारणा एक और जहाँ पारम्परिक कला क्षेत्र में गुरू शिष्य परम्परा के रूप में विकसित हुई वहीं 20 वीं शताब्दी में राज्य के हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध संगीत विभागों में भी कला सृजन तथा कला इतिहास के संदर्भ में अकादमिक शिक्षा प्रारम्भ हुई।

राजस्थान का हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र संगीत की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। हाड़ौती क्षेत्र के अन्तर्गत कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड़ तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत टोंक, जयपुर, तथा दौसा इत्यादि जिलों की गणना की गयी है। हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की सभी संगीत शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन करने के उपरान्त यह सत्य प्रकट हुआ है की वर्तमान संगीत जगत

में कई कलाकार राज्य की शिक्षण संस्थाओं के विभागों से निष्णात होकर संगीत जगत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है।

हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत कला शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के साथ–साथ राज्य के कई संगीत शिक्षक कलाकार विभिन्न सांगीतिक प्रयोगों का सृजन करते आए है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मेरा मंतव्य क्षेत्र की सभी संगीत शिक्षण संस्थाओं एवं उनके कला स्वरूप को उजागर करना है।

संगीत शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से संगीत जगत में सृजनरत कलाकारों का परिचय तथा संगीत उन्नयन में इन शिक्षण संस्थाओं की रचनात्मक भूमिका को इंगित कर संगीत अभ्यास एवं ज्ञान के संन्दर्भ में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है।

इन सभी शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संगीत कार्यक्रमों की समीक्षा कर गुरू–शिष्य परम्परा तथा अकादमिक संगीत कला शिक्षण के मूल उद्वेश्यों को प्रकट किया गया है।

v/;;u dk Lo:i

''संगीत के उन्नयन में हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के शिक्षण संस्थाओं की भूमिका'' प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कोटा विश्वविद्यालय कोटा द्वारा सन् 2013 में पीएच.डी. की उपाधि के लिए स्वीकृत किया गया है। इस समस्त प्रबन्ध को मैंने छः अध्यायों में विभक्त किया है,

जिसके माध्यम से संगीत के उन्नयन में हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं की मूल भूमिका को उजागर करना मेरा एक विनम्र प्रयास

रहा है। शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में राजस्थान के सांस्कृतिक स्वरूप को दर्शाते हुए हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र का परिचय करवाया गया है।

संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से पूर्व तथा बाद के परिवेश को उल्लेखित करते हुए इन शिक्षण संस्थाओं के वर्तमान स्वरूप को उजागर किया गया है।

द्वितीय अध्याय में संगीत शिक्षक के कर्तव्यों एवं स्वाधीनता से पूर्व तथा स्वाधीनता के बाद स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान जिनमें महाविद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर के शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों का परिचय करवाते हुए उनकी रचनात्मक भूमिकाओं को इंगित किया गया है।

तृतीय अध्याय में कला एवं ललित कला का सामाजिक संबंध, कला का, अर्थ (संगीत कला के परिप्रेक्ष्य में) संगीत शिक्षा का नवीन पाठ्यक्रम, संगीत कला की सृजनात्मकता एवं सामाजिक सरोकार तथा संगीत कला के विभिन्न व्यावसायिक आयाम आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत संगीत शिक्षण संस्थाओं के संगीत शिक्षक कलाकारों का परिचय करवाते हुए उनके सांगीतिक योगदान को उल्लेखित किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत राज्य एवं राष्ट्रीय परिवेश में प्रचलित संगीत शिक्षा की दशा व दिशा को रेखांकित किया गया है।

षष्टम अध्याय में उपसंहार के अन्तर्गत शोध से प्राप्त निष्कर्षो तथा भावी शोध सम्भावनाओं को निरूपित किया गया है।

इस शोध कार्य के लिए विभिन्न पत्रिकाओं, शोध–ग्रन्थों, कला विषयक पुस्तकों के अध्ययन एवं हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी संगीत शिक्षण

संस्थाओं के संगीत विभागों में कार्यरत संगीत शिक्षकों एवं संगीत विभागाध्यक्षों से संम्पर्क स्थापित कर, प्रश्नावली के माध्यम से साक्षात्कार कर शोध सामग्री को एकत्रित कर विषय के अधिकाधिक मूल में जाने का प्रयास किया गया है।

जिससे प्रमाणिक एवं अधिकाधिक जानकारी प्राप्त कर प्रकाश में लाई जा सके। इस पुण्य कार्य हेतु शोध विषयक सामग्री एकत्र करने में मुझे थोड़ी कठिनाई अवश्य हुई परन्तु हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के संगीत शिक्षण संस्थाओं की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में कौतूहलपूर्ण उत्साह एवं अपार श्रद्वा का प्राबल्य होने के कारण मैने अपना कार्य बिना किसी कठिनाई की परवाह किये रूचि के साथ करने का प्रयास किया है।

संगीत के उन्नयन में हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं की भूमिका विषय पर मेरा यह अतिअल्प प्रयास है, जो विद्वजन के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें मुझे कहाँ तक सफलता मिली है उसका निर्णय सहृदय विज्ञ ही करेंगे, क्योंकि साफल्य निष्कर्ष वस्तुतः उन्ही का परितोश है।

प्रदत्त प्रश्नावली के माध्यम से विभिन्न संगीत महानुभावों तथा संगीत विभागों से साक्षात्कार कर उनके द्वारा भरी हुई प्रश्नावलियाँ विभिन्न पत्रिकाएँ, शोध ग्रन्थ प्रमाण के तौर पर viu ikl lqjf{kr gA

vkHkkj&çn'kZu

Jh x.ks'k ,oa eka ljLorh rFkk eka chtklu bUnzx<+ njckj dk oUnu djrs gq;s ije vkuUn Lo:i ,oa fo'odY;k.kdkjh nsoh&nsorkvksa ds pj.kksa esa ureLrd djrk gw¡] ftuds vk'khokZn ,oa —ik n`f"V ls gh ;g 'kks/k izcU/k lQyrk dh vksj vxzlj gqvkA oLrqr% ;g 'kks/k dk;Z ,d lqxfBr dk;Zokgh ds fcuk vlEHko gksrk gS] D;ksafd ;g xq:tuksa lgikfB;ksa fo}tuksa ,oa ikfjokfjd lnL;ksa dh lgk;rk ds fcuk bl dk;Z dk lEiUu gksuk vR;Ur dfBu gksrk gSA blfy, bu lHkh dk vkHkkj O;Dr djrs gq, lozçFke esjs ije iwT; firk Lo- Jh Hkaojyky ckjSB ,oa eka Hkaojh nsoh ckjSB dks g`n; ls ueu djrk gw¡A ftudk vk'khokZn lnSo esjs lkFk jgk gSA

esjs Kku p{kqvksa dks vkyksfdr djds esjs 'kks/k dk;Z dh çFke uhao Mkydj mls çkjEHk djkus ds fy, ije J)s; ,oa çj.kk L=ksr xq:oj ,oa 'kks/k çcU/k ds funsZ'kd Mk- jktsUnz egs'ojh ¼laxhr çoDrk½ jktdh; tkudh nsoh ctkt dU;k egkfo|ky;] dksVk dks ueu djrk gw¡A

;g 'kks/k izcU/k buds vk'khokZn ,oa lkgknzi.kZ ikRlkgu dk ifrQy gSA Mk0 jktsUnz th dh lrr izsj.kk rFkk muds ekxZn'kZu ds ifj.kkeLo:Ik ;g dk;Z fuf'pr vof/k esa lEiUu gks ik;k gSA

e§ l¡xhr foHkkx jktdh; tkudh noh ctkt dU;k egkfo|ky;] dkVk d¢ lHkh ije vknj.kh; iwoDrk ,o¡ deZpkfj;k¢a dk i.kZ lg;kx d¢ fy, ân; l¢ vkHkkj O;Dr djrk g¡wA gkMkZrh ,o¡ <¢<kM¢ {k= fLFkr lHkh l¡xhr f'k{k.k lLFkkvk¢a ,o¡ mue¢a dk;Zjr l¡xhr i¡k/;kidk¢a dk e§ vR;Ur vkHkkjh g¡wA

ftUgkus e¢>s iFke HkkV e¢a gh e¢js }kjk nh xbZ lo¢{k.k i¡'ukoyh dk¢ 'kh?kz Hkjdj e¢>s vko';d tkudkfj;k¡ miyC/k djokdj vk'khokZn inku fd;kA

bud¢ vfrfjDr ftu&ftu x¡.kh tuk¢a dh —fr;k¢a] 'kk¢/k i¡cU/kk¢a ,o¡ i= if=dkvk¢a e¢a i¡dkf'kr y¢[kk¢a }kjk e¢>s 'kk¢/k i¡cU/k e¢a lgk;rk ikIr gqbZ e¢a mu lHkh x¡:tuk¢a dk ân; l¢ ije —rK g¡wA

iLr¡r 'kk¢/k i¡cU/k dh lkexzh l¡p;u e¢a e¢>s fofHkUu iqLrdky;k¢a d¢ vf/kdkfj;k¢a }kjk lg;kx inku fd;k x;k ftue¢a jktLFkku fo'ofo|ky; iqLrdky; t;iqj] jktLFkku l¡xhr lLFkku iqLrdky; t;iqj] o/kZeku egkohj [kqyk fo'ofo|ky; iqLrdky; dkVk] jktdh; tkudh noh ctkt dU;k egkfo|ky; iqLrdky; dkVk] jktdh; egkfo|ky; iqLrdky;] cUnh rFkk cuLFkyh fo|kihB iqLrdky; cuLFkyh dk uke iz[kqrk l¢ fy;k tk ldrk gwA

e§ viuh ifRu Jherh vfurk ckjSB dk Hkh ân; l¢ vkHkkj O;Dr djrk g¡ ftl¢ viuh lqfo/kk&vlqfo/kk dk fopkj u djr¢ gq, e¢>s fujUrj dk;Z djus dh iszj.kk nhr¢ gq, viuk i.kZ lg;kx inku fd;kA

eSa viuh vxzt Hkzkrk Jh lhrkjke Mkxh ¼rduhf'k;u½ Jh uUnjke jk.kk] Jh jktsUnz dqekj jk.kk] vfouk'k jk.kk] euh"k jk.kk] Jh deys'k dqekj jk.kk] ¼t;iqj½] Jh iqgykn jk.kk ¼Vksd½] Jh pUnizdk'k tSu] Jh vkeizdk'k tSu] ¼vfy;kjh okys½] Jh ?ku';ke Mkxh] ¼gkFkhdksbZ½ Jh jk/ks';ke ckjsB] lqxhr v/;kid ¼fuokbZ½] Jh dUgS;k yky pkSgku ¼RAC.KOTA½] Jh rqylhjke lSuh lqxhr v/;kid] >kykokM+ rFkk esjs Hkzkrh tu&Hkzkrhtu /kesZUnz Mkxh] jk[kh Mkxh] Hkkbtk&Hkkbth] egs'k ckjsB] jkedU;k ckjsB ,oa Jh eqd;d HkkfV;k] Jh iqgykn dqekj ukxj ¼v/;kid½] Jh nqxkZ 'kadj oekZ ¼Hkkrio Fkkukunkj lkgc½ rFkk Jh x.ks'k fotp;oxhZ; ¼dksVk½ dk fo'ks"k vkHkkjh gwaA

ftUgksaus eq>s iz.kk lg;ksx ndj fujUrj izxfr'khy jgus dh izsj.kk nhA eSa esjh eerke;h ekW rFkk esjs firk rqY; 'olqj Jh jkeniz th jk.kk] esjs lkMw th Jh x.ks'k jk.kk] dk eSa fo'ks"k vkHkkjh gwA esjh ekW rFkk esjs Lo- firk Jh Hkqojyky ckjsB dk vk'khokZn lnSo gh esjs lkFk 'kks/k dk;Z dks iw.kZ dj ik;k gwaA

dEI;wVj ij dk;Z djus esa Jh fnus'k fot;oxhZ; ,oa Jh j.kthr flag jktkor dk fo'ks"k vkHkkjh gwa ftudk lg;ksx ls 'kks/k izcU/k dks le; ij izLrqr djus esa lQy gks ldkA vUr esa eSa viuh ifjokj ds vU; lHkh lnL;ksa] fe=ksa ,oa lg;ksfx;ksa dk ân; ls vkHkkj O;Dr djrk gwa] ftudk eq>s izR;{k vFkok vizR;{k :i ls lrr~ lg;ksx izkIr gqvkA

¼x.ks'k yky ckjsB½

çFke v/;k;

1- jktLFkku dk lkaLd`frd ifjos'k ¼,d ifjp;½

2- jkT; dk gkMkSrh o <w<kM+ {ks=

3- laxhr f'k{k.k laLFkkvksa dh LFkkiuk ls iwoZ dk ifjos'k

4- laxhr f'k{k.k laLFkkvksa dh LFkkiuk ds ckn dk ifjn`';

5- laxhr f'k{k.k laLFkkvksa dk orZeku Lo:i

jktLFkku dk ifjp;

राजस्थान राज्य को भारत का सबसे बड़ा राज्य होने का गौरव प्राप्त है, साथ ही यह विविधताओं से युक्त एक विशिष्ट राज्य है। यहाँ की संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था का विकास ऐतिहासिक एवं भौगौलिक परिस्थितियों की देन है, जो सदियों से यहाँ विविधताओं में एकता का सूत्रपात करती आ रही है। यहाँ की ऐतिहासिक, भौगोलिक व सांस्कृतिक धरोहर सदैव आकर्षण का केन्द्र रही है।

राजस्थान का इतिहास हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का सदैव बखान करता है। यहाँ के दुर्ग व किले हमारे साहस व सम्पन्न्ता का प्रतीक है। राजस्थान की इस प्राचीन भूमि पर अनेक सभ्यताओं ने जन्म लिया है, जिनमें पाषाण कालीन, सिन्धु कालीन व ताम्रयुगीन सभ्यताएँ प्रमुख है।

इन सभ्यताओं के पश्चात् यहाँ अनेक राजपूत शासकों का आगमन हुआ, जिन्होने इस प्रदेश को कई रियासतों में बाँट दिया। इस पूरे प्रदेश पर राजपूत शासकों का आधिपत्य होने के कारण इसे राजपूताना कहा जाने लगा। सर्वप्रथम वाल्मीकि ने राजस्थान प्रदेश को मरूकान्तर कहा है।[1]. अबुल फजल ने भी राजस्थान प्रदेश के लिये मरूभूमि शब्द का प्रयोग किया है।[2] राजस्थान शब्द का प्रथम प्रयोग 682 विक्रम संवत् के बसन्तगढ़ शिलालेख में मिलता है।[3]

मुहणोत नेणसी ने अपने ग्रंथ मुहणोत नेणसी री ख्यात में राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है।[4]विलियम फ्रेंकलिन ने अपनी पुस्तक ''मिलिट्री मेमोयर्स ऑफ जार्ज थामस'' में सर्वप्रथम इस तथ्य का उल्लेख किया गया है की जार्ज थॉमस ने ही राजस्थान को रातपूताना कहा है।[5]

1. डॉ. महावीर जैन, लक्ष्य, पृष्ठ संख्या 1
2. गजेन्द्र सिंह, राजस्थान संजीवनी, पृष्ठ संख्या 1
3. '' '' '' वही पृष्ठ
4. नवरंग रॉय, राय (राजस्थान का भूगोल) पृष्ठ संख्या 1
5. गजेन्द्र सिंह, राजस्थान संजीवनी, पृष्ठ संख्या 1

प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टाड ने 1829 ई0 में अपनी पुस्तक ''एनल्स एण्ड एण्टीवीटीज ऑफ राजस्थान'' में इस राज्य के लिये रायथान व राजस्थान आदि शब्दों का उल्लेख किया है।[1] वस्तुतः पूर्व तथा उत्तर मध्यकाल में लोग इसे रजवाड़ा या 'राएथान' के नाम से जानते थे, जो रजवाड़ों या राजाओं के राज्य का सूचक था। 'राजपूताना' यह नाम अंग्रेज शासकों का दिया हुआ है।

टॉड के इस भू–भाग पर आने पूर्व भी जोधपुर की अर्जी बहियों में इस प्रदेश के लिए 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग मिलता है। यहाँ पर इस संदर्भ में 1708 ई0 के एक शिलालेख की ओर संकेत करना उपयुक्त होगा जिसमे इस भू–भाग को राजस्थान नाम से अभिहित किया गया है। यह शिलालेख सरदार म्यूजियम, जोधपुर में सुरक्षित रखा गया है। शिलालेख में शब्द–प्रयोग इस प्रकार से है

''देश धर्म क्षेत्र सागर, सपवित्र क्षेत्रे तन्मध्ये।
मेरूशिखर सराज विजय, राजस्थान सनृपनिवास''।।[2]

मारवाड़ को संस्कृत ग्रन्थों में मरू, मरूमेदिनी, मरूकान्तर, मरूस्थल आदि नामों अभिहित किया गया है, जिसका अर्थ 'निर्जन' या 'रेगिस्तान' है। इस मरूमण्डल को ही राजस्थानी भाषा में मरूधरा या मारवाड़ कहा गया है। 'वाड़' का अर्थ है रक्षित और मारवाड़ का अर्थ है 'रेगिस्तान।[3]

इस राज्य का निर्माण 1 नवम्बर 1956 ई0 को किया गया।[4] वर्तमान राजस्थान राज्य 26 जनवरी 1950 ई0 को भारत का संविंधान लागू होने के साथ ही इस राज्य को राजस्थान नाम संवैधानिक रूप से प्राप्त हुआ है।[5]

---

1. डॉ. हरिमोहन सक्सैना ''राजस्थान अध्ययन'' भाग.1 पृष्ठ संख्या 3
2. डा. मंजुश्री क्षीरसागर, राजस्थान की संगीत परम्परा' पृष्ठ संख्या 1
3. डा. मंजुश्री क्षीरसागर, राजस्थान की संगीत परम्परा' पृष्ठ संख्या 1
4. आनन्द जोशी, पत्रिका इयर बुक' 2013 पृष्ठ संख्या 477
5. गजेन्द्र सिंह, राजस्थान संजीवनी, पृष्ठ संख्या 1

jktLFkku dk HkkSxksfyd ifjn`';

राजस्थान राज्य भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में 23'3' से 30'12' उत्तरी अंक्षाश से 69'30' से 78'17' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। कर्क रेखा अर्थात 23.5' राज्य के दक्षिण में बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों से गुजरती है।[1]

राज्य की उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 826 कि.मी. है तथा पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 869 कि.मी. है।[2] राज्य की पश्चिमी सीमा भारत–पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है, जो 1070 कि.मी.लम्बी है। राज्य की उत्तरी और उत्तरी–पूर्वी सीमा पंजाब तथा हरियाणा से, पूर्वी सीमा उत्तरप्रदेश एंव मध्यप्रदेश तथा दक्षिणी–पश्चिमी सीमा मध्यप्रदेश एवं गुजरात से जुड़ी हुई है।[3]

jktLFkku dk lkL—frd Lo:i

राजस्थान को सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का सबसे समृद्धशाली प्रदेश समझा जाता है यहाँ की संस्कृति एक विशाल सागर की तरह है जो गाँव–गाँव व जन–जन में समायी हुई है। राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप यहाँ के रजवाड़ों में देखा जा सकता है। इस संस्कृति को आज तक सुरक्षित रखने का सच्चा श्रेय यहाँ के गग्रमीण अंचल को है। संस्कृति के अन्तर्गत कला, साहित्य, कला–कौशल, दुर्ग, मंदिर, व किले इन सभी का अध्ययन किया जाता है।

जो आज भी हमारी संस्कृति का दर्पण है। राजस्थान की संस्कृति के अन्तर्गत रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, साहित्य–कला, त्योहार, इन सभी का अध्ययन किया जाता है। राजस्थान के सांस्कृतिक स्वरूप को दर्शाने के लिये निम्न बिन्दुओं के आधार पर यहाँ की संस्कृति पर प्रकाश डाल गया है।

---

1. डॉ0 हरिमोहन सक्सैना 'राजस्थान अध्ययन' भाग 1 ,पृष्ठ संख्या 27
2. ''   ''   '' ....वही पृष्ठ
3. ''   ''   '' '' .... वही पृष्ठ

jktLFkku d çe[k jhfr&fjokt

इस प्रदेश में अनेक प्रकार के रीति–रिवाजों का प्रचलन रहा है। शहरी क्षेत्र में इन रीति–रिवाजों के प्रचलन में थोड़ी कमी आई है लेकिन गाँवों में आज भी सारे–काम काज इन रीति–रिवाजों के आधार पर ही सम्पन्न किए जाते है। हमारे प्रमुख रीति–रिवाजो में निम्न रीति–रिवाजों को शामिल किया जाता है। जैसे : विनायक पूजन, भात भरना, वधू के तेल चढ़ाना, पाणिग्रहण संस्कार, मूडंन संस्कार इत्यादि हमारे प्रमुख रीति–रिवाज है। यहाँ सोलह संस्कारों का भी पालन किया जाता है। राजस्थान में जन्म, विवाह व मृत्यु इन सभी से सम्बन्धित कार्य इन रीति–रिवाजों के आधार पर ही सम्पन्न किए जाते है।

jktLFkku dh lk>h lL—fr

राजस्थानी जन–जीवन में समन्वय एवं उदारता के गुणों में सांझी संस्कृति को पनपने का अवसर प्रदान किया है। धार्मिक सहिष्णुता के परिणाम स्वरूप अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मे हिन्दू–मुस्लिम एकता के दर्शन होते है। जहाँ सभी धर्म के लोग एकत्र होकर इबादत् (प्रार्थना) करते है और मन्नत माँगते है। लोक देवता गोगाजी व रामदेवजी, के समाधि स्थल पर सभी धर्मानुयायी अपनी आस्था रखकर साम्प्रदायिक सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत करते है।

jktLFkku d yksd ukV;

राजस्थान में लोक नाट्य का प्रारम्भ 18 वी. शताब्दी से माना जाता है। इस प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कुचामणी, जयपुरी, तुर्रा, कलंगी, हाथरसी, शेखावाटी, अलीबख्शी, किशनगढ़ी, आदि ख्याल लोकप्रिय ख्याल रहे है।[1]

1- डॉ. हरिमोहन सक्सैना 'राजस्थान अध्ययन'' भाग 1 पृष्ठ संख्या 37

कुचामणी ख्यालों का निर्माण लच्छीराम द्वारा किया गया था। शेखावाटी ख्याल की रचना नानूराम द्वारा की गई थी। उनके द्वारा प्रतिपादित हीर–राझां, हरिशचन्द्र, भर्तृहरि, जयदेव नामक ख्याल सर्वाधिक लोकप्रिय ख्याल रहे है। इन ख्याल नाट्यों का सूत्रधार हलकारा होता है तथा इसमे नगाड़ा व हारमोनियम नामक वाद्य यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।[1]

jkt LFkku dk yksd&lxhr

लोक संगीत जन समुदाय के स्वाभाविक उद्‌गारों का प्रतिबिम्ब है। कवि रविन्द्रनाथ टेगौर ने लोक गीतों को संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है। महात्मा गांधी के शब्दों में 'लोकगीत' ही जनता की भाषा है, लोक गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार है। ''राजस्थान के विशिष्ट एवं विविध भौगोलिक परिवेश ने इस प्रदेश के लोक जीवन को सतरंगी स्वरूप प्रदान किया है।[2]

लोक संगीत का मूलाधार लोक गीत है, जिन्हे विभिन्न अवसरों एवं अनुष्ठानों पर सामूहिक रूप से गाया जाता है। लोक वाद्यों की सगंति इनके माधुर्य की वृद्वि करती है। राजस्थान के लोक संगीत में राग सौरठ व देश का प्रयोग अधिक हुआ है। तालों में दादरा, रूपक, कहरवा, आदि तालों का ही प्रयोग किया गया है। लोकगीत कई विषयों से सम्बन्धित होते है जैसे संस्कार, त्योहार, पर्व, ऋतु–देवी–देवता इत्यादि संस्कारों में ज्यादातर गर्भधारण, जन्म, विवाह, विशिष्ट मेहमानों का आगमन विशेष अवसरों पर पधारना आदि गीतों को शामिल किया जाता है।

पाणिग्रहण संस्कार पर सर्वाधिक गीत गाये जाते है। राजस्थान में माँड गायन लोक संगीत की पहचान है । माँड शैली की सुविख्यात लोक गायिका अल्लाह जिल्लाई बाई ने केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देश राजस्थानी गीत गाकर इस लोक संगीत को राजस्थान में ही नहीं अपितु विदेशों में भी इसको प्रसिद्धी दिलाई है।

---

1. कुँवर कनक सिंह राव '' राजस्थान धरोहर'' पृष्ठ संख्या 37
2. डॉ. ओम प्रकाश शर्मा राजस्थान अध्ययन भाग 3 पृष्ठ संख्या 53

jktLFkku ds çeq[k esys o mRlo

राजस्थान के सामाजिक जीवन में मेलों व उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है इन मेलों तथा उत्सवों से न केवल प्राचीन परम्परायें तथा विचारधारायें जुड़ी रहती है वरन् यह मेले तथा लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते है। राजस्थान में मनाये जाने वाले उत्सव व मेलों में कजली तीज मेला बून्दी, बरवाड़ा चौथमाता का मेला, कोटा का दशहरा मेला, खाटू श्यामजी का मेला व डिग्गी कल्याण जी का मेला प्रमुख है। उत्सवों के अन्तर्गत दीपावली, कृष्ण जन्माष्टमी, गोगा नवमी, गोवर्धन पूजा, भईयादूज, गुरूपूर्णिमा, इत्यादि उत्सव यहाँ पर धूम–धाम से मनाये जाते है।

आभूषण व वस्त्र :–राजस्थानी जन–जीवन में उमंग व तरंग का विशेष स्थान है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र रंगों से भरा हुआ है तथा जीवन की प्रत्येक अभिव्यक्ति रंगीले राजस्थान की अवधारणा को प्रमाणित करती है । आभूषणों का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में कालीबंगा तथा आहड़ से प्राप्त मूर्तियों में भी महिलाओं को चमकीली मणियों के आभूषण पहने हुए दिखाया गया है। राजस्थान में स्त्रियाँ नाक में नथ हाथों मे सफेद चूड़ला, बाजूबंद, बिछियॉ व गले में खूगांली इत्यादि आभूषणों को धारण करती है तथा वस्त्रों में घाघरा व लूगड़ी का अत्यधिक प्रयोग करती है।

jktLFkku dh lkL—frd miyfC/k;k

1. जवाहर कला केन्द्र जयपुर :–राजस्थान की लोक कलाओं, लोक गीतों,

लोक नृत्यों, एवं थियेटर चित्रकला, ख्याल, दंगल, लोक नाट्यों एवं लोक कलाओं के संरक्षण हेतु राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 1993 में जयपुर जवाहर कला केन्द्र की स्थापना की गई।[1]

1. जी.सी. जाखड़ ''शिखर'' पृष्ठ संख्या 258

2. राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर :–ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की कलाओं के संरक्षण एवं विकास हेतु 1857 ई0 में जयपुर के शासक महाराज रामसिंह द्वारा ''मदरसा–ए–हुनरी नामक कला संस्थान की स्थापना की। वर्तमान में यह संस्थान '' राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर'' के नाम से प्रसिद्ध है जो चित्रकला एवं लोक कलाओं पर शोध एवं प्रशिक्षण कार्य करवाता है।[1]

3. राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर :– लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत एवं संगीत शिक्षा के संवर्द्धन हेतु जयपुर में ''राजस्थान संगीत संस्थान'' की स्थापना 1950 ई0 में की गई।[2]

4. राजस्थान संगीत अकादमी जोधपुर :– राजस्थान में संगीत प्रधान रचनाओं वाद्यों, लोक नाट्यों, लोक नृत्यों, के समग्र विकास संवर्द्धन हेतू ''राजस्थान संगीत अकादमी'' की स्थापना जोधपुर में 6 दिसम्बर 1957 ई0 में की गई है।[3]

5. गुरूनानक संस्थान जयपुर :– इस संस्थान की स्थापना 1969 में जयपुर में की गई है। इसके द्वारा स्कूली बच्चों व आम जन को राजस्थानी कला एवं संस्कृति की सामान्य जानकरी व प्रशिक्षण दिया जाता है।[4]

6. जयपुर कथक केन्द्र :–जयपुर के प्रसिद्ध कथक घराने एवं कथक नृत्य को संरक्षण देने के लिये 1978 ई0 में जयपुर कथक केन्द्र की स्थापना की गई हैं। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य जयपुर घराने के कथक का प्रशिक्षण देने तथा नृत्य कला के प्रति रूझान पैदा करना है।[5]

7. रविन्द्र मंच जयपुर :–सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति विशेष कर नाटकों के मंचन हेतु 15 अगस्त 1963 ई0 को रामनिवास बाग परिसर में रविन्द्र मंच की स्थापना की गई है।[6]

---

1 जी.सी. जाखड़ ''शिखर'' पृष्ठ संख्या 258
2. '' '' '' '' वही पृष्ठ
3. '' '' '' '' वही पृष्ठ
4. '' '' '' '' वही पृष्ठ
5. '' '' '' '' वही पृष्ठ
6. '' '' '' '' वही पृष्ठ

8. भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर :–राजस्थान के लोक कलाकार पद्मश्री स्वः देवीलाल सामर द्वारा उदयपुर में ''भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना 1952 ई0 में की गई थी। इस संस्थान का प्रमुख कार्य कठपुतली नृत्य कला का विकास करना है।[1]

9. राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर :–राजस्थानी भाषा एंव साहित्य के विकास हेतु इसकी स्थापना 1983 ई0 में बीकानेर में गई है। इस संस्थान का प्रमुख कार्य राजस्थानी भाषा व साहित्य को बढ़ावा देना है।[2]

10. राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर :–इसकी स्थापना 24 नवम्बर 1957 ई0 को जयपुर में की गई है। इसका प्रमुख कार्य ललित कलाओं को संरक्षण çnku djuk gA[3]

Lkxhr vkj uR;

संगीत के क्षेत्र में राजस्थान की समृद्ध एवं गौरवशाली परम्पराएँ रही है। यहाँ की धरा के कण–कण में कला और संस्कृति बसी हुई है। भक्त शिरोमणी मीरा के भजनों ने जिस धरती पर संगीत की सरिता प्रवाहित की और अष्टछाप कवियों ने अपने गीतों में कृष्ण लीला का सजीव चित्रण किया वही प्रवृत्तिकाल में इस धरती के अनेक सपूतों ने संगीत की इस समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाया है।

संगीत राजस्थान के राजदरबारों की 'kkHkk था :–कई राजा महाराजा स्वंय श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। जयपुर, टोंक, अलवर, भरतपुर, बीकानेर,जोधपुर, आदि रियासतों के राजा–महाराजाओं ने संगीतज्ञों का बहुत सम्मान किया। राजस्थान में ध्रुपद, धमार, कीर्तन आदि गायन शैलियों का भी समुचित विकास हुआ है, जो आज भी हवेली संगीत की परम्परा में जीवित है।

---

1. जी.सी. जाखड़ ''शिखर'' पृष्ठ संख्या 259
2. '' '' '' '' वही पृष्ठ
3. '' '' '' '' वही पृष्ठ

ध्रुपद धमार के डागर घराने के गायक बहराम खाँ डागर प्रमुख गायक रहे है। ख्याल गायकी का मेवाती घराना तथा वाद्य संगीत मे प्रसिद्व सितार का सेनिया घराना भी राजस्थान में ही विकसित हुआ है।[1]

राजस्थान की शास्त्रीय नृत्य परम्परा में कथक नृत्य का विशेष स्थान है। जयपुर कथक नृत्य शैली का घराना माना जाता है। इस नृत्य शैली के कलाकारों में पंडित गिरधारी महाराज, राजेन्द्र गंगानी तथा डॉ. शशि सांखला प्रमुख है।[2]

राजपूत राजाओं के संरक्षण में लोक कलाओं का भी निरन्तर विकास हुआ है राजस्थान के लोक संगीत की धारा सदियों से कई रूपों में प्रवाहमान रही है। यहाँ के प्रसिद्व लोक वाद्यों मे सांरगी, रावणहत्था, रबाब, इकतारा, अलगोजा व भंपग आदि प्रमुख वाद्य यंत्र है।[3]

लोक नृत्यों का वर्गीकरण हम क्षैत्रिय लोक नृत्य, जातिय लोक न्त्य व व्यावसायिक लोक नृत्य, के रूप में कर सकते है। जिनमें शेखावटी का गीदंड़, मारवाड़ का डाडिंया, जालौर का ढ़ोल नृत्य, जसनाथी सम्प्रदाय का अग्नि नृत्य और अलवर, भरतपुर, का बम रसिया नृत्य आते है। व्यावसायिक लोक नृत्य में भवई व तेरहताली नृत्य प्रमुख है।[4]

---

1. डॉ. अमर सिंह राठौर संदर्भिका सुजम पृष्ठ संख्या 968
2. " " " " वही पृष्ठ
3. " " " " वही पृष्ठ
4. " " " " वही पृष्ठ

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है । यहाँ की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर व प्राकृतिक सौन्दर्य सदैव आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रहा है। यहाँ की प्राकृतिक छटा ने सदैव पर्यटको को अपनी और आकर्षित किया है। ऐसा माना जाता है की यहाँ की मिट्टी का कण–कण यहाँ के वीर पुरूषों की विजय गाथाओं का गुणगान करता है। राजस्थान की कला एंव संस्कृति को विश्व मे सर्वोच्य स्थान प्राप्त है। यहॉ की राजस्थानी वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, आभूषण एवं यहाँ का लोक संगीत सदैव पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है । राजस्थान के दुर्ग व किले हमारे साहस व सौन्दर्य के प्रतीक माने गये है । यहाँ अनेक प्रकार की परम्पराओं व रीति–रिवाजों का प्रचलन रहा है। यहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़े सभी कार्य इन रीति–रिवाजों के द्वारा ही सम्पन्न किये जाते है।

यहाँ अनेक मेलों का आयोजन किया जाता है। जिनमे डिग्गी कल्याणजी व खाटू श्यामजी का मेला प्रमुख है। राजस्थान में जिन उत्सवों पर मेले लगते है उनमे मुख्यतः गणेश चतुर्थी, दशहरा, कार्तिक पूर्णिमा, मेला, शिवरात्री मेला, अजमेर ख्वाजा साहब का उर्स मेला, प्रमुख है। राजस्थान का लोक नाट्य, लोक कलाएँ एवं लोक नृत्य यहाँ की कला एवं संस्कृति के परिचायक माने गये है। यहाँ की संस्कृति में एकता व प्रेम की भावना निहित है। राजस्थान की यह मरूभूमि अनेक कलाओं की जन्म स्थली रही है। यहाँ की धरती पर सभी कलाओं का विकास हुआ है। यहाँ की चित्रकला, मूर्तिकला, व संगीत कला एवं अन्य लोक कलाओं ने सदैव पर्यटकों को अपनी और आकर्षित किया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् इन कलाओं को संरक्षण भारत सरकार व राजस्थान सरकार द्वारा ही प्राप्त हो रहा है। सरकार ने कलाओं को बढ़ावा देने के लिए अनेक कला केन्द्रों की स्थापना की है। जिनमे जवाहर कला केन्द्र, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर, राजस्थान संगीत संस्थान, रविन्द्र मंच जयपुर व राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर व जयपुर कथक केन्द्र, इत्यादि सभी केन्द्र इन कलाओं को संरक्षण प्रदान करने हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

jkT; dk gkM+kSrh

,oa

<a<kM+ क्षेत्र

jkT; dk gkMkrh o <k<kM क्षेत्र

राजस्थान राज्य जहाँ एक और इसके गौरव शाली इतिहास के लिए माना जाता है, वहीं दूसरी और इसका भौतिक स्वरूप भी विशिष्टता लिए हुए है । राज्य के भौतिक पर्यावरण ने यहाँ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व आर्थिक वातावरण को सदैव प्रभावित किया है और वर्तमान में भी राज्य के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।

धर्म व संस्कृति की धरोहर का जतन करते हुए, राष्ट्र की स्वतंत्रता व शरणागत की रक्षा में अपनी आन पर प्राणों की आहूति देकर, वीरों के लिए आदर्श उपस्थित करने वाले गोब्राह्मण प्रतिपालक, हिन्दुसुरत्राण क्षत्रियों के बलिदान से गौरवान्वित रंग–रंगीला राजस्थान, भारत का ही नहीं अपितु विश्वद्वीप का भी स्वर्ग माना गया है।

रणांगण पर अपने पतियों को मंगल की कामना से भेजने वाली सैकड़ों क्षत्राणियों ने अमंगल की आशंका मात्र से धधकती ज्वालाओं में जौहर कर इस भूमि को पावन बनाया है हजारों साधु–संतों ने अपनी अमृतमयी वाणी में उपदेश देकर शताब्दियों तक जन–जन की ईश्वर व धर्म के प्रति आस्था बनाये रखते हुए यहाँ समन्वय का पाठ पढ़ाया है और इस बलिदान व सर्मपण की गाथाओं को इसी धरती पर जन्मे कवियों ने गाया है।[1]

वर्तमान राजस्थान के लिये पहले किसी एक नाम का प्रयोग नहीं मिलता है। इसके भिन्न–भिन्न क्षेत्रों को भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता था। जैसे वर्तमान बीकानेर व जोधपुर क्षेत्र को महाभारत काल में जांगलदेश के नाम से जाना जाता था।[2] जोधपुर राज्य को मारवाड़ अथवा मरू प्रदेश के नाम से जाना जाता था।[3]

---

1. डॉ. मजूं श्री क्षीर सागर राज0 की संगीत परम्परा पृष्ठ संख्या 1
2. डॉ. हरिमोहन सक्सैना –''राजस्थान अध्ययन भाग.**I (RBSE)** पृष्ठ संख्या 2
3. ....वही पृष्ठ

कोटा और बून्दी को हाड़ौती क्षेत्र के नाम से जाना जाता था । झालावाड़ का दक्षिणी भाग मालव देश के अन्तर्गत गिना जाता था।[1] जयपुर, दौसा, टोंक तथा सवाईमाधोपुर के कुछ भाग को ढूंढ़ाड़ प्रदेश कहा जाता था।[2]

राजस्थान में भी अनेक राजपूत शासकों ने अपने–अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। इनमें मारवाड़ के प्रतिहार व राठौड़, मेवाड़ के गुहिल, सांभर के चौहान, आमेर के कछवाहा एवं जैसलमेर राज्य के भाटी शासक प्रमुख रहे है।[3]

स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान–मारवाड़, ढूंढ़ाड़, शेखावटी, हाड़ौती, मेवात, मेरवाड़ा, बागढ़, मेवाड़ आदि नामों से विभिन्न प्रकार के भू–भाग में विभाजित था, जिन पर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी या अग्निवंशी राजपूत शासकों का आधिपत्य था। मारवाड़ और बीकानेर में राठौड़, ढूंढ़ाड़ में कछवाहा, हाड़ौती मे हाड़ा तथा मेवाड़ में गुहिल वंशीय शासकों का राज्य था।[4]

राजस्थान मे इन सभी वंशों में मेवाड़ का गुहिल वंश सबसे प्राचीन है तथा प्रेम और धर्मनिष्ठा तथा रक्त की पवित्रता के लिए भारत मे ही नहीं, समूचे विश्व में प्रसिद्ध है।[4]

राजस्थान को राजपूत काल में अनेक नामों पुकारा जाता था, एवं वर्तमान समय में भी राजस्थान के विभिन्न जिलों को प्राचीन नामों से ही जाना जाता है, जैसे मारवाड़, मेवाड़, हाड़ौती, शैखावटी, बागड़ व ढूंढ़ाड़ इत्यादि।

इस शोध के अन्तर्गत हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में सम्मिलित जिलों का ही अध्ययन किया गया है।

---

1. डॉ. हरिमोहन सक्सैना –''राजस्थान अध्ययन भाग.I (RBSE)पृष्ठ संख्या 2
2. आनन्द जोशी पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 699
3. डॉ. हरिमोहन सक्सैना –''राजस्थान अध्ययन भाग.I (RBSE)पृष्ठ संख्या 2
4. डा. कौमुदी बर्डे'' राजस्थान दरबारी संगीतज्ञ'' पृष्ठ संख्या 1

gkMkSrh क्षेत्र dk ifjp;

वर्तमान हाड़ौती क्षेत्र पर चौहान वंशीय हाड़ा राजपूत राजाओं का ही अधिकार था। इन चौहान शासकों ने सर्वप्रथम बून्दी पर अपना अधिकार कर बून्दी राज्य के अन्तर्गत कोटा, बारां व झालावाड़ को भी बून्दी राज्य में सम्मिलित कर लिया।

इस सम्पूर्ण प्रदेश पर हाड़ा चौहान शासकों का अधिकार होने के कारण इस प्रदेश को हाड़ौती के नाम से जाना जाता था। जब से यहाँ चौहान वंश की हाड़ा शाखा का अधिकार 1341 ई0 में हुआ तब से यह इलाका हाड़ौती (हाड़ावती) कहलाने लगा।

यह पूरा क्षेत्र अनेक छोटी–छोटी पर्वत मालाओं से घिरा हुआ है, जिनमें मुकन्दरा व बूंदी की पहाड़ियाँ प्रमुख है। यह पूरा प्रदेश एक पठारी भाग है जिसे हाड़ौती के पठार के नाम से जाना जाता है। यह मालवा के पठार का विस्तार है तथा इसका विस्तार कोटा, बूंदी, झालावाड़ और बारां जिले में है।

इस क्षेत्र की प्रमुख नदियों में चंबल, कालीसिन्ध, पार्वती व परवन इत्यादि नदियों की गणना की जाती है। यहाँ का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त भव्य है, जो सदैव अपनी और आकर्षित करता रहता है। वर्तमान समय में भी इस प्रदेश को हाड़ौती के नाम से ही जाना जाता है।

इस क्षेत्र के अन्तर्गत कोटा, बूंदी, झालावाड़ और बारां जिलों को ही सम्मिलित किया गया है। इस क्षेत्र के उत्तर में ढूंढ़ाड., पूर्व में गिर्द क्षेत्र पश्चिम में मेवाड़ व दक्षिण में मालवा का क्षेत्र स्थित है। यहाँ केवल हाड़ौती क्षेत्र में सम्मिलित जिलों पर ही प्रकाश डाला गया हA

cUnh

बून्दी एक प्राकृतिक घाटी में बसा हुआ एक भव्य शहर है, जिसे छोटी काशी के नाम से जाना जाता है। प्राकृतिक आवरण की चादर ओढ़े यह भव्य शहर अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य सदैव अपनी और आकर्षित करता रहता है।

यह शहर अपनी स्थापना के समय से ही विद्वानों, वीरों व सन्तों के आश्रय की त्रिवेणी रहा है। इस भव्य शहर में अनेक तालाब व प्राचीन बावड़ियाँ विद्यमान है। यहाँ पर स्थित ऐतिहासिक तारागढ़ किला हाड़ा राजपूतों के अपार शौर्य और वीरता का प्रतीक माना जाता है। सन् 1342 ई0 में 'राव देवा ने बूंदी नगरी की स्थापना की थी।[1]

भौगोलिक स्वरूप

राजस्थान राज्य के दक्षिणी–पूर्वी में स्थित एक अनियमित, समतल व चतुर्भुजाकार बूंदी जिला 24' 59'11 और उत्तरी अक्षांश तथा 75' 19'30' से 76' 19'11 पूर्वी देशान्तर के मध्य में फैला हुआ है। बूंदी मुख्यतया पहाड़ी क्षेत्र है। इसके पश्चिमी भाग में अरावली की पहाड़ियाँ है। इस जिले की सीमाएँ उत्तर में टोंक, पूर्व में सवाईमाधोपुर पश्चिम में भीलवाड़ा व दक्षिण में चितौड़ गढ़ जिले से मिलती है।[2]

परिवहन

यह जिला सड़क व रेल मार्ग दोनों से ही जुड़ा हुआ है।

---

1. डॉ अमर सिंह राठौड़' राजस्थान सुजस' पृष्ठ संख्या 1173
2. " " " " " " वही पृष्ठ

dkVk

कोटा की स्थापना 13 वीं शताब्दी में बूंदी के शासक समरसी के पुत्र जेतसी ने की थी ।[1] प्रारम्भ में कोटा बूंदी राज्य का ही एक भाग था, जिसे शाहजहाँ ने बूंदी से अलग कर माधोसिंह को सौंपकर 1631 ई0 में नये राज्य के रूप में मान्यता दी।[2]

कोटा राज्य का दीवान झाला जालिम सिंह इतिहास चर्चित व्यक्ति रहा है।कोटा रियासत पर उसका पूर्ण नियन्त्रण रहा है। कोटा मे ऐतिहासिक काल से आज तक कृष्ण भक्ति का प्रभाव रहा है। इसलिए कोटा एक नाम नन्दग्राम भी मिलता है।

जेतसी ने कोटा के स्थानीय शासक कोटिया भील को परास्त कर उसके नाम से ही कोटा की स्थापना की है।[3] वर्तमान समय में कोटा को औद्योगिक नगरी के नाम से जाना जाता है । ये शहर चम्बल नदी के किनारे पर बसा हुआ है । ''इसे राजस्थान का कानपुर'' भी कहा जाता है ।[4] वर्तमान समय में इसे शैक्षणिक नगरी के नाम से भी जाना जाता है ।

---

1. डॉ. हरिमोहन सक्सैना –''राजस्थान अध्ययन भाग.**(RBSE)** पृष्ठ संख्या 20
2. '' '' '' '' '' '' पृष्ठ संख्या 16
3. डॉ. हरिमोहन सक्सैना –''राजस्थान अध्ययन भाग. **(RBSE)** पृष्ठ संख्या 20
4. कुवंर कनक सिंह राव ''राजस्थान धरोधर'' पृष्ठ संख्या .82

dkVk dh Hkkxkfyd fLFkfr

कोटा जिला राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग में स्थित है । यह 25'25' से 25'51' उत्तरी अंक्षाश तथा 75'35' से 77'29' दक्षिणी देशान्तर के बीच स्थित है । इसके पश्चिम में चितौड़गढ़ जिला, दक्षिण में झालावाड़ जिला व मध्यप्रदेश का मंदसौर जिला पूर्व में बारां जिला एवं पश्चिम में बूंदी जिला है ।

इस जिले का कुल क्षेत्रफल 5,217 वर्ग किलोमीटर है।[1] यहाँ चम्बल नदी पूरे बारह महीने बहने वाली नदी है। सन् 1949 ई0 मे कोटा जिले का वृहद् राजस्थान में विलय हुआ।[2] कोटा बैराज एंव आलनियाँ डेम यहाँ के प्रमुख बांध है। यहाँ के अभ्यारणों में जवाहर सागर अभ्यारण व नेशनल चम्बल (घड़ियाल) अभ्यारण प्रमुख है।

यहाँ के ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थलों में अभेड़ा महल, विभिषण मंदिर, मथुराधीश मंदिर, कंसुवा का शिव मंदिर, चम्बल उद्यान, हाड़ौती यातायात प्रशिक्षण पार्क भीतरिया कुण्ड, प्रमुख दर्शनीय स्थल माने जाते है।

कोटा के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में केरियर पॉइंट, रेजोनेन्स, आकाश, ऐलन इत्यादि प्रमुख कोचिंग संस्थान माने जाते है। यहाँ तीन विश्वविद्यालय स्थापित किए गये है।

ifjogu

यह जिला रेल व सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है एवं हवाई सेवा के लिये प्रयासरत् है।

---

1. कुँवर कनक सिंह राव ''राजस्थान धरोधर'' पृष्ठ संख्या .82
2. .....वही पृष्ठ

ckjka

,frgkfld i"B Hkfe

बारां जिला 14वी व 15वीं शताब्दी में सोलंकी राजपूतों के आधीन था। उस समय इसके अन्तर्गत बारह गांव ही आते थे, इसलिए यह नगर बारां के नाम से पुकारा जाने लगा। इसका प्राचीन नाम वराह नगरी होने का भी एक पुष्ट प्रमाण है। बारां समुद्र तल से 262 मीटर की ऊंचाई पर कालीसिंध, पार्वती व परवन नदियों के बीच स्थित है। मार्च 1949 को राजस्थान का पुनर्गठन होने पर बारां जिले को तोड़कर उपखण्ड में बदल दिया गया। तभी से बारां कोटा जिले का एक बड़ा कस्बा व उपखण्ड बन गया। कई आन्दोलनों के बाद 10 अप्रेल 1991 को पुनः बारां को जिले का दर्जा दे दिया गया।[1]

Hkkxkfyd ifjn';

बारां जिला राजस्थान के मानचित्र में दक्षिण–पूर्वी भू–भाग पर 24′25′ से 25′55′ उत्तरी अंक्षाश तथा 76′12′ से 76′26′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। मध्यप्रदेश की श्योपुर कला, व शिवपुरी व गुना जिलो की सीमाएँ पूर्व में कोटा जिले की सीमाएँ उत्तर–पश्चिम तथा झालावाड़ जिले की सीमाएँ दक्षिण में स्पर्श करती है।

इस जिले की प्रमुख नदियों में पार्वती, कूक, ल्हासी, रेतम व परवन आदि नदियाँ यहाँ बहती रहती हैं।[2]

ifjogu

1. ये जिला सड़क व रेल दोंनों ही मार्गो से जुड़ा हुआ है।

1.आनन्द जोशी की 'पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 781

2. ″ ″ ″ ″ ″ वही पृष्ठ संख्या

>kykokM+

>kykokM+ dh ,frgkfld i"B Hkwfe

राजस्थान का दक्षिण–पूर्वी सीमान्त जिला झालावाड़ जहाँ राजपूताना शैली की सांस्कृतिक विरासत को अपने में समेटे हुए है, वहीं मालवा की सांस्कृतिक समृद्धि भी यहीं पर पल्लवित हुई है। राज्य के हाड़ौती क्षेत्र में स्थापित यह जिला मालवा व राजपूत शैली की संस्कृतियों का अनूठा संगम स्थल है। मुगल काल में यह जिला मालवा प्रदेश का ही एक भाग माना जाता था, परन्तु बाद में झाला शासकों ने ही यहाँ के साहित्यिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के मार्ग को प्रशस्त किया है। स्वतन्त्र भारत और वृहद् राजस्थान में इस क्षेत्र को मिलाने का कार्य यहाँ के अन्तिम शासक हरिशचन्द्र सिंह ने किया था। यहाँ की प्राकृतिक, भौगौलिक और खनिज सम्पदा से समृद्ध इस जिले में बहुत विकास हुआ है। झालावाड़ को झालाओं की भूमि से परिभाषित किया गया है।[1]

वृहद् राजस्थान में इस क्षेत्र को मिलाने का श्रेय यहाँ के अन्तिम शासक महाराजा हरिशचन्द्र सिंह को है।[2]झालावाड़ पर झाला शासकों का अधिकार होने के कारण, झाला शासकों के आधार पर ही इस जिले का नाम झालावाड़ रखा गया है। यहाँ की प्राकृतिक छटा सदैव अपनी और आकर्षित करती रहती है।

>kykokM+ dh Hkkxkfyd fLFkfr

यह जिला राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी कोने पर उत्तरी अंक्षाश में 23'45'20' से 24'52'17' एवं उत्तरी अंक्षाश एवं 75'27'35' से 76'56'48' पूर्वी देशान्तर मे मालवा पठार के किनारे पर स्थित है ।[3] यहाँ के ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थलों में गागरोन का दुर्ग, मनोहर थाना का किला, भवानी नाट्य शाला, तथा सूर्य मंदिर प्रमुख आकर्षण का केन्द्र माने जाते है।

1 डॉ अमर सिंह राठौड़ 'राजस्थान सुजस पृष्ठ संख्या 1179

2 आनन्द जोशी ''पत्रिका ईयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 774

3 आनन्द जोशी ''पत्रिका ईयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 773

<<kM {k= dk ifjp;

ढूंढ़ाड़ राजस्थान राज्य का एक ऐतिहासिक क्षेत्र रहा है। इस क्षेत्र को समय–समय पर भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता था। जैसे आमेर राज्य, जयपुर राज्य व कछवाहा राज्य इत्यादि। यह क्षेत्र राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। यह पूरा क्षेत्र अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र पर अधिंकाश कछवाहा शासकों का आधिपत्य रहा है। कछवाहा वंश राजस्थान के इतिहास मंच पर पर 12 वीं शताब्दी से दिखाई देता हैं। इस वंश का प्रमुख शासक दुल्हैराय था। जिसने 1136 ई0 में ढूंढ़ाड. राज्य की स्थापना कर दौसा को कछवाहा राज्य (ढूंढ़ाड. राज्य) की प्रथम राजधानी बनाया था।[1]

दौसा के पश्चात् कछवाहा शासकों ने जमवारामगढ़ को ढूंढ़ाड़ राज्य की दूसरी राजधानी बनाया। इसके बाद दुल्हैराय के सुपुत्र कोकिल देव ने आमेर को तीसरी राजधानी बनाकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।[2] ढूंढ़ाड़ प्रदेश की महिमा का बखान करते हुए कवि ब्रह्यमल्ल ने लिखा है।

nsl <<kgM] lkHkk/k.kh] iqtS rgk¡ vyh eu r.khA
fueZy ry unh cgQjh] lyHk cls lkxkuqjhAA[3]

यह राज्य कला एवं संस्कृति का गढ़ रहा है,। पर्यटक की दृष्टि से भी यह राज्य समृद्वशाली राज्य रहा है। ढूंढ़ाड. राज्य की प्रमुख निजामतों में जयपुर, दौसा, गंगापुर, कोटकासिम, सवाईमाधोपुर, मालपुरा, साम्भर व शैखावटी की गणना की जाती थी।[4] ढूंढ़ाड. राज्य के प्रमुख ठिकानों में बरवाड़ा, चौमु, डिग्गी, दूनी, अचरोल, पदमपुरा, शाहपुरा, कालवाड़, डॉगर थल, दूदू, मंडा, बाहेड़ा व डूँगरी इत्यादि गांवो की गणना की जाती थी। इस राज्य का प्राकृतिक सौन्दर्य सदैव अपनी और आकर्षित करता रहता है। वर्तमान समय में भी इस राज्य को ढूंढ़ाड़ राज्य के नाम से ही जाना जाता है।

---

1. हरिमोहन सक्सैना, राज्य अध्ययन भाग–प्रथम पृष्ठ संख्या 12
2. आनन्द जोशी, पत्रिका इयर बुक 2013, पृष्ठ संख्या 831
3. चन्द्रमणि सिंह, जयपुर राज्य का इतिहास पृष्ठ संख्या 171

<।<kM dk vFk

प्राकृतिक आधार पर, सोता, साबी, कॉटली, चम्बल और बनास नदियों के बीच बसे हुये क्षेत्र का नाम ढूंढ़ाड़ है।[1] ''ढूंढ़ाड़ के बारे में दुसरा रोचक तथ्य यह भी है कि ढूंढ़ नदी के आस–पास के क्षेत्र को ढूंढ़ाड़ कहा है। रेत के टिलों की वजह से दौसा, जयुपर और टोंक के कुछ भाग को ढूंढ़ाड़ कहा गया है।''[2] आधुनिक जयपुर के पास बहने वाली ढूंढ़ नदी के समीपवर्ती भाग को ढूंढ़ाड़ कहते है।[3]

ढूंढ़ाड़ के बारे में तीसरा रोचक तथ्य यह है कि महमूद गजनवी ने अजमेर के शासक बीसल देव पर आक्रमण कर दिया था। महमूद गजनवी के डर से बीसलदेव जोबनेर में जाकर छुप गया और पुनः शक्ति को एकत्रित कर महमूद गजनवी के सैनिकों को ढूंढ़–ढूंढ़ कर उनका विनाश किया, इस कारण इस भू–भाग का नाम कालान्तर मे ढूंढ़ाड़ पड़ा।[4]

<।<kM {k= dh lhek,¡

प्रायः ढूंढ़ाड क्षेत्र की सीमाएँ उत्तर मे कोठपुतली, पूर्व में अलवर में बैराठ, पश्चिम में साभंर और शैखावटी तक बतायी गयी है। इस राज्य में वर्तमान जयपुर, दौसा, सीकर, झुंझुनू एवं सवाईमाधोपुर जिलों के कुछ भू–भाग सम्मिलित थे।[5] इन सभी क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा (झाड़शाही) ढूंढ़ाड़ी ही बोली जाती है। इस ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत टोंक का कुछ भाग, जयपुर व दौसा जिले ही आते है।

---

1. डॉ.अमर सिंह राठौड़ संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ संख्या 938
2. सम्पादक आनन्द जोशी की 'पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 698
3. कुँवर कनक सिंह राव 'राजस्थान धरोहर' पृष्ठ संख्या 114
4. डा.अमर सिंह राठौड़ संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ संख्या 938
5. चन्द्रमणि सिंह जयपुर राज्य का इतिहास' पृष्ठ संख्या 160

Tk ; ij

राजस्थान की राजधानी जयपुर पूर्व का पेरिस तथा गुलाबी नगरी के नाम से प्रसिद्व है। इस शहर की स्थापना कछवाहा वंश के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 18 नवम्बर 1727 ई0 को की थी। जयपुर का निर्माण ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के सिद्वान्तों के आधार पर किया गया है।

इस शहर का वास्तु नियोजन पंडित विद्याधर भट्ट ने किया था। उन्होंने शहर को नौ वर्गो के सिद्वान्त के आधार पर बसाने का फैसला किया एवं जयपुर के राजमार्ग ज्यामितिक सूत्रों और गणितीय सिद्वान्तों को ध्यान मे रखकर बनाऐं गये है।[1] इस नगर के चारों और सात प्रवेश द्वार बनायें गये है। इनमे चाँद पोल गेट, अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, घाट गेट, सूरजपोल गेट, गंगापोल गेट व जोरावर सिंह गेट, आज भी जन–जीवन के साक्षी बने हुये है।[2]

सवाई जयसिंह ने जयपुर को कला के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए अनेक कलाकारों और विशेषज्ञों को विभिन्न स्थानों से लाकर उन्हे जयपुर में बसाया और राज्याश्रय प्रदान किया। इससे यह शहर शिल्पकला , चित्रकारी, मीनाकारी,जवाहारात, पीतल की नक्काशी, हस्त निर्मित कागज, रत्नाभूषण तथा छपाई कला आदि सभी कलाओं में उत्कृष्टता अर्जित कर सका है।

प्रिंस ऑफ वेल्स के सन् 1876 मे जयपुर आगमन के समय शहर को एकरूपता प्रदान करने के लिए गुलाबी रंग से रंगा गया एवं इसके बाद से ये शहर विश्व में ''गुलाबी'' नगरी के नाम से विख्यात हुआ।[3]

---

1. सम्पादक आनन्द जोशी की 'पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 683
2. डॉ.अमर सिंह राठौड़ संदर्भिका राजस्थान सुजस पृष्ठ संख्या 1143
3. '' '' '' '' '' वही पृष्ठ संख्या

Hkkxkfyd ifjn';

ये जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 26′23′ से 27′51′ उत्तरी अक्षांश एवं 74′55′ से 76′50′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में सीकर व हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला दक्षिण में टोंक, पूर्व में अलवर, दौसा एवं सवाईमाधोपुर तथा पश्चिम में नागौर व अजमेर जिले है।[1] इस जिले का क्षेत्रफल 11,143 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की प्रमुख नदियों मे बाणगंगा, ढूंढ़, मोरेल, बांडी और डाई प्रमुख नदियाँ है।[2]

यहाँ के प्रमुख ऐतिहासिक एवं दार्शनिक स्थलों में आमेर का किला, सिटी पैलेस, जन्तर–मन्तर, हवामहल, जलमहल, गलताजी, बी.एम.बिड़ला सभागार, तथा सांभर झील प्रमुख है। यहाँ की प्रमुख शिक्षण संस्थाओं में महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, राजस्थान संगीत संस्थान, तथा जयपुर कथक केन्द्र इत्यादी प्रमुख शिक्षा के केन्द्र माने जाते है।

nkSlk

भारत के राजस्थान प्रान्त में स्थित दौसा जिला एक भव्य शहर है। जिसका निर्माण राजस्थान सरकार द्वारा दिनांक 10 अप्रेल, 1991 को जयपुर जिले की पाँच तहसीलों दौसा, सिकराय, बसवा, बाँदीकुई व लालसोट इत्यादि तहसीलों को पृथक कर इस जिले का गठन किया गया है। सवाईमाधोपुर जिले की महुवा तहसील को भी दिनांक 15 अगस्त, 1992 को इस जिले में शामिल किया गया है। इस जिले की प्रमुख सीमाएँ जयपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर, अलवर, भरतपुर, एव करौली जिले से लगती है। इस जिल को प्रमुख तहसीलों बसवा, दौसा, लालसोट, महवा, सिकराय इत्यादि तहसीलों की गणना की गई है।[3]

---

1. सम्पादक आनन्द जोशी की 'पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 684
2. ....वही पृष्ठ
3. आनन्द जोशी, पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 69

Hkkxkfyd ifjn'

ये जिला 25'33' से 27'33' के मध्य उत्तरी अंक्षाश एवं 76'50' से 76'90' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 3432 वर्ग किलो.मी. है। यहाँ की प्रमुख नदियों में बाणगंगा व रूपारेल, आदि नदियों की गणना की जाती है। यहाँ ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थलों में रामगढ़ का किला, गीजगढ़ का किला प्रमुख है।[1]

Vkd

यह जिला बनास नदी के किनारे पर बसा हुआ है। मध्यकाल में मुगल साम्राज्य के सम्राट अकबर के शासनकाल में जयपुर के राजा मानसिंह ने टारी और टोकरा नामक जिलों को अपने अधिकार में लिया और टोकरा के 12 गाँवों की देख–रेख भोला नामक ब्राह्मण को सोंपी, इन 12 गाँवों के समूह को टोंक नाम दिया। तब से लेकर आज तक इस जिले को टोंक के नाम से ही जाना जाता है।[2]

Hkkxkfyd ifjn'

टोंक जिला राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग मे 25'.41' से 26'.24' उत्तरी अंक्षाश तथा 75'.19' से 76'.16' अंक्षाश पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले के उत्तर में जयपुर, दक्षिण में बून्दी एंव भीलवाड़ा, पश्चिम में अजमेर और पूर्व में सवाईमाधोपुर जिला स्थित है।[3]

यहाँ के ऐतिहासिक तथा पर्यटक स्थलों में भूमगढ़ का किला, सुनहरी कोठी, ककोड़ का किला, घण्टाघर, जोधपुरिया देव नारायण मंदिर, डिग्गी कल्याण मंदिर, तथा बीसलपुर बांध परियोजना प्रसिद्व स्थल है।

---

1. आनन्द जोशी, पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 699
2. आनन्द जोशी, पत्रिका इयर बुक 2013 पृष्ठ संख्या 748
3. डॉ. अमर सिंह राठौड़ 'राज. सुजस पृष्ठ संख्या 1187

^^laxhr f'k{k.k

laLFkkvksa dh LFkkiuk

ls

iwoZ dk ifjos'k**

lxhr f'k{k.k lLFkkvk dh LFkkiuk ls iwo dk ifjo'k

राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से पूर्व, संगीत शिक्षा का स्वरूप गुरू शिष्य परम्परा ही रहा है। 19वीं शताब्दी से पूर्व सम्पूर्ण भारत वर्ष में संगीत शिक्षा घराना परम्परा द्वारा ही दी जाती थी। संगीत को प्रोत्साहन देने हेतु जयपुर राज्य के प्रमुख शासक महाराजा रामसिंह द्वारा संगीत साधकों के लिए एक गुणीजन खाने के स्थापना की गई। यह गुणीजन खाना कलाकारों की प्रमुख शरण स्थली ही नहीं अपितु दुनियाँ भर के घरानेदार कलाकारों के आकर्षण का केन्द्र भी बना रहा एवं राज्य संरक्षण में अपना विकास करते हुए देशभर में अपनी कला का परचम लहराया तथा गायन, वादन तथा नृत्य तीनों ही कलाओं का विकास प्रगति पर था एवं शिक्षा का माध्यम गुरू–शिष्य परम्परा ही रहा।

इस प्रकार संगीत के गायन वादन तथा नृत्य की शिक्षा घरानों में ही दी जाती थी। इन प्रमुख घरानों में जयपुर का डागर घराना, ख्याल घराना, जयपुर का सैनिया घराना, कथक घराना, जयपुर का परवाज घराना, संगीत शिक्षा के प्रमुख केन्द्र रहे है। हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की संगीत परम्परा को निम्न प्रकार से दर्शाया गया है।

gkM+kSrh {k= dh lxhr ijEijk

राजस्थान का कोटा, बूंदी, बारां, तथा झालावाड़ जिला मिलकर हाड़ौती प्रदेश कहलाता है। इस प्रदेश की प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से गौरवपूर्ण परम्पराएँ रही है। संगीत की दृष्टि से इस क्षेत्र में कई अच्छे कलाकार हुए है जिन्होंने अपने–अपने समय में संगीत प्रचार–प्रसार एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संगीत की सभी बोलियों अथवा विधाओं का मूल स्त्रोत लोक संगीत रहा है। अतः हाड़ौती की परम्पराओं का विवेचन करते समय इस क्षेत्र के लोक संगीत पर दृष्टि डालना युक्ति संगत प्रतीत होता है। हाड़ौती में भी अन्य क्षेत्रों के समान लोक संगीत की ऐसी समृद्ध परम्पराएँ रही है

जिनसे शास्त्रीय संगीत को काफी कुछ प्राप्त हुआ है। सिनेमा के प्रचार के पूर्वजन मनोरंजन हेतु कई–कई दिनों तक गोपीचन्द भरतरी, राजा मोरध्वज आदि के तमाशे आयोजित किये जाते थे। इनके सभी पात्र गायन में काफी निष्णात होते थे। क्योंकि सारे कथानक सभी पात्रों द्वारा गाकर प्रस्तुत किये जाते थे तथा कथानक के सभी भाव वातावरण एवं समय के अनुकूल रागों तथा स्वरालियों में बांधे जाते थे।

इसी प्रकार हाड़ौती के लोक गीतों में भी संगीतिक सौन्दर्य तथा रागात्मकता कूट–कूट कर भरी हुई दिखाई देती है। निहाल दे, तेजाजी, हालीजी और अन्य अनेक लोकगीत कई गीतों कई रागों के आधार पर गाये जाते है।[1] लोक संगीत की परम्परा को यहीं छोड़ कर यदि हम इस क्षेत्र की अन्य सांगीतिक परम्पराओं पर विचार करें तो सुविधा की दृष्टि से उन्हे निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।[1]

'kkL=h; xk;u dh ijEijk

राज्याश्रय के कारण गायन की परम्परा इस क्षेत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं समृद्व परम्परा रही है। अतरोली घराने के फिदा हुसैन खाँ साहब जी रंगीले घराने के वंश परम्परागत अनुयायी थे उनकी आवाज उत्तरांग वाली थी। गीत के स्थायी अन्तरे को गाकर राग के स्वरों से बोलों का श्रृंगार कर भावाभिव्यक्ति करते थे।

विलम्बित की ताने लयबद्व करते थे एवं तान में गीत के बोलों का सार्थक उच्चारण करते हुए ख्याल में ध्रुवपद अंग का दिग्दर्शन कराते थे। जिस बल से आरोही की ताने पलटे गाते थे उसी बल से अवरोही में ताने व पल्टे गाकर सम दिखाते थे। इनके पुत्र इब्राहीम खाँ साहब भी अच्छे गायक थे जिनकी शिष्य परम्परा में वर्तमान में सुरैया बाई एवं माणक बाई प्रसिद्व गायिकाएं है।[2]

1. स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, पृष्ठ संख्या 19 सन्. 2007
2. .स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, वही पृष्ठ संख्या

कोटा के गायकों में दुसरा सर्वाधिक चर्चित नाम उस्ताद कादर खाँ साहब का रहा है। ये देश के विख्यात आगरा घराने के गायक फैयाज खाँ साहब के शिष्य थे तथा ख्याल गायकों के साथ ही साथ ठुमरी, मांड, गजल आदि संगीत विधाओं पर भी उनका पूर्ण अधिकार था। इसलिए उनको चौमुखा गवैया कहा जाता था।

इस परम्परा में कोटा की श्रीमती राजेश कुमारी बिब्बो, झालावाड़ की अख्तर बेगम व पूरण चन्द प्रमुख रहे है। कोटा के गुणीजन खाने में करम इलाही नामक गायक बहुत विख्यात रहे है।[1] कोटा की शास्त्रीय गायन की परम्परा में श्री सोहन भैया का नाम अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सोहन भैया का नाम ग्वालियर के प्रसिद्व गायक मेंहदी हुसैन खाँ के शिष्य थे तथा मूलतः कथावाचक होते हुए भी उनकी गायकी अत्यधिक प्रभावशाली थी। वे यमन, बसन्त, पूरिया व मियाँ मल्हार आदि राग गाते थे तथा उनकी आवाज खुली मधुर व जवारीदार थी। लम्बे सांस व सुरीली गमकों के माध्यम से वह गंभीर गायकी प्रस्तुत करने में समर्थ थे तथा तबला बजाते हुए भी ध्रुवपद की कठिन लयकारिता करना व बड़े ख्याल आदि में तान आलाप करना उनकी विशेषता थी।

सोहन भैया के शिष्यों में श्री आयदान राव, मोतीलाल ली भुज वाले, श्री गोपीचन्द जी व मोतीलाल जी कुन्हाड़ी वाले आदि का नाम प्रख्यात गायकों के रूप में लिया जा सकता है। मोतीलाल जी भुज वाले अल्पआयु में स्वर्गवासी हो गये अन्यथा जिन्होने उन्हें सुना वे लोग कहते है कि उनकी आवाज बिसमिल्ला की शहनाई जैसी मधुर व सुरीली थी तथा गायकी भी अत्यन्त तैयार एवं प्रभावशाली थी। यदि वह जीवित रहते तो निश्चय ही देश के ख्याति प्राप्त कलाकारों में उनकी गिनती हो सकती थी।[2]

---

1. स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, पृष्ठ संख्या 19 सन्. 2007
2 स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, पृष्ठ संख्या 20 सन्. 2007

सोहन भैया के दूसरे शिष्यों में आयदान राव शास्त्री भी इस क्षेत्र के विख्यात कलाकार है। कोटा गुणीजन गाने के अन्य उल्लेखनीय गायकों में श्री अमरलाल जी, मुमताज वहीदन एवं शकूरनबाई के नाम से प्रसिद्व है। इनमें शकूरबाई को पीछे से देखने वाले यह नहीं समझ सकते कि वे गा रही है या बैठी हैं। किन्तु वे टप्पे की लच्छेदार तानों तथा जमजमों को आसानी से गाकर पेश करती थी। कोटा के अतिरिक्त झालावाड़ में भी शास्त्रीय गायन की अत्यधिक समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर होती है।[1]

झालावाड़ के नरेश भवानी सिंह जी तत्पश्चात् राजेन्द्रसिंह जी एवं उनके बाद हरिशचन्द्र सिंह जी नाटक के परम पृष्ठ पोषक एवं गुण ग्राही रहें है। इसी कारण झालावाड़ में महाराज भवानी सिंह जी ने भवानी नाट्यशाला का निर्माण करवाया जो देश का श्रेष्ठ ऑडिटोरियम माना जा सकता है तथा उस काल में नाटक संगीत के माध्यम से ही प्रस्तुत किये जाते थे। अतः जहाँ भी नाट्यशाला व नाटक मंडलियाँ स्थापित होती थी वहीं उच्च कोटि के संगीतकारों को उनमें स्थान दिया जाता था। इस कारण संगीत क्षेत्र में झालावाड़ का अतीत बहुत ही उज्जवल एवं गौरवपूर्ण रहा है। गायन परम्परा के अन्तर्गत झालावाड़ के प्यारे इमामुद्दीन का नाम काफी प्रसिद्व रहा है।[2]

इनके शिष्यों में कोटा के श्री मलूकचन्द्र जी अच्छे गायक रहे है। झालावाड़ के संगीत जगत से सर्वाधिक जुड़ा हुआ महत्वपूर्ण नाम श्रीनवल किशोर जी का है । श्री नवल किशोर जी को झालावाड़ दरबार में तत्कालीन सुप्रसिद्व गायक श्री नारायण राव व्यास के पास शिक्षा प्राप्त करने हेतु भेजा था। श्री नवल किशोर जी की अत्यन्त सुरीली, स्पष्ट आवाज मार्मिक एवं हृदयग्राही सुसंगतियों से गायन सज्जा एवं भाव प्रणवता श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध करने में समर्थ थी। श्री नवल किशोर जी भजन गायन में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। वर्तमान में उनके शिष्यों में श्री स्व0 रामगोपाल डाँगी तथा स्व0 नवल किशोर जी के सुपुत्र श्री तेजकरण राव आदि प्रसिद्व गायक हुए है। कंठ संगीत की इस परम्परा में बून्दी के श्री काले खाँ का नाम लिया जाना भी आवश्यक है। जिनके शिष्य श्री भँवर लाल जी अच्छे गायक रहे है।[3]

---

1. स्मारिका परम्परा, संगीतिका कोटा, पृष्ठ संख्या 20 सन्. 2007
2. स्मारिका परम्परा, संगीतिका कोटा, पृष्ठ संख्या 19 सन्. 2007
3. .....वही पृष्ठ

lkjxh oknu dh ijEijk

कंठ संगीत के बाद हाड़ौती क्षेत्र की सर्वाधिक चर्चित एवं विकसित परम्परा सारंगी वादन की रही है। इस विषय में सबसे महत्वपूर्ण एवं गौरवपूर्ण नाम उस्ताद श्री लाल जी का है। उस्ताद श्री लाल जी के पिता का नाम श्री नन्दलाल जी था जो स्वंय एक अच्छे सांरगी वादक थे किन्तु उन्होने बालक श्री लाल को तत्कालीन प्रसिद्ध गायक फिदा हुसैन खाँ साहब से तालीम लेने के अतिरिक्त उस्ताद श्री लाल जी ने तलवंडी घराने के उस्ताद अलाउद्दीन खाँ तथा झज्झर घराने के काले खाँ साहब से भी शिक्षा प्राप्त की ।

इन सबने उस्ताद श्री लाल जी को एक उत्कृष्ट सांरगी वादक के रूप में स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। उस्ताद श्री लाल का सांरगी वादन तत्कालीन सुप्रसिद्ध सांरगी वादक बुन्दॅू खाँ, बादल खाँ, मजीद खाँ, गोपाल मिश्रा से भी जोड़ अंग के मामले में अनूठा था।[1]

इसके प्रतिकार स्वरूप बुन्दू खाँ साहब के शिष्य मजीद खाँ कई सांरगी वादकों को प्रतियोगिता में हराते हुए श्री लाल जी से मुकाबला करने को आये तथा मुकाबला होने पर श्री लाल जी के वादन से अत्यन्त प्रभावित होकर उन्होने अपनी सांरगी पर लगी हुई झण्डी लाल जी की सांरगी पर लगा दी।

सांरगी वादन की परम्परा में झालावाड़ के उस्ताद भँवरलाल जी ने बम्बई फिल्म कम्पनी में भी सांरगी वादन किया जो अत्यन्त सुरीला एवं उच्च कोटि का था एवं जिसकी झलक कुछ वर्षो तक उनके प्रख्यात शिष्य उस्ताद छीतरलाल जी तथा पुत्र श्री चाँदमल जी के सांरगी वादन में देखी जा सकती थी। छीतर जी गायन में भी अत्यधिक दक्ष थे इसके अतिरिक्त झालावाड़ के सारंगी वादकों में श्री धन्नालाल जी एवं पुत्र माँगीलाल जी का नाम भी काफी रहा है। बूंदी के सांरगी वादकों में स्व0 धोकल जी सुकदेव जी एवं छोटुलाल जी प्रसिद्ध रहे है।[2]

---

1. स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, पृष्ठ संख्या 19 सन्. 2007
2. .....वही पृष्ठ

rcyk oknu dh ijEijk

हाड़ौती क्षेत्र में तबला एवं पखावज वादन की परम्परा भी अत्यधिक समृद्व रही है। कोटा में इस प्रसंग में सर्वप्रथम श्री गणपत राव पखावजी का नाम लिया जाना आवश्यक है। उनके हाथ में बहुत तैयारी थी तथा कठिन तालों में विभिन्न लयकारी की परणें सहजतापूर्वक बजाने में दक्षता प्राप्त थी। कोटा के तबला वादकों में उस्ताद मांगीलाल जी उनके पुत्र स्व0 रामकरण जी बहुत अच्छे वादक माने जाते थे। इस परम्परा के वर्तमान वयोवृद्व कलाकारों में श्री किशोर जी छोटे रामकरण जी आदि का नाम उल्लेखनीय है। झालावाड़ के तबला वादकों में सर्वप्रथम उस्ताद मथुरालाल जी का नाम उल्लेखनीय है। तबला तथा पखावज दोनों पर इनका समान अधिकार था। इनके पुत्र धन्नालाल जी भी उच्च कोटि के तबला वादक थे तथा संगत करने में उनको विशेष दक्षता प्राप्त थी एवं उनके संगति करने पर गायन वादन में विशेष सुन्दरता व आकर्षण उत्पन्न हो जाता था। इनके छोटे भाई श्री देवीलाल जी के तबला वादन की महत्ता इसी बात से जानी जा सकती है कि भरतपुर दरबार के यहाँ एक कार्यक्रम में एक भारत विख्यात तबलावादक उस्ताद थिरकवा खाँ साहब ने देवलाल जी का तबला वादन सुनकर उनका हाथ चुमते हुए कहा कि हिन्दुस्तान में दुसरा थिरकवा पैदा हो गया है। बूंदी के तबला वादकों में उस्ताद मोडू लाल जी नाम उल्लेखनीय रहा है।[1]

go;yh lxhr dh ijEijk

हाड़ौती क्षेत्र में कई प्रसिद्व वैष्णव मन्दिर होने से इस क्षेत्र में हवेली संगीत की परम्परा विद्यमान रही है। इस प्रसंग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाम मथुराधीश जी के कीर्तनकार श्री रामचन्द्र जी समाधानी का रहा है। गौरी चेता गौरी, झीलफ, जैसी कठिन एवं अप्रचलित रागों में सूर पदों को कठिन तालों में बांध कर गणपत जी पखावजी जैसे धुरन्दर वादक के साथ सहजता और शुद्धता से प्रस्तुत कर पाना समाधानी जी के ही वश की बात थी।[2]

---

1. स्मारिका परम्परा, संगीतिका को कोटा, पृष्ठ संख्या 21 सन्. 2007
2. .....वही पृष्ठ

यह कहा जा सकता है कि राज्य के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से पूर्व संगीत शिक्षा गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा ही प्रदान की जाती थी। यहाँ की सांगीतिक परम्परा सदैव आकर्षण का केन्द रही है एवं संगीत की उन्नति दोनों ही क्षेत्रों में सुचारू रूप से हुई है।

यहाँ गायन वादन व नृत्य तीनों ही क्षेत्रों में संगीत कला की अथाह प्रगति हुई है तथा वर्तमान में संगीत शिक्षा गुरू–शिष्य परम्परा व संस्थागत शिक्षण दोनों ही पद्वतियों के द्वारा किया जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से पूर्व यहाँ शासकों द्वारा गुणीजन खाने स्थापित किए गये थे एवं यह गुणीजन खाने ही संगीत शिक्षा व साधना के प्रमुख केन्द्र माने जाते थे।

<<kM+ {k= esa çpfyr laxhr ?kjkus

सदारंग तथा तानरस खाँ का दिल्ली घराना

तानरस खाँ के परम मित्र अली बख्श तथा इनके बेटे मुहम्मद सिद्वीकी मशहुर गायक हुये जिन्हे अलवर जयपुर तथा टोंक राज्यों में सम्मान मिला। मोहम्मद बख्श के शिष्य कादिर बख्श और उनके तीनों पुत्रों कुतुब बख्श जो तानरस खाँ के नाम से प्रसिद्व हुये, वे दरबारी गायक के रूप में जयपुर तथा अलवर भी रहे। टोंक नवाब के आश्रय में रहे अली बख्श और फतह अली इन्ही तानरस खाँ के शिष्य बने जिनसे आगे चलकर पटियाला घराने को विकसित किया।[1]

jTtc vyh dk chudkj ?kjkuk

t;iqj ds egkjktk jkeflag ds le; ds lqifl} chudkj jTtc vyh ls chudkj dk ;g ?kjkuk vfLrRo esa vk;kA[2]

1- Mk- vej flag jkBkSM+ ^jktLFkku lqt l^ i"B l[;k 984

2- Mk- vej flag jkBkSM+ ^jktLFkku lqt l^ i"B l[;k 985

lgkjuiqj ?kjkuk

संगीतज्ञ इसे बहराम खाँ डागर का घराना मानते है, इन्होने ध्रुवपद शैली की परम्परा सुरक्षित की एवं बहराम खाँ जयपुर आकर बस गये और इन्ही के वंशज डागर परिवार के सदस्यों ने जयपुर, उदयपुर व अलवर राज्यों को अपना प्रमुख केन्द्र बनाया।[1]

Tk;iqj ?kjkuk

जयपुर घराने का जनक मनरंग को माना जाता है। इन्ही के वंशज मुहम्मद अली खाँ कोठी वाले को उसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है। कालान्तर में इसकी दो शाखाएँ पटियाला और अतरौली बनी।

एक बात और उल्लेखनीय है कि उस समय शास्त्रीय संगीत का कोई भी कलाकार किसी भी विद्या में रहा हो वह ध्रुवपद को ही अपना आधार मानता था।

इसलिए ध्रुवपद के हर घराने के कलाकार राजस्थान में ही पनपे तथा चतुश्वाणियों में ये खण्डहारी, गोबरहारी डागुर एवं नौहार वाणियों से सम्बद्व थे। ख्वाजा मुहम्मद खाँ एवं उनके वंशज डागुर वाणी, मन्नु खाँ एवं इमाम बख्श खण्डार वाणी के गायक थे। जयपुर घराना करामत खाँ एवं मुबारक अली के नाम से भी जाना जाता है।[2]

t;iqj dk Mkxj ?kjkuk

जयपुर के महाराजा कला प्रोत्साहक महाराजा रामसिंह ने अनेक गुणी कलाकारों से अपने राज्य एवं दरबार को सुशोभित किया, जहाँ इस घराने के प्रवर्तक बाबा बहराम खाँ भी आसीन रहे।[3]

---

1. डॉ. अमर सिंह राठौड़ 'राजस्थान सुजस' पृष्ठ संख्या 98
2. संगीत कला बिहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या .8
3. संगीत कला विहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या 9

इस घराने के कलाकारों ने जयपुर को विश्व के मानचित्र पर अंकित कर दिया जहाँ इस घराने के वंशजो ने इसको एकनिष्ठ होकर साधा वहीं जयपुर को अपनी समृद्व साधना से जीवन्त रखा। 1700 ई. के लगभग सहारनपुर जिले के अबेठा गांव में जन्में बहराम खाँ सन् 1857 में सवाई रामसिंह के निमन्त्रण पर जयपुर आए एवं यही सन् 1877 में दिवगन्त हुए। 1857 में बाबा के जयपुर आगमन के समय मुबारक अली रजब अली, घग्धे खुदा बख्श, हेदर बख्श आदि गुणी कलाकारों से सुशोभित था।[1]

t ; ij dk dFkd ?kjkuk

राजस्थान के ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में यह घराना काफी प्रचलित रहा है। इस घराने का सूत्रपात 13वीं सदी माना जाता है तथा सन् 1830 से 1947 तक जयपुर कथक के श्रेष्ठतम कलाकारों का गढ़ रहा है। जयपुर व राजस्थान के मानचित्र पर लखनऊ घराने सहित अनेक कथकाचार्य रहे जिनमें उल्लेखनीय है ठाकुर प्रसाद एवं नत्थूलाल पंडित सुखदेव प्रसाद, जानकी प्रसाद, पंडित शंकर लाल,पंडित हरिप्रसाद, पंडित हनुमान प्रसाद, पंडित सुन्दर प्रसाद, पंडित जयलाल, पंडित मथुरा प्रसाद, पंडित नारायण प्रसाद, पंडित बद्रीप्रसाद, गोपाल जी, हीरालाल एवं कृष्ण कुमार आदि कलाकारों के नाम अग्रण्य है।[2]

t ; ij dh i[kkot ijEijk

जयपुर राज्य में पखावज के 300 वर्षो के इतिहास का प्रमाण पंडित घनश्याम दास कृत मृदंग सागर में प्राप्त होता है। आमेर से प्रारम्भ जयपुर में विकसित इस परम्परा का पुष्पायन नाथद्वारा में हुआ।[3]

---

1. संगीत कला विहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या 9
2. संगीत कला विहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या 10
3. संगीत कला विहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या 11

रूप राम के नाम से विख्यात लगभग 275 वर्षो पूर्व आमेर निवासी पंडित तुलसीदास से प्रारम्भ यह घराना उनके वंशजो हालूजी, हरभगत, पोखरदास, विष्णुदास, सेवादास, चिमनाजी, मानजी, जैसे महान् कलाकार हुए है तथा रूपराम जी के पुत्र वल्लभदास इनके तीन पुत्र चतुर्भज दास, शंकरलाल व खेमलाल मृदंग सागर के प्रेणेता घनश्याम दास जी मुख्यतः मन्दिर की ध्रुवपद परम्परा से सम्बद्व रहे है।[1]

t ;ij dk lfu;k ?kjkuk

सेनिया घराने का संबंध तानसेन के पुत्र सूरत सेन तथा विलास खाँ से माना गया है। तानसेन के पुत्र वंश में ध्रुवपद गायन के साथ–साथ वीणा तथा रबाब वादन और पुत्री वंश में ध्रुवपद के साथ वाणी और सितार वादन का समावेश हुआ। विलास खाँ के वंश में रहीम सेन तथा उनके पुत्र और पौत्रों ने सितार की एक स्वतन्त्र शैली को विकसित किया। तानसैन के पुत्री वंश में सदारंग हुये। ये प्रसिद्व बीनकार किशनगढ़ नरेश समोखन सिंह की वंश परम्परा मे है। तानसेन की पुत्री का विवाह इन्ही सम्मोखन सिंह के पुत्र मिश्री सिंह से हुआ था।[2]

[;ky dk t ;ij ?kjkuk

18वीं व 19वीं सदी मे सेनिया वंश के अनेक कलाकारों ने राजस्थान की विभिन्न रियासतों में आश्रय पाया। तानसेन की वंश परम्परा अधिकतर राजस्थान में ही फली–फूली जिसकी अन्तिम पीढ़ी जयपुर गुणीजन खाने के मूर्धन्य कलाकार कायम सेन का नाम आज भी लोगों की जुबान पर है। आधुनिक काल में सेनिया घराने के संगीतज्ञों से ही गायन तथा वादन के विभिन्न घराने बने तथा ख्याल का सदारंग–अदारंग का घराना प्रमुख रहा है। जिसके विस्तार में ग्वालियर, आगरा, दिल्ली तथा जयपुर घराने का निमार्ण हुआ।[3]

---

1. संगीत कला विहार अगस्त 2011, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल मुम्बई. पृष्ठ संख्या 9
2. डॉ. अमर सिंह राठौड़ 'राजस्थान सुजस' पृष्ठ संख्या 985
3. .....वही पृष्ठ

^^laxhr f’k{k.k laLFkkvksa

dh

LFkkiuk

ds ckn dk ifjn`’;**

lxhr f'k{k.k lLFkkvk dh LFkkiuk ds ckn dk ifjn'

भारतीय संगीत अपने आंचल में अपनी प्राचीन परम्परा को समेटे हुए है। हमारा संगीत निरन्तर विकास की और बढ़ रहा है। प्राचीन काल से ही हमारे संगीत पंडितों व संगीत महारथियों ने संगीत को गुरूमुखी विद्या ही माना है। प्राचीन काल में संगीत शिक्षा गुरूकुल पद्वति के अनुसार संगीत–विद्यालयों, आश्रमों व गुरू के सानिध्य में रहकर ही प्राप्त की जा सकती थी।

संगीत का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता था। परन्तु आधुनिक समाज में इसका महत्व कृतिम प्रदर्शन व आचरण के साथ ही बहुत अधिक बढ़ गया है। इसके साथ ही संगीत शिक्षा भी जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। हमारे देश में संगीत शिक्षा की वर्तमान में दो पद्धतियाँ प्रचलित है।

एक तो प्राचीन कालीन गुरू शिष्य परम्परा और दूसरी संस्थागत शिक्षण प्रणाली, वर्तमान में इस पद्वति का प्रचार–प्रसार अत्यधिक रूप में हो रहा है। भारतीय संगीत को सर्वप्रथम 20 वीं शताब्दी से पूर्व पंडित भातखण्डे व पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के अथक प्रयासों से इसे विद्यालय शिक्षा में समाविष्ट किया गया। संगीत शिक्षा की सर्व सुलभता पाठ्य पुस्तकों की रचना, पाठ्यक्रमों का निर्माण आदि कई क्रान्तिकारी परिवर्तन हमारे समक्ष प्रकट हुए है।

पंडित भातखण्डे व पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के अथाह प्रयासों से ही भारतीय संगीत को अन्य विषयों की भांति विद्यालय, महाविद्यालय, तथा विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा है। फलस्वरूप आज सम्पूर्ण भारत वर्ष में संगीत शिक्षा को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है।

देश के सभी राज्य सरकारों ने संगीत विषय को विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की भाँति पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है। यहाँ राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में स्थापित संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के बाद के परिदृश्य पर प्रकाश डाला गया है।

आधुनिक हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना होने के बाद यहाँ संगीत शिक्षा तथा संगीत का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में प्रचलित विश्वविद्यालयों में संगीत विषय को स्नातक, अधिस्नातक, एम.फिल तथा पीएच.डी. के पाठ्यक्रमों में समाविष्ट किया गया है एवम् बीए., एम.ए, बी.म्यूज, एम.म्यूज, तथा एम. फिल स्तर के पाठ्यक्रमों का निर्माण किया गया है। यहाँ के शासकीय व अशासकीय दोनों ही प्रकार के विद्यालयों व महाविद्यालयों में संगीत विषय का अध्ययन करवाया जा रहा है।

इन संगीत विद्यालयों व महाविद्यालय में भूषण प्रभाकर, विशारद, निपुण, बी.ए. तथा एम.ए. की कक्षाएँ संचालित की जा रही है। फलस्परूप आज दोनो ही क्षेत्रों में कई विद्यार्थियों ने संगीत में स्नातक, अधिस्नातक, एम,फिल, तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है एवं कई संगीत शिक्षार्थी इस कार्य में संल्गन है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संचालित बनस्थली विद्यापीठ (डिम्ड विश्वविद्यालय) तथा राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत की विद्यायें गायन, वादन तथा नृत्य (कथक) में मध्यमा से लेकर निपुण तक की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। हाड़ौती क्षेत्र में भी राजकीय प्रभाकर माध्यमिक संगीत विद्यालय कोटा तथा झालावाड़ में संचालित है जिनमें भूषण तथा प्रभाकर गायन, वादन तथा नृत्य तीनों ही विद्याओं की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

फलस्वरूप आज यहाँ के असंख्य संगीत विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे है तथा संगीत में शोध कर रहे छात्र–छात्राओं को सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा है एवं कई विद्यार्थी संगीत में एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके है। कई संगीत विद्यार्थी नेट व स्लेट की उपाधि प्राप्त कर संगीत प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे है एवं कई विद्यार्थी देश के प्रमुख विद्यालयों जैसे नवोदय विद्यालय, केन्द्रिय विद्यालय आदि में संगीत शिक्षक रूप में अपनी सेवाऐं दे रहे है। वर्तमान में इंटरनेट का प्रयोग शिक्षा के सभी क्षेत्रों में हो रहा है एवं इंटरनेट के द्वारा संगीत कला के सैद्वान्तिक एवं क्रियात्मक दोनों ही पक्षों को किसी भी स्थान पर सरलता से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंटरनेट के द्वारा संगीत सम्बन्धी विभिन्न जानकारियाँ जैसे संगीत संस्थाओं की जानकारियाँ एवं उनमें संचालित पाठ्यक्रम तथा कलाकारों सम्बन्धी विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती है। आधुनिक युग में संगीत विद्यार्थी इंटरनेट की सहायता से देश के प्रख्यात कलाकारों की बंदिशों को सुन एवं डाउनलोड कर लाभान्वित हो रहे है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत कला के विकास एवं नवीन प्रवृतियों में वृद्वि हुई है। आज क्षेत्र की सभी शिक्षण संस्थाओं में इलेक्ट्रोनिक वाद्य यंत्रों द्वारा शिक्षण कार्य किया जाना लगा है।

इन शिक्षण संस्थाओं से कई नामी कलाकार निकले है जिनमें प्रो0 सुमन यादव, डॉ. मधुभट्ट तैलंग, डॉ. रोशन भारती, डॉ. राजेन्द्र माहेश्वरी, डॉ. आरती भट्ट तैलंग, पार्श्व गायिका रेखा राव, पार्श्व गायक क्षितिज तारे, पार्श्व योगेश गंधर्व, चंचल काबरा, नीतू सोलंकी, विजेन्द्र गौत्तम, तथा डॉ. निशा भट्ट तैलंग का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

आज हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में अंसख्य संगीत विद्यार्थी संगीत शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे है। यहाँ की प्रमुख संगीत शिक्षण संस्थाओं में देश की प्रसिद्व संस्था स्पीक मेके के द्वारा राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमंत्रित कर गायन, वादन तथा नृत्य के कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है जिससे संगीत विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे है।

संगीत उन्नयन में ढूंढ़ाड क्षेत्र की प्रमुख संगीत संस्थायें जिनमें ध्रुवपद धाम रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र तथा दर्शक संगीत संस्था जयपुर एवं हाड़ौती क्षेत्र में संगीतिका, स्वरनिनाद कला केन्द्र, लेम्प संगीत संस्था अपना प्रमुख योगदान दे रही है।

राजस्थान के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना होने के पश्चात् हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। यहाँ की संगीत शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन कर असंख्य संगीत विद्यार्थी संगीत के शास्त्रात्मक व क्रियात्मक दोनो ही भागों की गहन शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे है तथा संगीत उन्नति की और अपने कदम बढ़ा रहा है।

laxhr f'k{k.k laLFkkvksa

dk

orZeku Lo:Ik

lxhr f’k{k.k lLFkkvk dk orleku Lo:i

शिक्षा मानव के सम्यक विकास का आधार है। सामान्य शिक्षा मानसिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। शिक्षा का सामाजिक, नैतिक तथा बौद्धिक दृष्टि से व्यापक अर्थ है जिसके कारण समाज व संस्कृति के नैतिक उत्थान का कारण बनती है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव को सभ्य व संस्कारों से परिपूर्ण बनाया जा सकता है तथा मानव का आन्तरिक व बाह्य विकास भी शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

शिक्षा मानव के संर्वागीण विकास का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है एवं शिक्षा के द्वारा ही हमारे समाज व राष्ट्र को नवीन दिशा प्रदान की जा सकती है। संगीत शिक्षा का अर्थ केवल स्वर युक्त धुनों व रागों को सीखना ही नहीं अपितु संगीत के साधना पक्ष को प्रबल बनाने हेतु विद्यार्थियों का ध्यान संगीत की और आकर्षित करना है। इसी उद्धेश्य को ध्यान में रखते हुए इस विषय को शिक्षा से जोड़ा गया है।

बालकों के संर्वागीण विकास हेतु संगीत कला को सशक्त माध्यम बताया गया है एवं संगीत के द्वारा किसी भी कार्य को सरलता के साथ किया जा सकता है। संगीत शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों का चहुमुखी विकास किया जा सकता है तथा शिक्षार्थियों के विकास में संगीत महत्वपर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन परम्पराओं व शिक्षा प्रणालियों की अनवरत धारा से ही वर्तमान संगीत शिक्षण प्रणाली प्रभावित हुई है। शिक्षा का अर्थ अध्ययन या ज्ञान अर्जित करना है। इसे गुरू के समीप रहकर ही प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य जीवन को उन्नत व सभ्य बनाया जा सकता जाता है। वैदिक समय में भी यही विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक विकास होता है।

वर्तमान में भी इसी विश्वास पर शिक्षा की नींव रखी गयी है। प्राचीन शिक्षा पद्धति पर किसी राज्य सरकार या साम्प्रदायिक दल का नियन्त्रण नहीं होने के कारण शिक्षा केवल गुरू के नेतृत्व में ही दी जाती थी। हर स्त्री पुरूष को शिक्षा सुलभ हो इसके लिए निःशुल्क शिक्षा व जीवन यापन के लिए भिक्षावृति को धर्म का नाम देकर उचित ठहराया एवं भरण–पोषण का उत्तर दायित्व समाज पर ही होता था।

अतः गुरूकुल या संगीत विद्यालय ही शिक्षा के केन्द्र थे। शिक्षा की विधि मूलतः मौखिक ही थी। क्योंकि शिक्षा की विधि में गुरू का अनुकरण एवं शंका समाधान के लिए वाद–विवाद व शास्त्रार्थ का प्रावधान था। मध्यकाल में संगीत शिक्षा घरानों के रूप में ही दी जाती थी। संगीत शिक्षण की गुरू शिष्य परम्परा अत्यन्त उच्च कोटि की थी। इसमें शिष्य कठिन से कठिन स्वरावलियों को गुरू मुख से सुनकर सीख लिया करते थे एवं विधार्थियों का सांगीतिक स्तर भी उच्च कोटि का होता था।

शिक्षा गुरूजनों द्वारा मौखिक रूप से ही दी जाती थी। घराना परम्परा में स्वरलिपि का प्रचलन नहीं था। घराना परम्परा में संगीतज्ञ संगीत की शिक्षा अपने पुत्रों व शिष्यों को ही दिया करते थे। इन प्रमुख घरानों में जयपुर, ग्वालियर, किराना, दिल्ली अतरौली, पटियाला, आगरा इत्यादि प्रमुख घराने थे, जिनके माध्यम से संगीत शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक काल में संगीत शिक्षा विद्यालयों तथा महाविद्यालयों द्वारा प्रदान की जाने लगी है।

वर्तमान हाड़ौती एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में प्रचलित संगीत शिक्षण संस्थाओं का वर्तमान स्वरूप निम्न प्रकार से है।

आधुनिक समय में राजस्थान के हाड़ौती एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। यहाँ संगीत के विद्यालय, महाविधालय संचालित किए जा रहे है जो संगीत शिक्षा के प्रमुख केन्द्र बने हुये है।

इन शिक्षण संस्थानों में राजकीय संगीत महाविद्यालय, निजी महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय संगीत विभागों की गणना की जाती हैं।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में विश्वविद्यालय स्तर के दो शिक्षण संस्थान संचालित है जिन्हे राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर तथा बनस्थली विद्यापीठ के नाम से जाना जाता है। यह दोनो ही विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा के प्रमुख केन्द्र माने जाते है। राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग की स्थापना विश्वविद्यालय परिसर में ही की गई है।

संगीत विभाग में कंठ संगीत तथा वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। यह संगीत विभाग सहशिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। जिसमें असंख्य संगीत विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त का लाभान्वित हो रहे है। इस संगीत विभाग में बी.म्यूज, एम.म्यूज, एम.ए. संगीत की कक्षाओं का संचालन कंठ संगीत तथा (सितार) वादन के रूप में किया जा रहा है एवम् संगीत विभाग में शोध कार्य करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है।

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष, अधिस्नातक पाठ्यक्रमों की अवधि दो वर्ष तथा बी.म्यूज पाठ्यक्रमों की अवधि चार वर्ष रखी गयी है। इन सभी पाठ्यक्रमों की परीक्षा प्रति वर्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा आयोजित की जाती है एवं संगीत पाठ्यक्रम को प्रायोगिक व शास्त्रात्मक दो भागों में बांटा गया है। ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी राजकीय तथा निजी महाविद्यालय जिनमें संगीत विषय को ऐच्छिक विषय के रूप में चलाया जा रहा है।

ये सभी महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्वता प्राप्त है एवं सभी महाविद्यलायों में परीक्षा इसी के द्वारा आयोजित की जाती है। जयपुर स्थित राजस्थान संगीत संस्थान जो संगीत का अधिस्नातक महाविद्यालय है। यह महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर तथा निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर से सम्बद्धता प्राप्त होने के साथ–साथ यह सहशिक्षा का प्रमुख केन्द्र माना जाता है।

इस महाविद्यालय में गायन, वादन (सितार, वायलिन, तबला) तथा कथक, नृत्य, की कक्षाओं का संचालन मध्यमा से लेकर निपुण स्तर किया जा रहा है। इस महाविद्यालय की बी.म्यूज तथा एम.म्यूज की परीक्षाओं का आयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है एवं मध्यमा से लेकर निपुण स्तर तक की परीक्षाओं का आयोजन निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर, द्वारा किया जाता है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित बनस्थली विद्यापीठ (डिम्ड विश्वविद्यालय) बनस्थली महिला शिक्षा का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। यह विश्वविद्यालय ग्राम वनस्थली तहसील निवाई, जिला टोंक में स्थित है। यह विश्वविद्यालय पंचमुखी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र माना जाता है एवम् पंचमुखी शिक्षा के अन्तर्गत संगीत शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया है। इस विश्वविद्यालय के संगीत विभाग को सुर मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

राजस्थान स्थित सभी विश्वविद्यालयों में बनस्थली विद्यापीठ एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत की शिक्षा गायन, वादन तथा नृत्य के रूप में प्रदान की जा रही है। बनस्थली विद्यापीठ द्वारा संगीत के डिग्री एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन गायन, वादन, (सितार, वायलिन) तथा नृत्य (कथक, मणिपुरी, भरतनाट्यम) के रूप में किया जा रहा है एवं सभी परीक्षाओं का आयोजन बनस्थली विद्यापीठ द्वारा ही किया जाता है।

इस विश्वविद्यालय में स्नातक पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष, अधिस्नातक पाठ्यक्रमों की अवधि दो वर्ष, एम.फिल की अवधि एक वर्ष तथा पीएच.डी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष रखी गयी है। यह संगीत विभाग ढूंढ़ाड़ क्षेत्र का सबसे प्राचीन तथा विशालतम संगीत विभाग रहा है तथा विश्वविद्यालय संगीत विभाग में प्यूजन संगीत का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। यह संगीत विभाग गुरू–शिष्य परम्परा तथा संस्थागत शिक्षण दोनो का प्रमुख शिक्षा केन्द्र माना जाता है।

वर्तमान हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में केवल संगीत के विद्यालय तथा ऐच्छिक विषय के रूप में अध्ययन कराने वाले विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय संगीत प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इन सभी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश अंको तथा सांगीतिक परीक्षण के आधार पर दिया जाता है तथा शिक्षण शुल्क भी वर्ष में एक बार ही लिया जाता है।

हाड़ौती क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं में राजकीय महाविद्यालय बून्दी, राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा, राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय कोटा तथा झालावाड़ एवम् सेक्रेड हार्ट महाविद्यालय कोटा का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

राजकीय महाविद्यालय बून्दी में कंठ संगीत तथा राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा में गायन तथा (सितार) वादन की कक्षाएँ बी.ए. तथा एम.ए. स्तर तक चलाई जा रही है। इन सभी महाविद्यालयों में परीक्षाओं का आयोजन कोटा विश्वविद्यालय कोटा द्वारा किया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष तथा अधिस्नातक पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष रखी गई है।

राजकीय संगीत विद्यालय कोटा तथा झालावाड़ में संगीत भूषण तथा प्रभाकर गायन, वादन तथा नृत्य की कक्षाएँ संचालित है जिनकी वार्षिक परीक्षाएँ पंजीयक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान बीकानेर द्वारा आयोजित की जाती है तथा इन विद्यालयों में डिप्लोमा पाठ्यक्रम ही चलाएँ जा रहे है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न संगीत संस्थाएँ कार्य कर रही है जिनमें रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र जयपुर, दर्शक संगीत संस्था जयपुर, संगीतिका कोटा, स्वरनिनाद कला केन्द्र एवम् लैम्प संस्था का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। यह सभी संस्थाएँ गुरू–शिष्य परम्परा की पद्धति को आज भी जीवित रखे हुए है। राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय के अतिरिक्त हाड़ौती क्षेत्र की सभी शिक्षण संस्थाएँ सह शिक्षा पर आधारित संस्थाएँ है।

भारतीय संस्कृति में संगीत का विशेष स्थान रहा है। वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा पर आधारित रही हैं। प्राचीन काल व मध्यकाल में भी संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही रहा हैं परन्तु आधुनिक काल में संगीत की शिक्षा के गुरू–शिष्य परम्परा व संस्थागत शिक्षण दोनों के द्वारा दी जा रही है। इन सभी शिक्षण संस्थाओं ने संगीत जगत को उच्च कोटि के कलाकार प्रदान किए है।

f}rh; v/;k;

gkMkrh o <<kM {ks= dh

laxhr f'k{k.k laLFkk,¡

1. संगीत शिक्षक की अवधारणा एवं प्रारम्भिक पाठ्यक्रम
2. स्वाधीनता से पूर्व स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान
3. स्वाधीनता के बाद स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान
4. विश्वविद्यालय स्तर के संस्थान
5. महाविद्यालय स्तर के संस्थान
6. निजी एवं अशासकीय शिक्षण संस्थान

gkMkSrh o <w<kM+ {ks= dh laxhr f'k{k.k laLFkk;s

राजस्थान के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत की जो शिक्षण संस्थाये संचालित है उनमें संगीत विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय सम्मिलित है। इन सभी शिक्षण संस्थाओं में गायन वादन तथा नृत्य की शिक्षा प्रदान की जाती है।

gkMkSrh {ks= dh f'k{k.k laLFkk;s

राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में संचालित संगीत शिक्षण संस्थाओं में वर्तमान समय में दो राजकीय अधिस्नातक महाविद्यालय है जिनको राजकीय महाविद्यालय बून्दी तथा राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा के नाम से जाना जाता है। यह दोनों ही महाविद्यालय कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से सम्बद्वता प्राप्त है। इन दोनों ही महाविद्यलायों में संगीत विषय को अधिस्नातक स्तर पर संचालित किया जा रहा है।

राजकीय महाविद्यालय बून्दी में केवल गायन की कक्षाएँ ही संचालित की जा रही है। राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा में गायन तथा वादन (सितार) की कक्षाएँ संचालित की जा रही है। इन महाविद्यालयों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में संगीत के दो राजकीय संगीत विद्यालय संचालित है जिन्हे राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, कोटा, तथा राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, झालावाड़ के नाम से जाना जाता है।

यह दोनों ही विद्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान बीकानेर से सम्बद्धता प्राप्त है तथा दोनों ही विद्यालयों में भूषण व प्रभाकर, गायन, वादन व नृत्य की कक्षाएँ संचालित की जा रही है। इनके अतिरिक्त यहाँ एक निजी महाविद्यालय भी संचालित है जिसे सेक्रेड हार्ट महाविद्यालय के नाम से जाना जाता है। यह महाविद्यालय संगीत विषय को स्नातक स्तर तक ही संचालित कर रहा है एवं कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त है।

इस महाविद्यालय में केवल गायन की ही कक्षाएँ संचालित है। इस क्षेत्र में निजी स्तर पर और भी संस्थाएँ काम कर रही है जिनमें संगीत संस्थान दादाबाड़ी प्रमुख है। यह विद्यालय अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई से सम्बद्धता प्राप्त एवं उसका परीक्षा केन्द्र है। जहाँ गायन, वादन व नृत्य में कई छात्र–छात्राएँ प्रति वर्ष नियमित व स्वयपाठी परीक्षार्थी के रूप में सम्मिलित होते है। इस विद्यालय के अतिरिक्त एक विद्यालय बसन्त बिहार, कोटा मे संचालित है जो प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से सम्बद्धता प्राप्त है।

इस विद्यालय में गायन, वादन व नृत्य की कक्षाएँ संचालित है। इस विद्यालय में प्रतिवर्ष छात्र–छात्राएँ नियमित व स्वयपाठी परीक्षार्थी के रूप में सम्मिलित होकर शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इसके अतिरिक्त निजी स्तर पर एक संगीत विद्यालय बारां में भी संचालित है जो अखिल भारतीय गान्धर्व महाविधालय मण्डल, मुम्बई से सम्बद्धता प्राप्त है। इस क्षेत्र में कुछ अन्य संस्थाएँ भी संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है जिनमें लेम्प व संगीतिका संस्था प्रमुख है। वर्तमान में यहाँ तीन विश्वविद्यालय संचालित है जिनमें एक भी विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की स्थापना नहीं की गई है।

<<kM {k= dh lxhr f'k{k.k lLFkk;

राजस्थान का ढूंढ़ाड़ क्षेत्र संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस क्षेत्र में संगीत शिक्षण संस्थानों की अत्यधिक भरमार है। यहाँ राजकीय तथा निजी स्तर पर कई विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय संचालित है। यहाँ के राजकीय महाविद्यालयों में विश्वविद्यालय महारानी कॉलेज तथा राजस्थान संगीत संस्थान का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

यह दोनों ही महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्वता प्राप्त है। इन महाविद्यालयों में महारानी महाविद्यालय केवल छात्राओं के लिए है तथा राजस्थान

संगीत संस्थान सहशिक्षा का प्रमुख केन्द्र है जिसे राजस्थान संगीत संस्थान के नाम से जाना जाता है।

यह महाविद्यालय शिक्षा संकुल जयपुर में संचालित किया जा रहा है। इस महाविद्यालय में गायन, वादन व नृत्य के पाठ्यक्रम संचालित है जिनकी परीक्षाएँ निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर द्वारा आयोजित की जाती है। इस महाविद्यालय में बी.म्यूज तथा एम.म्यूज की परीक्षाएँ राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा आयोजित की जाती है। इस क्षेत्र के कई महाविद्यालयों में संगीत विषय को स्नातक व अधिस्नातक दोनों ही स्तरो पर संचालित किया जा रहा है। इन महाविद्यालयों में जो प्रमुख महाविद्यालय है उनके नाम निम्न प्रकार से है।

स्नातक स्तर के महाविद्यालय

1. सेन्ट विल्फ्रेड पी.जी. महाविद्यालय मानसरोवर, जयपुर
2. परिष्कार महाविद्यालय, मानसरोवर जयपुर
3. स्टेनी मेमोरियल महाविद्यालय, जयपुर
4. कानोंड़िया महिला महाविद्यालय, बापू नगर जयपुर
5. वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर
6. भवानी निकेतन महाविद्यालय, जयपुर

अधिस्नातक स्तर के महाविद्यालय

7. वैदिक कन्या महाविद्यालय, मानसरोवर जयपुर
8. राजस्थान संगीत संस्थान, शिक्षा संकुल जयपुर
9. सत्य सांई पी.जी. महिला महाविद्यालय, जवाहर नगर जयपुर

इन सभी महाविद्यालयों में संगीत को स्नातक व अधिस्नातक स्तर पर संचालित किया जा रहा है। वीर बालिका महाविद्यालय व सत्य साई महाविद्यालय में संगीत को अधिस्नातक स्तर तक संचालित किया जा रहा है। ये सभी महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्धता प्राप्त है।

इस क्षेत्र में वैसे तो कई निजी विश्वविद्यालय संचालित है परन्तु बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र का एक मात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ गुरू–शिष्य परम्परा व संस्थागत शिक्षण द्वारा संगीत की शिक्षा दी जा रही है। इस विश्वविद्यालय में संगीत को प्राथमिक शिक्षा लेकर उच्च शिक्षा तक सम्मिलित किया गया है जिसमें गायन, वादन तथा नृत्य के पाठ्यक्रम संचालित है।

बनस्थली विद्यापीठ व राजस्थान विश्वविद्यालय दोनों ही शोध कार्य करने की सुविधा उपलब्ध करवाते है। इस विभाग में गायन, वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन स्नातक व अधिस्नातक स्तर पर किया जा रहा है इस संगीत विभाग में छात्र व छात्राएँ दोनों ही विद्या अध्ययन के लिए आते है तथा सभी संगीत परीक्षाओं का आयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा ही किया जाता है।

इस पूरे क्षेत्र में निजी संगीत विद्यालय भी संचालित है जिनमें कल्पना संगीत विद्यालय, अनुराग संगीत संस्थान, तानसैन संगीत महाविद्यालय, दर्शक संगीत संस्थान, बापू नगर, तथा महाराजा सवाई मान सिंह संगीत महाविद्यालय, प्रमुख शिक्षा केन्द्र है। इन सभी विद्यालयों में गायन, वादन व नृत्य की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है।

इन विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य संगीत संस्थायें भी संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपर्ण योगदान दे रही है जिनमें ध्रुपद–धाम, रस–मंजरी संगीतोपासना केन्द्र तथा दर्शक संगीत संस्था का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। जहाँ गुरू–शिष्य परम्परा के अनुसार ही संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती है।

lxhr f'k{kd dh vo/kkj.kk ,oa çkjfEHkd ikB~;dze

Lkaxhr f'k{kd dk ifjp;

संगीत शिक्षक वह शिक्षक होते है जो संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में संगीत विषय की शिक्षा प्रदान करते है। इन शिक्षकों के अन्तर्गत पुरूष व महिला दोनो ही शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये संगीत कला के दोनों ही पक्षों (शास्त्र व क्रियात्मक) में निपुण होते है। इन शिक्षकों का मुख्य कार्य संगीत विद्यार्थियों को संगीत विषय की शिक्षा प्रदान करना है। वर्तमान परिदृश्य में इन शिक्षकों को कई नामों से सम्बोधित किया जाता है। जैसे संगीत–गुरू, संगीताचार्य, संगीत अध्यापक, संगीत मास्टर, संगीत प्राध्यापक, संगीत व्याख्याता व संगीत प्रोफेसर इत्यादि। अंग्रेजी भाषा में संगीत अध्यापकों को म्यूजिक टीचर **(music teacher)** कहा जाता है। संगीत की प्राचीन घराना परम्परा में इन शिक्षकों के लिए गुरू या उस्ताद शब्द का प्रयोग किया जाता था। जिन कलाकारों ने गुरू–शिष्य प्रणाली से संगीत शिक्षा प्राप्त की है वे लोग आज भी अपने गुरू या उस्ताद के नाम पर कानों को स्पर्श कर उनको सम्मान प्रदान करते है। संगीत के क्षेत्र में इन संगीत शिक्षकों को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। संगीत शिक्षण में इन शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

गुरू शब्द की महानता का बखान हमारे प्राचीन ग्रन्थों में किया गया है। गुरू की महिमा को निम्न श्लोक में दर्शाया गया है।

xq: czãk xq: fo".kq xq: nsok egs'oj%A
xq:% lk{kkr~ ijczã] rLeS Jh xqjos ue%!![1]

उपरोक्त श्लोक में गुरू को परब्रह्म के समान ही बताया गया है। अर्थात् गुरू को पूज्यनीय बताया गया है। क्योंकि गुरू ही शिष्य का सही मार्गदर्शक होता है।

1. अमरेश चन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली' पृष्ठ संख्या 6

महाकवि कालिदास ने कहा है– ''यस्यो–भयं साधु स शिक्षकाणं/धुरि प्रतिष्ठापयित्व्य एव अर्थात् कालिदास जी ने उसी शिक्षक को श्रेष्ठ बताया है जो स्व्यं कला निपुण होते हुए शिष्यों को भी निपुण बनाने की क्षमता रखता है। श्रेष्ठ संगीत आचार्य के लिए संगीत में निपुणता तथा शिक्षा–दान दोनों ही आवश्यक माने गये है।

जिस प्रकार एक बागवान पौधों को परिश्रम द्वारा पानी सींच–सींचकर उनको विशाल पेड़ बना देता है, ठीक उसी प्रकार यदि एक सच्चा संगीत शिक्षक चाहे तो अपने शिष्य को सांगीतिक तत्वों का सच्चा ज्ञान कराकर उसको भी एक महान् कलाकार बना सकता है।[1] हमारे प्राचीन भारतीय शास्त्रों में गुरू के तीन भेद माने गये है– आचार्य, उपाध्याय और गुरू जो ब्राहमण शिष्य का उपनयन कर यज्ञ, विद्या एवं उपनिषद् सहित वेद पढ़ाएँ उन्हे आचार्य कहा गया है यथा–उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्याययेद द्विजः।

संकल्पं सरहस्यं च तमाचार्य प्रचक्षते।।'[2]

जीविका के लिए जो वेद के एकांश या वेदांगों को पढ़ाता है वही उपाध्याय' कहलाता है। यथा–

'एकदेशं तु वेदस्य वे दांगाज्यदि वा पुनः।

यो डध्यायर्थात वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्चते!![3]

जे विप्र निषेक आदि कर्मो को विधि पूर्वक करता है और दूसरे उपायों से भी सम्माननीय बनाता है वह 'गुरू' कहलाता है। यथा–

निषेका दीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि।

सम्भावयति चान्येन स विप्रों गुरूरूच्यते।।[4]

---

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग 'संगीत परीक्षा' अंक जनवरी–फरवरी 1987' पृष्ठ संख्या 130
2. मधुबाला सक्सैना 'भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर' पृष्ठ संख्या 5
3. .....वही पृष्ठ
4. .....वही पृष्ठ

शिक्षक के इन तीनों रूपों में शिष्यों को पूर्ण विद्वान बनाने की प्रवृति निहित है। शैक्षणिक प्रक्रिया में शिक्षक की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह शिक्षार्थी के लिए आदर्श, सर्वगुण सम्पन्न तथा श्रेष्ठ अनुकरणीय व्यक्तित्व होता है। वर्तमान समय में विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा संगीत के अनेक विश्वविद्यालयों में अनेक शिक्षक अपनी संगीत की सेवाएँ दे रहे है, एवं अपने जीवन का निर्वाह भी कर रहे है।

एक संगीत शिक्षक का उद्वेश्य केवल धन कमाना ही नहीं होना चाहिए अपितु संगीत विद्यार्थियों को उचित दिशा प्रदान करना एक शिक्षक का कर्त्तव्य होना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी में बुद्वि–चातुर्य निः सन्देह विद्यमान है, किन्तु सही तालीम के अभाव में और लम्बी अवधि तक शिक्षण न मिलने के कारण ये युवक–युवतियाँ कला की पराकाष्ठा पर पहुँचने मे असमर्थ है।

उचित समय व सुव्यवस्थित शिक्षण से अर्थात् एक सुयोग्य कुशाग्र व कुशाल शिक्षक के सानिध्य में विद्यार्थी प्रशिक्षण विहित समय में प्राप्त करें तो संगीत व संगीतकार दोनों का ही विकास सम्भव है। संगीत की शैक्षणिक प्रक्रिया में संगीत शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका बताई गयी है।

वह अपने गुणों के आधार पर ही संगीत शिक्षार्थी के व्यक्तिगत व सामाजिक विकास में उनकी उपयोगिता सिद्व करनें में सहायक बनता है, इसी कारण संगीत शिक्षक का गुणवान होना आवश्यक है। इन गुणों के अभाव में एक सच्चा संगीत शिक्षक नहीं कहा जा सकता है। इन गुणों को निम्न बिदुंओं के आधार पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

laxhr f'k{kd ds xq.k

1- laxhr f'k{kd dk O;fDrRo %&

संगीत शिक्षक संगीत विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास में उत्तरदायी होता है, अतः उसको भी अच्छे व्यक्तित्व वाला आदर्शवादी शिक्षक होना चाहिए। अपने स्वच्छ व्यक्तित्व से ही संगीत के विद्यार्थी को अपनी और आकर्षित कर सकता है।

2- laxhr f'k{kd dk e`nHkk"kh gksuk %&

शिक्षक को सदेव मीठे–शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। कभी भी संगीत शिक्षार्थी के साथ कटु शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि प्रेम हमेशा सबको अपनी और आकर्षित करता है, एवं कटु व्यक्ति से सभी दूर भागने की कोशिश करते है। अतः शिक्षक का मृदभाषी होना आवश्यक है।

3- laxhr f'k{kd }kjk 'kCnksa dk lgh mPpkj.k djuk %&

संगीत शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह संगीत की शिक्षा देते समय, विधार्थियों के समक्ष शब्दों का सही उच्चारण करे। शिक्षक द्वारा गलत उच्चारण करने पर विद्यार्थी भी दोहराते हुए उसका गलत ही उच्चारण कर सकता है। अतः शिक्षक को सावधानी पूर्वक शब्दों का सही उच्चारण करना चाहिए।

4- vkRefo'oklh %&

संगीत शिक्षक में इस गुण का होना अति आवश्यक है। कई बार ऐसा देखा गया है कि संगीत शिक्षक के अथाह परिश्रम के बावजूद भी संगीत विद्यार्थी, शिक्षक द्वारा सीखाई गई बंदिश को नहीं गा पाते है। इस स्थिति में संगीत शिक्षक थोड़ी देर के लिए विचलित हो जाता है।

अतः शिक्षक के बार–बार प्रयास करने से वह विद्यार्थी अवश्य ही संगीत सीख सकता है। अतः संगीत शिक्षक का आत्मविश्वासी होना आवश्यक है।

5- laxhr f'k{kd dh 'kkUr çofr %&

संगीत शिक्षक में इस प्रवृति का होना अति आवयश्क है। कई बार विद्यार्थी बेसुरा गाने लग जाते है या ताल तोड़ देते है तो संगीत शिक्षक मुहँ बनाने लग जाता है एवं विद्यार्थी को डाटने लग जाता है। इस डॉट की वजह से विद्यार्थी का मनोबल गिर सकता है। अतः शिक्षक को संगीत सीखाते समय शान्त रहना आवश्यक है।

6- laxhr f'k{kd dh U;k; fç;rk %&

संगीत शिक्षक में इस गुण का होना बहुत ही आवश्यक है । कई बार विद्यालयों व महाविद्यालयों में संगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया जाता है। इस स्थिति में संगीत शिक्षकों को निर्णायकों के रूप में आमन्त्रित किया जाता है। वहाँ पर चाहे घर का सदस्य ही भाग क्यों नहीं ले रहा हो, उस जगह अपनी न्यायप्रियता का परिचय देना चाहिए। अतः संगीत शिक्षक के जीवन में यह गुण अत्यधिक महत्व रखता है।

7- fo|kfFkZ;ksa esa laxhr dh :fp mRiUu djus esa l{ke %&

संगीत शिक्षक का दायित्व है की वह संगीत का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ संगीत का ऐसा माहौल उत्पन्न करे जिससे अत्यधिक विद्यार्थी संगीत के प्रति अपनी रूचि बनाएँ रखे क्योंकि संगीत का अनुकूल वातावरण बनाए रखने से ही संगीत का विकास संभव है।

8- laxhr l`tu esa fuiq.k %&

संगीत के क्षेत्र में शिक्षकों को नवीन प्रयोग करते रहना चाहिए। ऐसा करने से विद्यार्थियों को नयी–नयी चीजों की प्राप्ति होगी, और वह संगीत के प्रति अपनी रूचि को बनाएँ रखेगें। क्योंकि संगीत नवीनता पर ही आधारित होता है।

9- laxhr f'k{kd }kjk fu;fer vH;kl djuk%&

संगीत शिक्षक को नियमित रूप से संगीत का अभ्यास करना चाहिए एवं संगीत के विद्यार्थियों को भी नियमित अभ्यास के लिए सलाह देनी चाहिए। क्योंकि संगीत में

साधना का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बिना कला में सुन्दता उत्पन्न नहीं की जा सकती है। संगीत की साधना के बारे में ऐसा कहा जाता है कि साधो तो स्वर है न साधो तो जीवन बेसुरा है। अर्थात संगीत में साधना करना अति आवश्यक है। संगीत शिक्षक का यह भी एक प्रमुख दायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों को पिता तुल्य सम्मान प्रदान करें। क्योंकि शिक्षक होने के साथ–साथ शिक्षक पिता तुल्य भी होता है।

10- lxhr f'k{kd dk fo"k; e ikjxr gkuk %&

संगीत शिक्षक का यह भी एक आवश्यक गुण माना गया है। संगीत शिक्षक का धर्म है कि वह अपने विषय में पूर्ण जानकारी रखता हो। अन्यथा एक छोटी सी भूल भी उसको प्रभावित कर सकती है। अतः संगीत शिक्षक को अपने विषय में पूर्ण जानकारी रखना चाहिएA

11- f'k{k.k vuHko %&

संगीत शिक्षक में यह गुण कुछ समय बाद उत्पन्न होता है। जब वह 4 या 5 वर्ष तक संगीत अध्यापन कर लेता है तो उसमें अपने विषय के प्रति अनुभव हो जाता है। उच्च कक्षाओं के अध्यापन में तो इस गुण का होना बहुत ही आवश्यक है।

संगीत विषय ऐसा विषय है जिसमें गहनता की आवश्यकता होती है। क्योंकि संगीत शिक्षक यदि संगीत में दक्षता प्राप्त नहीं करेगा तो उसका व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। वर्तमान समय में कई शिक्षक प्राईवेट ट्यूशन पढ़ाकर अपना व अपने परिवार का भरण–पोषण कर रहे है। अगर संगीत शिक्षक अपने विषय में निपुण नहीं होगें तो ऐसी स्थिति में उसका व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। अतः शिक्षक का धर्म है कि वह अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदारी से काम करें एवं अपने व्यवसाय के प्रति प्रेम की भावना बनाएँ रखे।

12- le; dk ikcUn gkuk %&

संगीत शिक्षक का यह भी एक प्रमुख गुण माना गया है। संगीत शिक्षक को सभी कार्य एक निश्चित समय पर ही पूर्ण करना चाहिए। अगर शिक्षक सरकारी कर्मचारी है तो उसे समय पर ही विद्यालय या महाविद्यालय में आना–जाना चाहिए। संगीत शिक्षक

का धर्म है कि वह संगीत विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम भी समय पर ही पूर्ण करवायें। अतः शिक्षकों में इस गुण का होना अति आवश्यक है।

13- lxhr f'k{kd e feyu lkjrk dk gkuk %&

संगीत शिक्षक में इस गुण का होना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि यदि संगीत शिक्षक में यह गुण विद्यमान है तो वह सभी लोगों का हितैषी बन सकता है तथा सभी लोग ऐसे शिक्षक को आदर व सत्कार की दृष्टि से देखते है। कई बार अधिकारी वर्ग संगीत शिक्षकों को भी विद्यालय महाविद्यालय संबंधी कार्य बता देते है। अतः शिक्षकों का धर्म है कि वह उन कार्यो को करने में आना–कानी नहीं करें। इस गुण से संगीत के विद्यार्थियों में भी मिलनसार वाली भावना का उदय होगा। अतः संगीत शिक्षक में इस गुण का होना आवश्यक है।

lxhr dh f'k{k.k fof/k;k vkj lgk;d lkexh

संगीत शिक्षक का धर्म है की वह संगीत शिक्षण के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए संगीत में प्रयुक्त होने वाली समस्त शिक्षण विधियों एवं सहायक सामग्री के द्वारा ही संगीत की शिक्षा प्रदान करें। क्योंकि यह संगीत विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सकती है। अतः संगीत शिक्षक को संगीत शिक्षण में निम्नलिखित शिक्षण विधियों व सहायक सामग्री प्रयोग कर संगीत की शिक्षा देनी चाहिए।

1- Hkk"k.k fof/k%&

इस विधि के अनुसार शिक्षक जो कुछ भी विद्यार्थी को बताता है, वह उसे ध्यान पूर्वक सुनता व समझता है, एवं उसे आत्मसात् करने का प्रयास करता है। इस विधि में शिक्षक विषय वस्तु को संगठित रूप तथा मौखिक रूप से ही प्रस्तुत करता है। इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक क्रियाशील रहता है और विद्यार्थी निष्क्रिय रहते है, एवं ध्यानपूर्वक शिक्षक द्वारा बतायी गई विषय वस्तु को ग्रहण करता रहता है। इस विधि का प्रयोग संगीत के सैद्वान्तिक पक्ष के लिए किया जाता है। इस पद्वति का प्रयोग संगीत

के उच्च शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी है। इस शिक्षण विधि में यदि भाषण विधि के साथ प्रश्न विधि का भी सहारा लिया जाए तो उसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

2- Xo'k.kkRed fof/k %&

इस विधि के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को विषय से सम्बन्धित सामान्य जानकारी देता है और उसे स्वंय खोजने के लिए प्रेरित करता है। इस विधि से विद्यार्थियों की बुद्धि, तर्क–वितर्क, शक्ति, आत्म निर्भरता एवं मौलिकता का विकास होता है।

3- çn'kZu&vuqdj.k fof/k %&

संगीत शिक्षण की यह सबसे प्राचीन विधि है। आज भी संगीत शिक्षण का प्रमुख आधार यही विधि है। जिसे संगीत शिक्षण की सभी परम्पराओं में मान्यता प्राप्त है। संगीत कला का मुख्य रूप से सम्बन्ध कलात्मक परिपक्वता से है। इसी कारण संगीत शिक्षण में प्रदर्शन विधि अति उत्तम मानी गयी है।

4- y?kq çf'k{k.k vof/k %&

इसके पद्धति में संगीत शिक्षक वार्षिक परीक्षा होने से पूर्व ही संगीत शिक्षक छोटे–छोटे समूह में विद्यार्थियों की परीक्षा लेते है। कुछ अंक निर्धारित करके उन्हे उर्त्तीण या अनुत्तीर्ण घोषित करते है। इससे विद्यार्थी को अपने परीक्षात्मक स्तर का अनुमान समय रहते ही हो जाता है।

5- çn'kZukRed fof/k %&

इसके अन्तर्गत शिक्षक भिन्न–भिन्न वाद्यों के आश्रय से चार्ट या ग्राफ आदि के माध्यम से संगीत के सैद्वान्तिक अंगो को प्रयोगात्मक रूप में दर्शाता है। वैज्ञानिक संयन्त्रों के माध्यम से ध्वनि की तारता लय के विभिन्न प्रयोगों, वाद्यों की बनावटे व उनकी विशेषता, श्रुति सारणा आदि की व्यवस्था को प्रमाणित रूप में विधार्थियों के लिए ग्राहय बना सकता है।

6- lsfeukj

क्रियात्मक या सैद्वान्तिक रूप से इन आयोजनों में विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन का अवसर मिलता है। लेख पढ़ने तथा उस लेख पर अन्य विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को जानने का सुअवसर प्राप्त होता है।

7- ekf[kd çfØ;k %&

इस प्रक्रिया में शिक्षक व विद्यार्थी भावनात्मक स्तर पर एक दूसरे के साथ सम्बद्ध हो यह अत्यन्त आवश्यक है, अतः एक या दो अथवा तीन विद्यार्थियों के छोटे–छोटे समूह बनाना आवश्यक है। वैयक्तिक सम्बन्द्वता से शिक्षक विद्यार्थी को कंठ साधना प्रदर्शन का तरीका तथा शास्त्रीय संगीत में निहित सौन्दर्यात्मक तत्वों को अधिक कुशलता से समझ सकता है। क्रियात्मक पक्ष के शिक्षण हेतु यह सर्वोत्कृष्ट प्रक्रिया है। शास्त्रों में निहित सौन्दर्यात्मक तत्वों को अधिक कुशलता से समझा सकता है। क्रियात्मक पक्ष के शिक्षण हेतु यह सर्वोत्कृष्ट प्रक्रिया है। शास्त्र में निहित सैद्वान्तिक सामग्री या राग व ताल का सैद्वान्तिक विवेचन बड़े समूहों में भी व्याख्यान के रूप में सम्भव है।

8- ikB~; çfØ;k %&

इस विधि में विद्यार्थियों को बोलने या लिखकर उत्तर देने का अवसर अधिक मिलता है। प्रश्नोत्तरी के माध्यम से मौखिक रूप में या एक निर्धारित समय में एक या दो प्रश्नों के उत्तर लिखकर विद्यार्थी अपनी ग्राहयता का परिचय देता है। सामयिक चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा ही प्रश्न पूछे जाने के प्रयास भी विद्यार्थियों में शोधात्मक प्रवृति का विकास करते है। उपरोक्त सभी विधियाँ स्नातक व स्नात्कोत्तर स्तर पर बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध होती हैं।

Lkxhr f'k{k.k dh lgk;d lkexh

¼ikB;Øe½

वर्तमान युग विज्ञान का युग माना जाता है। विज्ञान की सर्वतोमुखी प्रगति ने मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। वर्तमान समय में विभिन्न पाठ्यक्रमों में सम्मिलित मानविकी एवं वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन के लिए अनेक शिक्षण संस्थानों में नये–नये वैज्ञानिकों उपकरणों द्वारा शिक्षा प्रदान की जा रही है। इन उपकरणों द्वारा शिक्षणों को प्रभावी बनाया जा सकता है। संगीत विषय की शिक्षा भी वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा दी जाये, तो संगीत शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है। संगीत विषय के वातावरण निमार्ण में और शिक्षण में सरलता व सजीवता लाने में ये उपकरण अत्यधिक सहायक होते है। संगीत शिक्षण के अनुकूल सहायक उपकरणों का चयन करने से पूर्व कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. संगीत शिक्षक को संगीत का शिक्षण करते समय ऐसे उपकरणों का चयन करना चाहिए, जिससे संगीत विद्यार्थियों को विषय सम्बन्धी जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाए।
2. संगीत शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की वह संगीत शिक्षण में उपकरणों का प्रयोग विद्यार्थियों के अनुभव तथा उसकी परिपक्वता को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।
3. संगीत शिक्षण में उन्ही उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो संगीत सम्बन्धी समस्याओं का समाधान कर संगीत विद्यार्थियों को लाभान्वित करनें में सक्षम हो। सामग्री के अन्तर्गत आने–वाले सभी उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। इस शिक्षण क्रिया से संगीत विद्यार्थियों के ज्ञान में अभिवृर्दि के साथ–साथ संगीत शिक्षण का स्तर भी उच्च कोटी का बन जाता है। संगीत शिक्षण की समस्याओं के निवारण में ये सहायक उपकरण अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। संगीत शिक्षण में इनकी सफलता संगीत शिक्षक की रूचि, कल्पना शक्ति एवं अन्तर दृष्टि पर निर्भर करती है।

lxhr f'k{k.k dh n';kRed lkexh

संगीत शिक्षण की इस सामग्री के अन्तर्गत चार्ट,ग्राफ, मानचित्र, डायग्राम, मॉडल व श्याम पट्ट आदि उपकरणों की गणना की गई है। इन उपकरणों के द्वारा संगीत के पारिभाषिक अंगो व उपांगों, राग वर्गीकरण, स्वरलिपि लेखन तथा कुछ ऐतिहासिक तथ्यों को प्रेरेणात्मक रूप ग्रहण करता है।

1. lxhr e fp=k dk ç;kx %&संगीत शिक्षण में चित्रों का प्रयोग कर संगीत के सैद्वान्तिक व क्रियात्मक दोनों ही पक्षों को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। संगीत कक्षों में महान् संगीतकारों के छाया चित्र लगे हुए होने चाहिए जिससे संगीत विद्यार्थियों में प्रेरणात्मक भावों का विकास होता है। इन चित्रों के माध्यम ये वाद्य यन्त्रों का रख–रखाव, उनको बजाने का ढ़ग, सही बैठक व्यवस्था व वादन विधि व विभिन्न प्रकार की नृत्य मुद्राओं से अवगत कराया जा सकता है। इन चित्रों के माध्यम से संगीत विधार्थी संगीत विषय का ज्ञान सरलता से प्राप्त कर सकता है। अतः संगीत शिक्षण में संगीत से सम्बन्धित चित्रों का प्रयोग करना चाहिए।
2. lxhr lEcfU/kr ekufp=k dk ç;kx djuk %&संगीत के सैद्वान्तिक पक्ष के अन्तर्गत अनेक ऐसे विषय आते है। जिनका क्रमबद्व ऐतिहासिक विवरण विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना होता है। उन विषयों का विवरण प्राप्त करने में मानचित्र एक अति उत्तम माध्यम सिद्व होते है। घरानों की परम्पराओं तथा उनका विभिन्न स्थानों से सम्बन्ध, कलाकारों तथा संगीतज्ञों का कार्य क्षेत्र, विभिन्न प्रदेशों के लोकगीत और उनकी परम्पराओं के शिक्षण के लिए मानचित्र सहायक होते हैं। परन्तु मानचित्रों के चुनाव उनकी विश्वसनीयता तथा शुद्धता के लिए शिक्षक को बड़ी सावधानी बरतने की आवश्यकता है।
3. संगीत शिक्षण में श्याम–पट्ट का प्रयोग :–संगीत शिक्षण में श्याम–पट्ट का अत्यधिक महत्व बताया गया है। इसके माध्यम से शिक्षक विषय सम्बन्धी जानकारी लिखकर के विद्यार्थियों को बता सकता है।

जैसे ताल की दुगुन, तिगुन, चौगुन, व छः गुन की लयकारियों को लिखकर विद्यार्थियों को उनका ज्ञान करवाया जा सकता है।

फिल्म स्ट्रिप :—ये फिल्म स्ट्रिप प्रोजेक्टर की सहायता से चलाई जा सकती है। इसके द्वारा शिक्षक उन्ही चित्रों को दिखा सकता है। जिन्हे वह उपयोगी तथा आकर्षक समझता है। चित्रों को दिखाने से पूर्व उन्हे क्रमबद्व कर लिया जाता है।

4. चित्रविस्तारक यन्त्र :—इस यन्त्र के द्वारा अपार दर्शक सूक्ष्म वस्तुएँ भी बड़ी दिखाई देने लगती है। इसके माध्यम से चित्र, रेखाचित्र व अन्य वस्तुएँ भी परदे पर दिखाई जा सकती है। छायाचित्र पर इनका प्रदर्शन विशेष प्रभावशाली होता है। इससे संगीत शिक्षण में सजीवता आती है।

5. संगीत सम्बन्धित चार्टो का प्रयोग करना :—संगीत शिक्षण में संगीत से सम्बन्धित चार्टो का महत्वपूर्ण योगदान होता है। क्योंकि इन चार्टो के माध्यम से किसी भी सूचना या विषय को योजना बद्व तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। संगीत से सम्बन्धित विषय जैसे राग—वर्गीकरण, नाद, श्रुति, स्वरों के नाम, विभिन्न तालों का संकलन, गायकों के विभिन्न घरानों का तुलनात्मक अध्ययन आदि विषयों को सरलता के साथ दर्शाया जा सकता है।

6. डायग्रामों का प्रयोग :—संगीत शिक्षण में डायग्राम की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। डायग्राम सरल एवं चित्रमय लेख होते है, जो संगीत की विषय वस्तु की संक्षेप में व्याख्या करते है। इसमें सूक्ष्म तथ्यों को भी स्थूल रूप दिया जाता है। ये डायग्राम चार्ट से अधिक आकर्षक तथा रोचक होते है। डायग्राम को बनाना शिक्षक की योग्यता व उसकी निपुणता पर निर्भर होता है।

7. ग्राफ :—विषय की दुरूहता को कम करने में ग्राफ विशेष रूप से सहायक होते है। ध्वनि की गति, कम्पन, स्वरों का पारस्परिक अन्तराल इतिहास कारों द्वारा वर्णित श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना का ग्राफ के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

श्रव्यात्मक सामग्री के अन्तर्गत उन उपकरणों की गणना की जाती है। जो ध्वनि उत्पादन में सहायक होते है। इन उपकरणों की सहायता से संगीत शिक्षक किसी भी सिद्ध कलाकार की गायन शैली व वादन शैली को सुनाकर संगीत विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि कर सकता है। श्रव्यात्मक सामग्री के अन्तर्गत रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन, मेट्रोनेम आदि की गणना की जाती है।

1. रेडियो :–

रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में संगीत शिक्षण के कार्यक्रमों का प्रसारण उच्च कोटि के संगीतज्ञों का गायन या वादन, शास्त्र चर्चा आदि संगीत विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। कक्षा में दी गई शिक्षा के अतिरिक्त केवल पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से जो विचारणीय केन्द्र स्पष्ट नहीं हो पाते वह नए कार्यक्रमों के माध्यम से संक्षिप्त रूप में विद्यार्थी के समक्ष आ जाते है, जिन्हे पढ़कर नहीं वरन् सुनकर मानसिक रूप से ग्रहण कर लेता है।

2. टेपरिकार्डर :

टेपरिकार्डर के द्वारा संगीत विद्यार्थियों को एक ही राग को बार–बार सुनाया जा सकता है। इससे उन्हे अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा।

3. ग्रामोफोन :

ग्रामोफोन का आविष्कार टेपरिकार्डर से बहुत पहले हो चुका था। टेपरिकार्डर के आविष्कारक के पश्चात् ग्रमोफोन का अब कोई विशेष महत्व नहीं रह गया है। यह उपकरण भी संगीत शिक्षण के लिए बड़ा ही लाभदायक है। एक ही रिकार्ड को बार–बार बजाकर किसी भी कलाकार के गायन–वादन को सुना जा सकता है।[1]

---

1. डॉ0 पुष्पेन्द शर्मा 'संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षण प्रणाली' पृष्ठ संख्या 90

विभिन्न गायकों तथा वादकों की गायन तथा वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए ग्रामोफोन का प्रयोग किया जा सकता है। इन महाविद्यालयों तथा विशविद्यालयों में विभिन्न कलाकारों के रिकार्डो की लायब्रेरी होनी चाहिए तथा समय–समय पर विद्यार्थियों को भिन्न–भिन्न कलाकारों के रिकार्ड सुनवाए जाने चाहिए ताकि उनके क्रियात्मक पक्ष को विकसित किया जा सके।

मैट्रोनेम :

मैट्रोनेम के आविष्कारक का श्रेय एमस्ट्रेड के वैज्ञानिक विकल को जाता है। यह एक निश्चित गति से टिक–टिक की ध्वनि करता हुआ चलता है, जिसकी गति को इच्छानुसार घटाया–बढ़ाया जा सकता है। इसका प्रयोग लय को पक्की करने में किया जाता हैं। विद्यार्थियों के प्रयोग गायन–वादन तथा नृत्य तीनों के लिए ही किया जाता है। शिक्षण संस्थाओं में सम्यक् जानकारी दी जानी चाहिए। ताकि विद्यार्थी अभ्यास करते समय इसकी पूरी–पूरी सहायता ले सके।[1]

उपरोक्त सभी बिन्दुओं के आधार पर ये कहा जा सकता है कि संगीत शि़क्षक वह शिक्षक होता है जो विद्यालय, महाविद्यालय, व विश्वविद्यालय में संगीत विषय की शिक्षा प्रदान करता है। इन संगीत शिक्षकों को हमारे समाज में सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में शिक्षक को साक्षात् ब्रह्म के समान बताया गया है। परन्तु एक उच्च कोटी के संगीत शिक्षकों में कुछ नैतिक गुणों का होना आवश्यक है संगीत शिक्षक को संगीत शिक्षण विधियों का ज्ञान होना भी आवश्यक है। एक अच्छे संगीत शिक्षक की विशेषता है कि वह संगीत शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षण में संगीत की श्रव्य तथा दृश्य दोनों ही प्रकार की शिक्षण सामग्री का प्रयोग कर संगीत की शिक्षा प्रदान करना चाहिए। संगीत शिक्षक को संगीत का एक निश्चित पाठ्यक्रम भी बना लेना चाहिए क्योंकि इससे संगीत शिक्षण में क्रमबद्वता बनी रहती हैं। ये पाठ्यक्रम संगीत विद्यार्थियों के अनूरूप ही होना चाहिए। उपरोक्त सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षण कार्य किया जाये तो शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

---

1. डॉ0 पुष्पेन्द शर्मा 'संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षण प्रणाली' पृष्ठ संख्या 91

çkjfEHkd&ijh{kk ¼ikB~;Øe½

vf[ky Hkkjrh; xk/koZ egkfo|ky; eaMy] eqacbZ

<u>çkjfEHkd xk;u</u>

fØ;kRed

¼v½ LojKku %

शुध्द स्वर अलग–अलग तथा सरल समुदाय में गाना/बजाना तथा पहचानना। निम्नलिखित स्वर अलंकारों से प्रारम्भिक परिचय।

(1) सा रे ग म प ध नी सां – सां नी ध प म ग रे सा
(2) सा,सारेसा,सारेगरेसा...............सां,सांनीसां,सांनीधनीसां
(3) सारेग,रेगम..........सांनिध,नीधप
(4) सारेगम,रेगमप..........सांनिधप,नीधपम
(5) सारेसारेग,रेगरेगम..........सांनीसांनीध,नीधनीधप
(6) साग,रेम,गप.......सांध,नीप,धम

(आ) रागज्ञान –

निम्नलिखित रागों में एक–एक बंदिश/गत स्वरतालाबध्द गाना/बजाना तथा हर राग में एक–एक सरगमगीत तथा लक्षणगीत तैयार करना है।
निम्नलिखित रागोंकें आरोह–अवरोह गाना/बजाना आरोह–अवरोह से राग पहचानना।

अध्ययन के लिए राग–भैरव, अहिल्या बिलावल, काफी, भूप, यमन (कल्याण), भैरवी शास्त्र।

(1) पाठ्यक्रम के रागों का वर्णन, स्वर, आरोह–अवरोह, समय, वादी–संवादी ताल की प्राथमिक जानकारी। कहरवा और दादरा तालों को हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास (गीत/गत के लिए–तीनताल, एकताल)

- संगीत कला विहार अगस्त 2012, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई पृष्ठ संख्या 6

Lok/khurk ls iwoZ LFkkfir laxhr f'k{k.k laLFkku

¼ cuLFkyh fo|kihB ½

राजस्थान के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में स्थापित महाविद्यालयों में स्वतंत्रता से पूर्व स्थापित एक भी महाविद्यालय नहीं है। सिर्फ ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में बनस्थली विद्यापीठ (डिम्ड विश्वविद्यालय) ही एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना स्वतंत्रता से पूर्व की गई है। जहाँ शिशु कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक शिक्षण एवं शोध कार्य हो रहा है। यह विश्वविद्यालय भारत सरकार द्वारा महिला शिक्षा का प्रतिष्ठित संस्थान घोषित किया गया है।

यह विश्वविद्यालय एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज तथा एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज का सदस्य है।[1]

बनस्थली विद्यापीठ की स्थापना राजस्थान राज्य के भूतपूर्व मन्त्री पंडित हीरालाल शास्त्री द्वारा 6 अक्टूबर 1935 को श्री शान्ता बाई शिक्षा–कुटीर की नाम से स्थापित किया गया, जो बाद में बनस्थली विद्यापीठ के नाम से विकसित हुआ। बनस्थली महिला शिक्षा पंचमुखी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। इस विश्वविद्यालय में महिलाओं को शारीरिक, व्यावहारिक, कला, विषयक, नैतिक शिक्षा तथा बौधिक शिक्षा से अवगत करवाया जाता है। यह विश्वविद्यालय स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद **(NAAC)** द्वारा । ग्रेड प्राप्त डीम्ड विश्वविद्यालय है।[2]

1- Net wikipedia www.banasthaliveedhyapeeth.org.

2. ....वही से

विद्यापीठ में छात्राओं के अध्ययन हेतु विशालकाय पुस्तकालय की स्थापना की गयी है एवं बनस्थली विद्यापीठ को 25 अक्टुबर 1983 को डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है।[1] यह शिक्षण संस्थान स्थापना से लेकर वर्तमान तक अपने कदम विकास की ओर निरन्तर बढ़ा रहा है। बनस्थली विद्यापीठ में संगीत विषय के अध्यापन हेतु अलग से संगीत एवं नृत्य प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की की गई है।

बनस्थली विद्यापीठ संगीत विभाग की स्थापना सन् 1943 में हुई यह विभाग राजस्थान के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संचालित विश्वविद्यालयों के संगीत विभागों में सब से पुराना संगीत विभाग है।[2] सौभाग्य की बात यह है की इस संगीत विभाग में देश के प्रतिष्ठित कलाकार व संगीत विद्वान राजा भैया पूँछ वाले, पंडित विनायक राव पटवर्धन, पंडित नारायण व्यास, पी.एन. चिचोरे एवं प्रो.बी.आर. देवधर जैसे कलाकार इस संगीत विभाग को अपनी संवाएँ प्रदान कर चुके है तथा विश्वविद्यालय संगीत विभाग के प्रथम संगीत विभागाध्यक्ष प्रो.बी.देवधर रहे है। सर्वप्रथम एम.ए. संगीत गायन एवं सितार की कक्षाएँ इसी विभाग द्वारा प्रारम्भ की गई एवं विद्यापीठ द्वारा गायन, वादन व नृत्य की शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया गया। विद्यापीठ में संगीत के विभिन्न डिप्लोमा कोर्स व डिग्री पाठ्यक्रम उपलब्ध है। संगीत डिग्री पाठ्यक्रमों में स्नातक व अधिस्नातक, एम. फिल. तथा पीएच.डी. के पाठ्यक्रम संचालित है एवं विभाग में कंठ संगीत तथा वादन (सितार, वायलिन,) के पाठ्यक्रम संचालित है।

विद्यापीठ द्वारा संगीत में तीन असिसटेन्ट प्रोफेसर (सितार), दो पद ऐसोसिएट प्रोफेसर (गायन), एक पद ऐसोसिएट प्रोफेसर नृत्य, चार पद, प्रोफेसर (गायन), तीन पद रीसर्च ऐसोसिएट प्रोफसर, नौं पद तबला वादक, दो पद हारमोनियम वादक, दो पद पुंग वादक तथा तीन पद प्रशिक्षक के है। वर्तमान में इन सभी पदों पर शिक्षक अपनी सेवाएँ दे रहे है। यह संगीत विभाग हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र का सबसे बड़ा संगीत विभाग है। वर्तमान में इस विभाग को सुर मन्दिर के नाम से जाना जाता है। संगीत विभाग की सभी परीक्षाएँ बनस्थली विद्यापीठ द्वारा प्रति वर्ष आयोजित की जाती है। इस विश्वविद्यालय में संगीत छात्राओं के लिए आकाशवाणी केन्द्र की सुविधा उपलब्ध है।

miyfC/k;k

बनस्थली विद्यापीठ ने संगीत जगत को कई अनगिनत कलाकार दिए है जो शिक्षक व कलाकारों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है। इस विभाग द्वारा शिक्षा प्राप्त कलाकारों में डॉ. आरती भट्ट तेलंग, डॉ. अभिलाषा दाधिच तथा श्रीमती निर्मला तोंमर जैसे कई कलाकार इस विभाग ने संगीत जगत को दिए है।

fo'k"krk,a

1. विश्वविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है। संगीत की सभी छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान की जाती है।
2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।
4. संगीत की छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्वान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।
5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।
6. संगीत विभाग में शोध कार्य करने की उचित व्यवस्था है।
7. विश्वविद्यालय संगीत विभाग में छात्र तथा छात्राओं के लिए शोधकार्य करने की सुविधा उपलब्ध है।

---

1. संगीत विभाग बनस्थली विद्यापीठ द्वारा प्रदत्त जानकारी।

Lok/khurk d: ckn LFkkfir l:xhr f'k{k.k l:LFkku

राजस्थान के हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा कई विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई एवं इन सभी शिक्षण संस्थानों में संगीत विषय को एक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाने लगा। वर्तमान हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में राजकीय संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयो, तथा विश्वविद्यालय संगीत विभागों में संगीत विषय को गायन, वादन व नृत्य तीनों ही पाठ्यक्रमों के रूप में संचालित किया जा रहा है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित दौसा तथा टोंक, हाड़ौती क्षेत्र स्थित बारां व झालावाड़ आदि जिलों में महाविद्यालय स्तर पर संगीत विषय का संचालन नहीं किया जा रहा है। जिन–जिन शिक्षण संस्थानों में संगीत विषय का संचालन किया जा रहा है। उन सभी शिक्षण संस्थाओं का परिचय अग्रांकित दिया गया है।

fo'ofo|ky; Lrj d: f'k{k.k l:LFkku

राजस्थान के हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता के पश्चात् स्थापित विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षण संस्थानों में केवल राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ही एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ संगीत विभाग का संचालन किया जा रहा है।हाड़ौती क्षेत्र में स्वतंत्रता के बाद स्थापित विश्वविद्यालयों में कोटा विश्वविद्यालय तथा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की गणना की जा सकती है। परन्तु इन दोनों ही विश्वविद्यालयों में संगीत विभागों का संचालन नहीं किया जा रहा है । राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग का अंग्राकित परिचय करवाया गया है।

lxhr foHkkx] jkt LFkku fo'ofo|ky;] t;iqj

¼,d ifjp;½

राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। यह उच्च स्तर की शिक्षा और शोध कार्य में संल्गन भारत के अग्रणी शिक्षण संस्थानों में से एक है। इसकी स्थापना 8 जनवरी 1947 राजपूताना विश्वविद्यालय के नाम से हुई तथा 1956 में इसे वर्तमान नाम दिया गया। आज यह राजस्थान में शिक्षा का सबसें बड़ा केन्द्र माना जाता है एवं इसका परिसर बापू नगर जयपुर में स्थित है। यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद द्वारा (NAAC) ए–ग्रेड प्राप्त विश्वविद्यालय है।[1] इस विश्वविद्यालय परिसर में संगीत विभाग की स्थापना 1973 में की गयी। यह संगीत विभाग अत्यन्त विशाल भवन में संचालित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय संगीत विभाग में गायन, वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन स्नातकोत्तर स्तर तक किया जा रहा है।

संगीत विभाग में B.MUS. गायन तथा वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन सत्र 1987, एम.ए. गायन 1965, एम.ए. सितार 1973, M. MUS. गायन तथा वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन 1991 से प्रारम्भ किया गया है। संगीत विभाग में संगीत शिक्षार्थियों हेतु शोध कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है। विश्वविद्यालय संगीत विभाग के इस पावन मन्दिर में सर्वश्रेष्ठ गुणीजनों द्वारा संगीत शिक्षा प्रदान की जाती है। संगीत विभाग में संचालित सभी पाठ्यक्रमों की परीक्षाएँ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित की जाती है।

1- **Net wikipedi University of Rajasthan**

विश्वविद्यालय संगीत विभाग में राज्य सरकार द्वारा बारह असिस्टेन्ट प्रोफेसर, दो पद रिडर तथा एक पद प्रोफेसर का स्वीकृत किया गया है। इनके अतिरिक्त संगीत विभाग में गायन के नौ तथा वादन के चार असिस्टेन्ट प्रोफेसर वर्तमान में कार्यरत है।

संगीत विभाग में राज्य सरकार द्वारा तबला वादकों के छः पद स्वीकृत किए गए हैं जिनमें से तीन तबला वादक वर्तमान में कार्यरत है। यह संगीत विभाग सह शिक्षा पर आधारित है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. यह संगीत विभाग सहशिक्षा पर आधारित है।

6. संगीत विभाग में शोध कार्य करने की उचित व्यवस्था है।

miyfC/k;k

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के इस प्रसिद्व सुरों के मन्दिर ने संगीत जगत को कई राष्ट्रीय स्तर के कलाकार दिए है।

यहाँ से कई संगीत विद्यार्थियों ने शोध उपाधि प्राप्त कर राजस्थान के कई सरकारी व गैरसरकारी महाविद्यालियों में संगीत प्राध्यापकों तथा संगीत शिक्षकों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है तथा संगीत विभाग से शिक्षा प्राप्त कर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर संगीत विभाग का नाम रोशन कर रहे है।

इस विभाग से शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रमुख कलाकारों में प्रो. सुमन यादव, डॉ मधुभट्ट तैलंग, डॉ. रोशन भारती, डॉ. राजेन्द्र माहेश्वरी, डॉ. विजेन्द्र गौतम, डॉ. मिथलेश, डॉ. अंजलिका शर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

egkfo|ky; Lrj ds f'k{k.k lLFkku

राजस्थान के हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित राजकीय महाविद्यालय स्तर के शिक्षण संस्थानों में राजकीय महाविद्यालय बून्दी, राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा, राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर तथा विश्वविद्यालय महारानी कॉलेज जयपुर की गणना की जाती है।

इन सभी शिक्षण संस्थानों में स्नातक, अधिस्नातक स्तर तक अध्ययन करवाया जाता है। इन सभी शिक्षण संस्थानों का परिचय अंग्राकित दिया गया है।

- laxhr foHkkx jktLFkku fo'ofo|ky; t;iqj }kjk iznÙk tkudkjh

fo'ofo|ky; egkjkuh egkfo|ky;] t;iqj

विश्वविद्यालय महारानी महाविद्यालय की स्थापना सन् 1944 में की गयी थी जिसका प्रमुख उद्वेश्य देश की उच्च शिक्षा हेतु इच्छित छात्राओं को सुविधाएँ प्रदान करना रहा है। इस महाविद्यालय के अन्तर्गत आटर्स, कॉमर्स व साइंस फैकल्टी के पाठ्यक्रम उपलब्ध है तथा इस महाविद्यालय में अन्य विदेशी भाषाओं की जानकारी भी प्रदान की जाती है। महाविद्यालय में संगीत विषय का अध्यापन बी.ए. तथा एम.ए. स्तर पर किया जाता था लेकिन विश्वविद्यालय संगीत विभाग की स्थापना के बाद स्नातकोत्तर (संगीत) की कक्षाएँ विश्वविद्यालय संगीत विभाग (परिसर) में ही संचालित की जा रही है। यह महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है। इस महाविद्यालय में शिक्षण कार्य विश्वविद्यालय संगीत विभाग के प्राध्यापकों द्वारा ही करवाया जाता है एवं महाविद्यालय में गायन, वादन (सितार) की कक्षाएँ बी.ए. स्तर तक संचालित है। यह महाविद्यालय सम्पूर्ण शिक्षा का केन्द्र रहा है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा भी प्रदान करता है।

2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

उपलब्धियाँ

इस महाविद्यालय से उत्तीर्ण छात्राएँ संगीत विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने हेतु अन्यत्र महाविद्यालयों में अध्ययनरत हैं।

- विश्वविद्यालय महारानी कॉलेज संगीत विभाग की समस्त जानकारियाँ संगीत विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा दी गई है।

jkt LFkku lxhr lLFkku t;iqj

egkfo|ky; ,d ifjp;

राजस्थान की राजधानी जयपुर गुलाबी नगरी में यह राजस्थान संगीत संस्थान राज्य का एक मात्र व देश के ख्याति प्राप्त संस्थानों में से एक संगीत महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत की बुनियादी नींव को सद्वढ़

कर संगीत के परिपक्व शिक्षक तैयार करना रहा है। 1950 में संगीत विषय का समावेश कर इस महाविद्यालय को राजस्थान संगीत संस्थान के नाम से पुकारा जाने लगा। 1966 में वर्तमान राजस्थान संगीत संस्थान में विशुद्व संगीत विषय का समावेश प्रारम्भ हुआ एवम् इस महाविद्यालय ने सत्र 1978–79 तक की सभी परीक्षाएँ प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नियन्त्रण में पूर्ण की है। इस महाविद्यालय को सत्र 1979–80 में देखना है। निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर द्वारा निपुण कक्षाओं को प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रदान की गई एवं महाविद्यालय में सत्र 1988–89 से राजस्थान विश्वविद्यालय की बी.म्यूज गायन, वादन (सितार) तथा सत्र 2013 से एम.म्यूज गायन की कक्षाएँ प्रारम्भ की गई। इस महाविद्यालय में मध्यमा प्रथम से लेकर निपुण तक पाठ्यक्रम की अवधि आठ वर्ष रखी गई है। वर्तमान में यह महाविद्यालय अपने निजी भवन में शिक्षा संकुल परिसर जयपुर में संचालित है। इस महाविद्यालय की उपाधियाँ राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा समकक्षता एवं मान्यता प्राप्त है। बी.ए. डिग्री के साथ संगीत विशारद योग्यता प्राप्त छात्र–छात्राएँ एम.ए. संगीत में प्रवेश योग्य है तथा बी.ए. डिग्री के साथ संगीत निपुण योग्यता प्राप्त छात्र–छात्राएँ एम.ए. संगीत के समकक्ष माना गया है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष परीक्षाओं का आयोजन निदेशालय कॉलेज शिक्षा विभाग राजस्थान जयपुर व राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है।

राजस्थान संगीत संस्थान वर्तमान में संगीत का एक मात्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय है जिसमें गायन, वादन व नृत्य तीनों कक्षाओं की शिक्षा योग्य गुरूजनों द्वारा प्रदान की

जाती है। इस महाविद्यालय में राज्य सरकार द्वारा कंठ संगीत के चार, वादन (सितार) के तीन, तबले के तीन, वायलिन का एक व कथक नृत्य के दो गुरूजन कार्यरत है। महाविद्यालय में स्वीकृत तबला वादकों की संख्या आठ है, परन्तु वर्तमान में महाविद्यालय में छः तबला वादक ही कार्यरत है। इस महाविद्यालय में गायन, वादन (सितार, वायलिन, तबला) तथा नृत्य (कथक) की कक्षाओं का संचालन मध्यमा प्रथमा से लेकर निपुण स्तर तक किया जाता है। महाविद्यालय संगीत विभाग में शोध कार्य की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

fo'k"krk,¡

1- egkfo|ky; laxhr foHkkx }kjk laxhr fo"k; esa izos'k ls iwoZ laxhr fo|kfFk;ksa dk lkaxhfrd ijh{k.k fd;k] tkrk gSA
2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।
4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।
5. यह संगीत विभाग सहशिक्षा पर आधारित है।

miyfC/k;k¡

संगीत के इस महाविद्यालय से कई छात्र–छात्राएँ सरकारी व गैरसरकारी महाविद्यालयों में संगीत अध्यापक व प्राध्यापकों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है। महाविद्यालय से उत्तीर्ण कई छात्र–छात्राएँ राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दे चुके है। इस महाविद्यालय ने कई संगीत कलाकार दिए है जिनमें , डॉ. संगीत गोकटे, अकरम साबरी साहब, श्री घनश्याम सिंह जादौन, श्रीमती कमलेश कुमारी का नाम प्रमुख ख्याल गायक, गायिकाओं में लिया जा सकता है।

- jktLFkku laxhr laLFkku t;iqj }kjk iznÙk tkudkjh ds vk/kkj ijA

jktdh; Tkkudh nsoh ctkt dU;k Lukrdksùkj egkfo|ky;

u;kiqjk] dksVk ¼jkt-½

प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत–प्रोत हरियाली की चादर ओढ़े जानकी देवी बजाज राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र का अग्रणी महाविद्यालय रहा है। इस महाविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य छात्राओं को गुणात्मक शिक्षा एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु वातावरण उपलब्ध करवाना है। इस महाविद्यालय ने 1958 में स्नातक एवं 1992 में स्नातकोत्तर स्तर का महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त किया है। इस महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय प्रत्यापन एवं मूल्यांकन परिषद (NAAC) द्वारा A^+ ग्रेड प्रदान की गई है। महाविद्यालय तीव्र

गति से गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से मॉडल कॉलेज के मापदण्डों को प्राप्त करने की दिशा में निरन्तर प्रयासरत है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय को स्नातक स्तर पर सन् 1958–59 एवं स्नातकोत्तर स्तर पर सन् 1995–96 से गायन, वादन (सितार) के रूप में प्रारम्भ किया गया। यह महाविद्यालय ज्ञान के अतिरिक्त अध्ययन–अध्यापन लेखन एवं रचना धर्मिता के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों एवं समर्पित प्राध्यापकों के कुशल मार्गदर्शन के कारण सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र में लोकप्रिय रहा है। यह महाविद्यालय अपने निजी भवन में संचालित है। जानकी देवी बजाज राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटा, संगीत विभाग में राज्य सरकार द्वारा संगीत विषय के प्राध्यापकों के पाँच पद स्वीकृत किए गये है। इन पदों में से चार पद कंठ संगीत के तथा एक पद सितार प्राध्यापक का है। वर्तमान में इस महाविद्यालय संगीत विभाग में गायन विषय के तीन व एक सितार विषय की प्राध्यापिका कार्यरत है।

महाविद्यालय संगीत विभाग में दो तबला वादक नियुक्त है। महाविद्यालय द्वारा संगीत विभाग के संचालन हेतु उचित कक्षा–कक्षों व प्रयोग शालाओं की व्यवस्था की गई है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।
2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्ययन्त्रों की व्यवस्था की गई है।
4. संगीत की छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।
5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।
6. संगीत विभाग में शोध कार्य करने की उचित व्यवस्था है।

miyfC/k;k¡

इस महाविद्यालय से अधिस्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी कई संगीत छात्राएँ देश के ख्याती प्राप्त विद्यालयों जैसे नवोदय विद्यालयों, केन्द्रिय विद्यालयों में संगीत अध्यापक, अध्यापिका के रूप में कार्यरत है। इस महाविद्यालय ने प्रसिद्व ख्याल गायिका श्रीमती संगीता सक्सैना, स्व. डॉ. चन्द्रकला सक्सैना, सुश्री निर्देश गौतम, सुश्री नरेन्द्र बाला सोनी जैसे कलाकार दिए है। जिन्होने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की मंचीय प्रस्तुतियाँ देकर हाड़ौती क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

- संगीत विभाग राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय कोटा द्वारा प्रदत्त जानकारी।

jktdh; LukRkdkÙkj egkfo|ky; cUnh ¼jkt0½

अपने साहित्यिक व सांस्कृतिक वैभव के लिए राज्य के हाड़ौती क्षेत्र में स्थित छोटी काशी के नाम से विख्यात बून्दी नगर की शैक्षणिक आवश्यकताओं को देखते हुए यह महाविद्यालय हाड़ेन्द्र कॉलेज के नाम से अस्तित्व में आया। सन् 1959 में महाविद्यालय स्नातक स्तर तक शिक्षा प्रदान करने की मान्यता प्राप्त हुई एवं सन् 1964 में महाविद्यालय वर्तमान भवन में उपस्थित हुआ।[1] सन् 1975 में नोन रेजिडेन्ट स्टॅडेन्ट सेन्टर का निमार्ण हुआ एंव सन् 1977 में महाविद्यालय को स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में क्रमोन्नत हुआ। सन् 1995 में महाविद्यालय में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय का अध्ययन केन्द्र स्थापित हुआ एवं सन् 2004 में महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद द्वारा (NAAC) द्वारा B+ग्रेड प्रदान किया गया तथा सन् 2007 में इस महाविद्यालय को राजस्थान सरकार द्वारा मॉडल कॉलेज घोषित किया गया।

राजस्थान सरकार द्वारा उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाने एवं राजस्थान की उच्च शिक्षा में अग्रणी राज्य बनाने के उद्देश्य से इस महाविद्यालय को श्रेष्ठता के केन्द्र (सेन्टर फॉर ऐक्सीलेन्ट) के रूप में विकसित किया जा रहा है।[2] यह महाविद्यालय अपने निजी भवन में संचालित है।

---

1. विवरणिका 2012–13 राजकीय महाविद्यालय बून्दी पृष्ठ संख्या 1
2- .....वही पृष्ठ

lxhr foHkkx

इस महाविद्यालय में संगीत अध्यापन हेतु संगीत विभाग की स्थापना की गयी है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय प्राध्यापकों के राज्य सरकार द्वारा पाँच पद स्वीकृत किए गए है। वर्तमान में इस महाविद्यालय संगीत विभाग में संगीत के तीन प्राध्यापक व एक तबला वादक कार्यरत है। महाविद्यालय में दो पद प्राध्यापको के रिक्त है। पूर्व में दो तबला वादक थे परन्तु वर्तमान में एक ही तबला वादक कार्यरत है। महाविद्यालय में बी.ए. स्तर पर संगीत विषय का प्रारम्भ सन् 1976–77 तथा एम.ए. स्तर पर 1990–91 से किया गया है। महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का अध्ययन ही करवाया जाता एवं वर्ष के अन्त में कोटा विश्वविद्यालय कोटा द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।
2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।
4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।
5. यह महाविद्यालय संगीत विभाग सहशिक्षा पर आधारित है।

miyfC/k;k

इस महाविद्यालय संगीत विभाग ने संगीत जगत को कई प्रसिद्ध कलाकार दिए है। जो राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपने संगीत का जादू बिखेरा है। हाड़ौती क्षेत्र के प्रमुख गज़ल गायक व प्राध्यापक डॉ. रोशन भारती व पार्श्वगायिका रेखा राव, श्री प्रमोद व्यास, शैल हाड़ा आदि कलाकार इसी महाविद्यालय की देन है। यहाँ से कई छात्र–छात्राएँ अधिस्नातक की डिग्री प्राप्त कर जवाहर नवोदय विद्यालयों, केन्द्रियों विद्यालयों में संगीत शिक्षकों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

- संगीत विभाग राजकीय महाविद्यालय, बून्दी द्वारा प्रदत्त जानकारी।

futh ,oa v'kkldh; f'k{k.k lLFkku

राजस्थान के हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता के पश्चात् कई निजी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में संगीत की गायन तथा वादन की कक्षाओं का संचालन किया जाने लगा है। वर्तमान में इन महाविद्यालयों में स्नातक तथा अधिस्नातक स्तर पर संगीत विषय का अध्ययन कराया जा रहा है। जिन–जिन शिक्षण संस्थाओं में संगीत विषय का अध्ययन करवाया जा रहा है। उन सभी शिक्षण संस्थाओं का परिचय अंग्राकिंत दिया गया है।

ohj ckfydk ih-th- egkfo|ky;] t;iqj

राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित यह महाविद्यालय सन् 1925 में स्थापित किया गया है। इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षण में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। महाविद्यालय में बालिकाओं के संर्वागीण विकास हेतु विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय में बी.ए. स्तर पर संगीत विषय को सन् 1996–97 से शुरू किया गया है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय की एक प्राध्यापिका व एक तबला वादक कार्यरत है। यहाँ से संगीत स्नातक कर चुकी कई छात्राएँ एम.ए. संगीत में अध्ययनरत है एवं कई छात्राएँ निजी संस्थानों में संगीत शिक्षिकाओं के रूप में कार्यरत है। वर्तमान में यह महाविद्यालय अपने निजी भवन में पुरानी कोतवाली के पास जौहरी बाजार, जयपुर में संचालित है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत की छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

miyfC/k;k¡

महाविद्यालय से उर्त्तीण छात्राओं में से भूमिका अग्रवाल, कंचन गुप्ता, कोमल शर्मा (गायन) में प्रतिष्ठित कलाकार बन संगीत का प्रचार–प्रसार कर रही है।

- संगीत विभाग वीर बालिका पी.जी. महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

Jh Hkokuh fudsru ih- th- efgyk egkfo|ky;

सीकर रोड़ विद्यानगर, जयपुर (राज.)

यह महाविद्यालय राजस्थान की गुलाबी नगरी विद्यानगर जयपुर में स्थित है। इस महाविद्यालय की स्थापना बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के उद्धेश्य से सन् 1990 में प्रारम्भ किया गया है। यह महाविद्यालय भव्य व विशाल भवन में संचालित है एवं यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महाविद्यालय में उचित प्रयोगशालाओं की व्यावस्था की गई है। महाविद्यालय में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त खेलकूद, संगीत व नृत्य जैसी प्रतियोगिताएँ भी आयाजित की जाती है। महाविद्यालय का मुख्य उद्वेश्य बालिकाओं को गुणात्मक शिक्षा व उनका सर्वागीण विकास करना रहा है। महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत संस्थान द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद (एन.ए.ए.सी.) द्वारा ग्रेड प्रदान की गई है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त है। महाविद्यालय में संगीत विषय का संचालन बी.ए. स्तर पर वर्ष 1994–95 से किया गया है एवं महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का ही अध्ययन करवाया जाता है। महाविद्यालय में संगीत विषय का एक प्राध्यापक नियुक्त है तथा आवश्यकतानुसार तबला वादक की सेवाएँ ली जाती है।

महाविद्यालय में वर्ष के अन्त में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत की छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

miyfC/k;k¡

इस महाविद्यालय से संगीत स्नातक उत्तीर्ण कई छात्राएँ एम.ए. संगीत में अध्ययनरत है एवं कई निजी विद्यालयों में संगीत शिक्षिकाओं के रूप में कार्यरत है।

- संगीत विभाग श्री भवानी निकेतन महिला पी.जी. महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

ifj”dkj Xykscy ,DlhysUl egkfo|ky;

ekuljksoj] t;iqj ¼jkt-½

यह महाविद्यालय राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर शिप्रापथ मानसरोवर

जयपुर में स्थित है। यह शिक्षण संस्थान उच्च शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है

तथा यह महाविद्यालय सन् 2006 में अस्तित्व में आया है। महाविद्यालय में संगीत विषय का संचालन बी.ए. स्तर पर सत्र 2012 से किया जा रहा है एवं महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का ही अध्ययन करवाया जाता है।

यह महाविद्यालय अपने भव्य व विशाल भवन में संचालित है। महाविद्यालय में संगीत विषय के दो प्राध्यापक कार्यरत है एवं आवश्यकतानुसार तबला वादकों की सेवाएँ ली जाती है।

यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त व राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।
5. यह संगीत विभाग सहशिक्षा पर आधारित है।

miyfC/k;k¡

महाविद्यालय संगीत विषय को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है।

- संगीत विभाग परिष्कार ग्लोबल एक्सीलेन्सी महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

lsUV foYÝM ih-th- egkfo|ky;

मीरा मार्ग मानसरोवर, जयपुर (राज.)

यह महाविद्यालय सहशिक्षा पर आधारित महाविद्यालय है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता की दृष्टि से यह महाविद्यालय अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 2001 में की गई है। यह महाविद्यालय भव्य व विशाल भवन में मीरा मार्ग

मानसरोवर जयपुर में संचालित है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त व राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय में बी.ए. स्तर पर कंठ संगीत विषय का संचालन सत्र 2014 से प्रारम्भ किया गया है। महाविद्यालय में संगीत विषय का एक ही प्राध्यापक नियुक्त है एवं समय–समय पर तबला वादक की सेवाएँ ली जाती है। महाविद्यालय में परीक्षाओं का आयोजन प्रतिवर्ष राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया जाता है।

miyfC/k;k

महाविद्यालय संगीत विषय को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है।

fo'ks"krk,¡

महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है। संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है। संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

- संगीत विभाग सेन्ट विल्फ्रेड पी.जी. महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

Jh lR;lkbZ ih-th- egkfo|ky;

Tkokgj uxj t;iqj ¼jkt-½

राजस्थान की गुलाबी नगरी जवाहर नगर जयपुर में स्थित यह महाविद्यालय अपने भव्य व विशाल भवन में सन् 1974 से संचालित है। जयपुर शहर की विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों में इस महाविद्यालय की विशिष्ट पहचान है। छात्राओं के सर्वांगींण विकास हेतु महाविद्यालय में विभिन्न शैक्षणिक

गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। जिसमें खेलकूद, साहित्य मंच, संगीत नृत्य प्रमुख है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्वता प्राप्त है। महाविद्यालय में संगीत विषय का संचालन बी.ए. स्तर पर सत्र 1974 व एम.ए. स्तर पर सत्र 2000 से प्रारम्भ किया गया है। महाविद्यालय में पूर्व में गायन व वादन (सितार) की कक्षाएँ होती है।

परन्तु वर्तमान में इस महाविद्यालय में केवल स्नातकोत्तर (कंठ संगीत) विषय का ही अध्ययन करवाया जाता है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय की एक प्राध्यापिका व एक तबला वादक कार्यरत है।

महाविद्यालय में वर्ष के अन्त में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। यह महाविद्यालय अपने निजी भवन में संचालित है।

यह महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय मूल्याकंन एवं सत्यापन परिषद द्वारा (NAAC) B ग्रेड प्राप्त महाविद्यालय है।

miyfC/k;k

1. इस महाविद्यालय से स्नातक व स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त कर चुकी छात्राओं में से कई छात्राएँ राजकीय व गैर सरकारी शासकीय शिक्षण संस्थाओं में संगीत शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही है।

2. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

3. संगीत छात्राओं का उचित मार्ग दर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

4. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

5. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

6. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

- संगीत विभाग श्री सत्य साईं महिला पी.जी. महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

Ekkgs'ojh dkyst vkWQ dkelZ vkVZl

çrki uxj t;iqj ¼jkt-½

यह महाविद्यालय प्रताप नगर टोंक रोड़ पर स्थित है। इस महाविद्यालय की स्थापना महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्वेश्य से सन् 2005 में की गई है। यह महाविद्यालय अपने भव्य और विशाल भवन में संचालित किया जा रहा है । इस

महाविद्यालय में बी. ए. स्तर पर संगीत विषय का संचालन सत्र 2014–15 से प्रारम्भ किया गया है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय की एक प्राध्यापिका व एक तबला वादक नियुक्त है एवं महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का ही अध्ययन करवाया जा रहा है।

यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त व राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है।

महाविद्यालय में वर्ष के अन्त में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय में संगीत विषय का प्रथम बैच ही अध्ययनरत है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता हैं।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

miyfC/k;k¡

महाविद्यालय संगीत विषय को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है।

- संगीत विभाग माहेश्वरी कॉलेज ऑफ कार्मस आर्टस द्वारा प्रदत्त जानकारी।

dukfM+;k ih-th- efgyk egkfo|ky;

xka/kh lfdZy] t;iqj ¼jkt-½

यह महाविद्यालय महिला शिक्षा का उच्चतम शिक्षण केन्द्र रहा हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य से सुशोभित यह महाविद्यालय भव्य व विशाल भवन में संचालित है। महिला

शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्वेश्य से यह महाविद्यालय सन् 1965 में प्रारम्भ किया गया। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय में संगीत विषय का संचालन सन् 1965 से ही किया जा रहा है एवं महाविद्यालय में संगीत विषय की एक प्राध्यापिका व एक तबला वादक वर्तमान में कार्यरत है। यह महाविद्यालय महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए निरनतर प्रयासरत है। महाविद्यालय में परीक्षाओं का आयोजन वर्ष के अन्त में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है।

fo'ks"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

2. संगीत की छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत शिक्षकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5. महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

miyfC/k;k

महाविद्यालय में अध्ययन कर चुकी कई छात्राएँ निजी विद्यालयों में संगीत शिक्षिकाओं के रूप में कार्यरत है।

- संगीत विभाग कनोड़िया महिला पी.जी. महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

LVuh eekfj;y ih-th- dkyst

FkMh ekdsV Vxkj ekxZ ekujkoj] t;iqj ¼jkt-½

यह महाविद्यालय सहशिक्षा पर आधारित महाविद्यालय है एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1998 में की गई है। यह महाविद्यालय अपने भव्य व विशाल भवन में संचालित है। महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय में संगीत गायन, वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। महाविद्यालय में बी.ए. संगीत की कक्षाओं का संचालन 2013 तथा बी. पी.ए. (बी.म्यूज.) गायन, वादन (सितार) की कक्षाओं का संचालन सत्र 2011 से किया जा रहा है। महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा किया जाता है। महाविद्यालय में संगीत गायन के दो प्राध्यापक व एक सितार प्राध्यापिका तथा एक तबला वादक नियुक्त है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

miyfC/k;k

महाविद्यालय संगीत विभाग से उत्तीर्ण छात्र श्री दिपक कुमार भारती ने घूमर फेस्टीवल में अपनी भव्य प्रस्तुति देकर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है।

- सगीत विभाग स्टैनी ममोरियल महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

o|fnd dU;k efgyk egkfo|ky;

o:.k iFk] ekuljkoj t;iqj ¼jkt-½

गुलाबी नगर जयपुर में स्थित यह महाविद्यालय महिला शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा सम्बद्धता प्राप्त है। इस महाविद्यालय की स्थापना महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्वेश्य से सन 2009 में शुरू किया गया। प्राकृतिक सौन्दर्य से सुशोभित यह महाविद्यालय भव्य तथा विशाल भवन में संचालित है। महाविद्यालय में बी.ए. स्तर पर संगीत विषय को सत्र 1995–96 तथा स्नातकोत्तर स्तर पर सत्र 2007–08 में प्रारम्भ किया गया। महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का ही अध्ययन करवाया जाता है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय की एक प्राध्यापिका व एक तबला वादक वर्तमान में कार्यरत है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत छात्राओं को मंच प्रदर्शन की सुविधा भी प्रदान की जाती है।
2. संगीत छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत छात्राओं के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में छात्राओं के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत छात्राओं को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5- महाविद्यालय संगीत विभाग में केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है।

miyfC/k;k

महाविद्यालय से संगीत अधिस्नातक उर्त्तीण कर चुकी कई छात्राएँ नेट परीक्षा उर्त्तीण कर निजी विद्यालयों व महाविद्यालयों में संगीत शिक्षिकाओं के रूप में सेवाएँ दे रही है। कई छात्राएँ शोध कार्यो में संलग्न है। इस महाविद्यालय संगीत विभाग ने कई सुरीले कलाकार दिये है। जिनमें पायल भट्टाचार्य, ओम ज्योति (गायन) का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

- सगीत विभाग वैदिक कन्या महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त tkudkjhA

lØsM gkVZ egkfo|ky;] dksVk

¼,d ifjp;½

कोटा के तलवंडी क्षेत्र में उच्च शिक्षा हेतु सत्र 2003–04 से सेक्रेड हार्ट

महाविद्यालय का शुभारम्भ किया गया है। यह महाविद्यालय राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त एवं कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त है। महाविद्यालय में विद्यार्थियों को शिक्षा से सम्बन्धित हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध है तथा महाविद्यालय में योग्य एवं अनुभवी व्याख्याताओं द्वारा अध्ययन करवाया जाता है।

यह महाविद्यालय सहशिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। इस महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर संगीत विषय का प्रारम्भ सन् 2003–04 से किया गया है एवं महाविद्यालय में केवल कंठ संगीत विषय का एक अध्ययन करवाया जाता है। इस महाविद्यालय में संगीत विषय का एक प्राध्यापक कार्यरत है एवं समय–समय पर तबला वादक की सेवाएँ ली जाती है।

यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है एवं वर्तमान में यह महाविद्यालय अपने भव्य और विशाल भवन में नया नोहरा बांरा रोड़ पर संचालित है।

fo'k"krk,¡

1. महाविद्यालय संगीत विभाग द्वारा संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व संगीत विद्यार्थियों का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है एवं संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करता है।

2. संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

3. संगीत विभाग द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

4. संगीत विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है एवं संगीत विभाग में संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।

5- यह महाविद्यालय सहशिक्षा का केन्द्र माना जाता है।

miyfC/k;k¡

इस महाविद्यालय से संगीत स्नातक विद्यार्थी एम.ए. संगीत हेतु अन्यत्र महाविद्यालयों में अध्ययनरत है एवं कई छात्र–छात्राएँ केन्द्रिय एवं नवोदय विद्यालयों में संगीत शिक्षकों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है। यह महाविद्यालय संगीत प्रचार–प्रसार हेतु अपने कदम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ा रहा है।

- संगीत विभाग सेक्रेड हार्ट महाविद्यालय द्वारा प्रदत्त जानकारी।

jkt dh; lxhr ek/;fed çHkkdj fo|ky;

jkeiqjk]dkVk ¼jkt0½

इस संगीत विद्यालय की स्थापना सन् 1959 में हुई थी। यह संगीत विद्यालय वर्तमान में राजकीय महात्मा गांधी सीनियर सैकण्डरी विद्यालय रामपुरा कोटा के परिसर में संचालित है। इस विद्यालय में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों ही पाठ्यक्रमों का अध्ययन करवाया जा रहा है। यह संगीत विद्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान बीकानेर से सम्बद्वता प्राप्त है। इस विद्यालय में भूषण तथा प्रभाकर की गायन, वादन (तबला) तथा कथक नृत्य की शिक्षा दी जाती है। यह विद्यालय अपने निजी भवन में संचालित नहीं है, परन्तु इसे सरकार द्वारा जवाहर नगर कोटा में भूमि आवंटित की गई है। इस विद्यालय में सन् 1959 में भूषण तथा 1995–96 से संगीत प्रभाकर की कक्षाओं को प्रारम्भ किया गया है।[1] इस विद्यालय में राज्य सरकार द्वारा संगीत शिक्षकों के दस पद स्वीकृत किए गए है परन्तु वर्तमान में सात संगीत शिक्षक ही कार्यरत है।[1]

jkt dh; lxhr ek/;fed çHkkdj fo|ky;

>kykokM+ ¼jkt-½

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1959 में की गई थी।[2] इसी विद्यालय की उपशाखा कोटा में राजकीय संगीत माध्यमिक प्रभाकर विद्यालय, कोटा के नाम से संचालित है। इस संगीत विद्यालय में भूषण तथा प्रभाकर की कक्षाओं का संचालन गायन, वादन के रूप में किया जा रहा है।

यह विद्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान बीकानेर से सम्बद्वता प्राप्त है तथा इस विद्यालय की सभी परीक्षाओं का आयोजन प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान बीकानेर द्वारा प्रतिवर्ष किया जाता है।

---

1. राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, रामपुरा द्वारा प्रदत्त जानकारी।
2. स्मारिका परम्परा 2005 संगीतिका –कोटा पृष्ठ संख्या 21

r`rh; v/;k;

dyk ,oa yfyr dyk ds lkekftd ljksdkj

1-dyk dk vFkZ laxhr ¼dyk ds ifjis{; esa½

2- laxhr dyk dh l`tukRedrk ,oa lkekftd ljksdkj

3- laxhr f'k{kk dk uohu ikB~;Øe

4- laxhr dyk ds fofHkUu O;kolkf;d vk;ke

dyk ,oa yfyr dyk dk lkekftd ljksdkj

dyk dk ifjp;

मानव प्रारम्भ से ही सौन्दर्य का प्रेमी रहा है। अपने जीवन के हर क्षेत्र में वह सुन्दरता की कामना करता है। मानव की इसी सौन्दर्य भावना से कला का सृजन हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होकर मानव ने सुंदर कला कृतियों का निमार्ण किया है। मानव जब अपने भावों को व्यक्त करने के लिए किसी माध्यम का प्रयोग करता है तो वही से कला का सृजन आरम्भ होता है। कला मानव का अनुभव है। वह उसके विचारों, भावों, आदि को व्यक्त करने का माध्यम है। सभी मानवीय क्रियाएँ जो सृष्टि में होती है वह कला कही जाती है।

मानव अपने मन–मस्तिष्क तथा शरीर से जो कार्य करने की चेष्टा करता है उसे ही कला कहा है। अतः जिस कृति का सृजन मानव करता है, वह कला है। कला सौन्दर्य से परिपूर्ण होती है परन्तु सौन्दर्य की प्राप्ति करना उसका लक्ष्य नही है। कला यथार्थ की अनुकृति है।

कला मानव के भावों तथा विचारों को प्रकट करने का माध्यम है। मानव का स्वभाव है कि वह सदैव नवीन वस्तुओं के विषय मे जानने के लिए उत्सुक रहता है, एवं वह ज्ञान की प्राप्ति विभिन्न प्रकार से करता है।

मानव के हर कार्य को कला की संज्ञा दी गई है। अतः मानव जो भी कार्य करता है वह कला है। मानव के अन्तः अनुभूत आवेगों संवेगों और भावों को किसी सीमा बद्ध स्वरूप में बाँधना ही 'कला' है।[1] कला मानव के विचारों का साक्षात् रूप है। कला में अनुभूति सत्य है तथा सत्य ही शिव है। सत्य व शिव ही सुन्दर होता है।[2]

---

1. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 301
2. डॉ. आर.डी लाटा, रूप प्रद कला के मूलाधार पृष्ठ संख्या 38

सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु को कला कहा गया है। भारतीय कला में यहाँ की संस्कृति के मूल तत्वों का साकार रूप प्रकट होता है। भारत में अनेक केन्द्रों पर विभिन्न युगों में विविध कला स्वरूपों का निर्माण हुआ जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप समझे जाते है। कला को कल्याण की जननी कहा गया है। सृष्टि के सभी पदार्थो में कला का वास बताया गया है।

dyk dk vFk o ifjHkk"kk,¡

कला शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'कल' धातु से हुई है। जिसका अर्थ है शब्द करना या प्रेरित करना। जिस प्रकार कल्–कल् शब्द से गतिपूर्ण ध्वनि आती है। उसी प्रकार कला भी लयपूर्ण अभिव्यक्ति है। कला का अर्थ मात्र भोग विलास न होकर सौन्दर्य कि अभिव्यक्ति द्वारा सुख या आनन्द प्रदान करना है। पश्चिम में कला का समानार्थी शब्द ''आर्ट'' है जो लैटिन भाषा के आर्स शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ समान है।[1]

अंग्रेजी भाषा में कला को **(art)** कहा जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द ''आर्स'' या ''आर्टेस'' से मानी जाती है। ये शब्द ''अर'' धातु से बने है। इनका अर्थ है पैदा करना, बनाना, फिट करना आदि। ये सभी क्रियाएँ किसी भी माध्यम से सृजनात्मक होती है। जैसे कल्पना कर चित्र रचना करना, नाट्य करना, काव्य रचना, आदि। सभी सृजनात्मक क्रियाएँ कला के भिन्न–भिन्न स्वरूप है। यह सभी स्वरूप कला को आनन्द की अनुभूति देते है।[2] संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अन्तर्गत कला शब्द की व्युत्पत्ति 'कल' धातु से व अच जदनतंर स्त्री लिंग शब्द बनाने के लिए टाप प्रत्यय हुआ है। इस प्रकार कल्अच् (अ) टाप् (आ) के संयोग से 'कला' शब्द बना है।[3]

---

1. डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 2
2. डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 38
3. डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 3

परिभाषाएँ

हमारे भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों ने कला को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्न प्रकार से है।

Hkkjrh; fo}kuksa ds vuqlkj dyk dh ifjHkk"kk,¡

1. भरत मुनि के अनुसार – 'कला' न ज्ञान है, न शिल्प और न विद्या अपितु कला इन सबसे भिन्न है।[1]
2. डॉ. भोला नाथ तिवाड़ी के मतानुसार – शारीरिक या मानसिक कौशल जिसका प्रयोग किसी कृत्रिम निर्माण में किया जाए वही कला है।[2]
3. शंकराचार्य के अनुसार – 'कला' वह है जो मनुष्य को सत्य की और अग्रसर करती है और वही सत्य ब्रह्म है।[3]
4. ब्रह्म सूत्र के अनुसार – जो आन्तरिक भावों को कलात्मक रूप से अभिव्यंजित करे वही कला है।[4]
5. डॉ. श्याम सुदंर दास के मतानुसार – जिस अभिव्यंजना में आंतरिक भावों का प्रकाशन तथा कल्पना का योग रहता है, वही कला है।[5]

---

1 डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 2

2 डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 2

3 डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत मासिक अंक' जून 2013 पृष्ठ संख्या 39

4 डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 2

5 डॉ. आर.डी. लाटा, रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 39

Ikk'pkR; fo}kuk }kjk nh xbZ dyk dh fofHkUu ifjHkk"kk,¡

1. प्लेटो के अनुसार :– 'कला' सत्य की अनुकृति है। कला में हम ईश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि को ही सत्यापित करते है।[1]
2. अरस्तु के मतानुसार : 'कला' में सामान्य की अनुकृति की जाती है। क्योंकि विशिष्ट की अनुकृति उचित तथा संभव नहीं है।[2]
3. हीगल के अनुसार :– हीगल ने कला को अधि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।[3]
4. फ्रायड के अनुसार :– फ्रायड ने कला को मानव की दमित–वासनाओं का उभार माना है।[4]
5. हरबर्ट रीड के अनुसार :– 'कला' अभिव्यक्ति का रंजक स्वरूप है।[5]

dyk d: Hkn

भारतीय कला विभाजन में उपयोगी व ललित कला का विभाजन चारू तथा कारू शिल्प के रूप में किया गया है।[6] मानव की सभी मानवीय क्रियाएँ कला के अन्तर्गत आती है। इस दृष्टि से कला का कार्य क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। इसी तथ्य के आधार पर विद्वानों ने कला का वर्गीकरण किया है।

1. डॉ. ममता चतुर्वेदी 'कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला' पृष्ठ संख्या 2
2. " " " " " वही पृष्ठ
3. डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत व कलाकार' पृष्ठ संख्या 4
4. डॉ जय सिंह नीरज 'राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य' पृष्ठ संख्या 18
5. " " " " " वही पृष्ठ
6. डॉ. आर.डी. लाटा, रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 39

''संस्कृत'' साहित्य में ज्ञान को दो भागों में बाँटा गया है।

(1) विद्या (2) उपविद्या

1- विद्या : विद्या के अन्तर्गत काव्य की गणना की जाती है।

2- उपविद्या : उपविद्या के अन्तर्गत सभी कलाओं को स्थान दिया गया है।[1] वैदिक काल में कलाओं का वर्गीकरण नहीं किया गया था। वैदिक काल में कला के स्थान पर केवल 'शिल्प' शब्द का ही प्रयोग किया जाता था।[2]

पंचाला ने सर्वप्रथम कलाओं का वर्गीकरण दो भागों मे किया है।

(1) मूल कलाएँ (2) अन्तःकरण कलाएँ।

पंचाला ने मूल कलाएँ 54 मानी है। एवं अन्तः करण कलाएँ 514 मानी है। ये सभी कलाएँ मूल कलाओं पर आधारित थी।[3]

vjLr| u dykvk dk rhu Hkkxk e ckVk gA[4]

1. आचरण विषयक कला : इस श्रेणी की कलाओं मे वे कलाएँ आती है, जिनका उद्वेश्य उपदेश देना होता है।
2. ललित कला : जो कलाएँ लालित्य पूर्ण हो वहीं ललित कलाएँ है। इन कलाओं की अनुभूति सौन्दर्य से परिपूर्ण रहती है।
3. उदार कला : उदार कला के अन्तर्गत, व्याकरण, तर्क, इतिहास आदि आते है। प्रत्येक विषय कला से संबधित है।

1. डां मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 302
2. " " " " " वही पृष्ठ संख्या
3. " " " " " वही पृष्ठ संख्या
4. .डां मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 30

:lk d vk/kkj ij dykvk d Hkn

रूप के आधार पर कलाओं को दो भागों बांटा जा सकता है।[1]

1- रूपात्मक कला : जो कला किसी रूप में उभर कर सामने आती है वह रूपात्मक कला है। जैसे वास्तुकला व चित्रकला आदि।

2- श्रव्यात्मक कला : श्रव्य कला अर्थात जो सुनी जा सके। ये ध्वनि पर आधारित होती है। जैसे संगीत कला व काव्य कला।

KkusfUnz;k d vk/kkj ij dykvk dk oxhZdj.k

ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर कलाओं को तीन भागों मे बांटा गया है।[2]

(1) दृश्य कला (2) श्रव्य कला (3) मिश्रित कला

1. दृश्य कला : जिन कलाओं का अनुभव मानव आँखों के द्वारा करता है। वे कलाएँ दृश्य कलाओं के अन्तर्गत आती है।
2. श्रव्य कला : जो कलाएँ कानों के द्वारा सुनकर अनुभव की जाती है वे कलाएँ श्रव्य कलाओं के अन्तर्गत आती है।

3 मिश्रित कला : मिश्रित कलाओं के अन्तर्गत वे कलाएँ आती है। जिनका अनुभव करने के लिए एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों की आवश्यकता होती है। जैसे नृत्य कला, नाट्य आदि।

वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ कामसूत्र में 64 प्रकार की कलाओं का वर्णन किया है।[3]

प्रबंध कोष में कलाओं की संख्या 72 लिखी हुई है। क्षेमेन्द्र की लिखी हुई पुस्तक 'कला विलास' में 382 कलाओं के नाम दिये गये है।[4]

---

1. डॉ मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 302
2 डॉ मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 303
3 ....वही पृष्ठ
4 ....वही पृष्ठ

वात्स्यायन की कला सूची में काव्य समस्या पूरणम् 'काव्य क्रिया' और 'क्रिया कल्प' और मानसी जैसी काव्य कलाओं की नामावली है। किन्तु अनेक प्राचीन एवं आधुनिक विद्वानों के मतानुसार काव्य साहित्य है, जो कला से पृथक है। जैसे आचार्य शुक्ल तथा प्रसाद ने भी काव्य को कला नही माना है।[1]

क्षेमेन्द्र की कला सूची को छोड़कर प्रायः सभी प्राचीन कला सूचियों में काव्य को कला मानकर स्थान दिया गया है। वात्स्यायन की कला सूची देखने से यह बोध होता है कि उनकी पुस्तक कामसूत्र पर आधारित होने के कारण उन्होने कला का साधारण अर्थ स्त्री प्रसादन एवं वंशीकरण से अधिक जोड़ा है।[2] यशोधर ने 518 कलाओं का वर्णन किया है तथा 64 कलाओं को मूल कलाएँ माना है।[3]

yfyr dyk dk ifjp;

कलाओं में ललित कलाओं का एक विशेष स्थान माना गया है। ललित कलाओं के अन्तर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला, एवं संगीत कला की गणना की जाती है। ललित कलाओं के द्वारा हमें किसी भी प्रकार का भौतिक सुख प्राप्त नही होता है। किन्तु इन कलाओं के द्वारा मानव को असीम आनन्द, सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है। किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का मूल्याकंन कला के माध्यम से ही किया जाता है। क्योंकि कला के द्वारा सौन्दर्य का सजृन होता है। कला जीवन में नवीन आयाम व शक्ति का संचार करती है। अंग्रेजी भाषा में ललित कला को फाईन आर्टस **(Fine-Art)** तथा फ्रेंच भाषा मे **Beaux Arts** कहा गया है।[4] पाणिनी ने इसे 'चारू' कला कहा है।[5] यह सुदंर को व्यक्त करती है। यह सहज व संयमित क्रिया है। सौन्दर्य के दृष्टिकोण से ललित कला चाक्षुश तथा श्रव्य आनन्द स्त्रावित करने वाली होती है।[6]

---

1. डॉ. निशि माथुर भारतीय संगीत और कलाकार' पृष्ठ संख्या 4
2. " " " " " वही पृष्ठ संख्या
3. डॉ. मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 303
4. डॉ. आर.डी.लाटा, 'रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 35
5. " " " " " वही पृष्ठ
6. " " " " " वही पृष्ठ

कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है। 'यथा कलां यथा शफं ऋणं सनयामसि उपनिषदों में भी 'कला' शब्द का प्रयोग किया गया है।[1] कला शब्द का प्रयोग संस्कृत साहित्य में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थर्वेद शतपथ ब्राह्मण आदि वैदिक ग्रंथो में ललित कलाएँ वे कलाएँ होती है, जिनकी सुंदरता व मौलिकता से सभी दर्शकगण व श्रौतागण मन्त्र मुग्ध हो जाए।

इन कलाओं का संबंध सौन्दर्य बोध व आध्यात्मिक चेतना से माना गया है। कला के समानार्थी शिल्प शब्द का प्रयोग ब्राह्मण ग्रंथो तथा साहित्यों में भी मिलता है।[2] पाणिनी रचित अष्टाध्यायी में तथा बौध एवं जैन ग्रंथो में जिस शिल्प शब्द का प्रयोग किया गया है वह कला के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है।[3]

कालिदास ने भी कला के लिए शिल्प शब्द का प्रयोग किया है। अष्टाध्यायी में जो 'कारूशिल्पी' और 'चारूशिल्पी' शब्द आये है वे उपयोगी और ललित कलाओं के लिए प्रयुक्त हुए है।[4]

yfyr dyk dk vFk

ललित कला का अर्थ है कुछ नया उत्पन्न करना या कुछ नया बनाना। कलाकार सत–चित आनन्द की अनुभूति को प्राप्त ज्ञान के आधार पर अपनी सीमाओं के अन्तर्गत, सम्पूर्ण शिल्प विधान द्वारा अभिव्यक्त करता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया कला कही गई है। जब हम किसी कार्य को कला की श्रेणी में रखते है। तो उस कार्य का पहले मूल्यांकन किया जाता है। प्रत्येक कला में कुछ तत्वों का होना आवश्यक है जो उसे कला कहलाने के योग्य बनाते है।[5]

1- डॉ. सरोज भार्गव ''सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ' पृष्ठ संख्या 66
2- " " " " " वही पृष्ठ
3- " " " " " वही पृष्ठ
4- " " " " " वही पृष्ठ
5- डां मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 303

ये तत्व निम्न प्रकार से है।

1. रूप
2. प्रमाण
3. भाव
2. उपमा
5. लावण्य

आदि। जिन–जिन कलाओं में ये तत्व अधिक मात्रा में पाए गये उन कलाओं को ललित कलाएँ कहा गया है।[1] ललित स्तवराज के अनुसार शिव को जब लीला के प्रयोजन की अनुभूति होती है, तब महामाया, जो शक्तिरूपा है, जगत की सृष्टि करती है। अतः यह शिव की लीला सखी होने के कारण ललिता नाम से जानी जाती है। इसी ललिता के लालित्य से ललित कलाओं की सृष्टि हुई है। यह ललित कलाएँ लालित्य और आनन्द की निधि है।[2]

yfyr dyk d çdkj

हीगल ने ललित कलाओं के पाँच प्रकार बताये है।[3]

1. संगीत कला : यह नाद का स्वरूप है जो स्थूल पदार्थो से मुक्त एक सूक्ष्म तत्व है। इसमें कलाकार ध्वनि के माध्यम से भावों को व्यक्त करता है। विश्व में हर स्थान पर यह कला उपस्थित है।
2. काव्य कला : काव्य का आधार कल्पना है जो भौतिकता से युक्त है। काव्य का आधार शाब्दिक संकेत (अक्षर) होते है। ये संकेत जीवन की घटनाओं मन के विचारों आदि को अभिव्यक्त करते है। भाषा द्वारा भाव की साधना ही काव्य है।
3. चित्रकला : चित्रकला मे भावों को रंगो के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मानसिकता का प्रयोग अधिक रहता है।

---

1. डां मृत्युंजय शर्मा,संगीत मैनुअल' पृष्ठ संख्या 303
2. डॉ. सरोज भार्गव ''सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ' पृष्ठ संख्या 66
3. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 303

4. वास्तुकला : इसमें भावों की अभिव्यक्ति भवन के रूप मे होती है। इसमें स्थूलता अधिक रहती है फिर भी इसमें भाव प्रकट करने की शक्ति रहती है।

5. मूर्तिकला : इस कला में कलाकार मूर्ति बनाकर अपने भावों को अभिव्यक्त करता है। पत्थर, धातु आदि को काटकर सजीव या निर्जीव पदार्थो के रूप में वह जीवन को पूर्णतया अंकित नहीं कर सकता है।

ये ललित कलाएँ सौन्दर्य को मूर्त रूप प्रदान करती है। इसलिए इन सभी कलाओं को ललित कलाओं की श्रेणी मे रखा जाता है।[1]

dyk o lekt dk lEc/k

कला समाज को साक्षत् रूपायित करती है। जीवन चरित्र विश्वास–आस्था, परम्परा, रहन–सहन, सौन्दर्य के उच्चादर्श, अध्यात्म आदि ललित कलाओं के द्वारा मूर्तिमान होते है। कार्लमार्क्स, टॉल्सटॉय, आदि विचारकों ने कला को जन कल्याण का साधन मानकर कला की बौद्विक गरिमा और सामाजिक सार्थकता को विशेष महत्व दिया है। कला में सम्पूर्ण समाज की रूचियों का समावेश होता है। इस प्रकार कलाकार जनता की भावनाओं, प्रेरणाओं तथा विचारों को अभिव्यक्त करता है। कला समाज तथा जीवन से सम्बन्धित है। तभी वह विकासशील होती है। 'कालमाकर्स के अनुसार कलाकृति में रूप तथा विचार होते है। ये दोनों ही सामाजिक तत्व होते है। इस प्रकार कलाकार सामाजिक जीवन तथा उसके उत्तरदायित्व से मुक्त तथा पृथक नहीं होता है। टॉल्सटॉय ने 'रहार दज आर्ट' में कला को आनन्द का साधन नहीं माना है। कला वस्तुत मनुष्यों के मेल का साधन है। वह उन्हे एक अनुभूति में बांधती है।[2]

---

1. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 303
2. डॉ. आर. डी. लाटा 'रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 58

जीवन, व्यक्ति और समाज के कल्याण की और प्रगति के लिए अनुभूति का बंधन अनिवार्य है। जनजातिय कला से अत्याधुनिक कलाकृतियों में यह स्वतः ही सिद्व हो गया है कि कला व समाज का अंत सम्बन्ध सदेव रहा है।

बेलिन्सिकी ने कला को जन–साधारण का साधन मानकर कला की बौद्विक गरिमा और उसकी सामाजिक सार्थकता को विशेष महत्व देते हुए भौतिकवादी विचार धारा का सूत्रपात किया।[1] टाल्सटॉय के मतानुसार कला मानव जीवन की अवस्था है। वे कला को मानव–मानव के बीच सम्पर्क का साधन मानते थे। कला में प्रभावित करने की शक्ति होती है, एवं वह सामाजिक एकता उत्पन्न करती है।[2]

समाज के नव निर्माण में कला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। टालस्टॉय ने अपने कला विवेचन में कला को संचार का माध्यम बताया है। उनका मत है कि कला केवल मनोरंजन का साध नही नहीं है, अपितु वह सम्प्रेषण का सफल माध्यम है जो समाज के दिशाहीन जनमानस को उसके उद्वार का मार्ग निर्देशित करती है। कला ही सम्पूर्ण मानव जीवन को एक सूत्र में बाँधकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।[3]

प्रसिद्व दार्शनिक 'टचर नीचे फेरको' का भी यही मत है कि कला का क्षेत्र समस्त मानव रूचियों और सद् प्रवृतियों का परिष्कार करता है।

यह सामाजिक जीवन के संबंधों को सुद्वढ़ करने में सहायक होता है। समाज के निर्माण में उसके उत्थान में कला के बहुमुखी अंगो का योगदान अपेक्षित है। समाज के सर्वप्रथम सुसंस्कृत नागरिक का जो समाज का एक अंग है उसका कला प्रिय होना अनिवार्य माना गया है।[4]

---

1. डॉ. आर. डी. लाटा 'रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 58
2. डॉ. आर. डी. लाटा 'रूपप्रद कला के मूलाधार' पृष्ठ संख्या 59
3. डॉ. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ' पृष्ठ संख्या 104
4. .....वही पृष्ठ संख्या

भर्तहरि ने अपने नीतिशतक में कहा है। ''साहित्य संगीत कला विहीनम साक्षात् नर पुच्छ विसाड़ हीनम्'' । काव्यकार सद्साहित्य सृजित कर समाज में व्याप्त बुराईयों से जन मानस को सचेत करता है। समाज को कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। संगीतकार अपने संगीत और वाद्यों के माध्यम से जन मानस की रूचि को विषय वस्तु के अवगाहन हेतु बाँधे रहता है। संगीत किसी भी विचार भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का सफल साधन माना गया है।[1]

सैनिक अभियान के समय सैनिको के उत्साहवर्धन हेतु देश भक्ति गीतों को सुनाया जाता है। जिससे सैनिकों में नवीन ताकत व स्फूर्ति का संचार होता है। समाज भारत वर्ष में भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र की रचना कर उसे पंचम वेद की संज्ञा प्रदान की है। नाट्य शास्त्र के अन्तर्गत अभिनव, गायन, वादन और नृत्य का सामजंस्य रहता है। संगीत समाज में जागृति का निमार्ण करता है एवं जीवन के उच्च आदर्शो को जागृत करता है।

हमारे सभी सामाजिक कार्यो व अवसरों में भी संगीत का समावेश रहता है। समाज में प्रचलित विभिन्न संस्कार जैसे जन्म संस्कार, नामाकरण संस्कार, विवाह, मूडंन आदि सभी कार्य संगीत के बिना सम्पन्न नही किए जा सकते है। इन सभी कार्यो में संगीत के द्वारा रौनक बढ़ जाती है।

हमारे सभी त्योहारों पर संगीत का उपयोग किया जाता है। संगीत के द्वारा समाज में एकता व देश प्रेम की भावना को जागृत किया जा सकता है। संगीत का प्रभाव समाज के हर पहलू पर दिखाई देता है एवं कला को समाज का दर्पण भी कहा जाता है।

1. डॉ. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ' पृष्ठ संख्या 104

dyk ,oa lL—fr dk lc/k

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति सम़कृत्ति से हुई है। जिसका अर्थ है, परिष्कार करना, व्यवस्थित करना, या पूर्णता प्रदान करना है यह एक मनोक्रिया है। संस्कृति को आँगल भाषा में 'कल्चर' शब्द से सम्बोन्धित किया गया है। मूलतः संस्कृति शब्द का आशय मानवीय क्रिया कलाप से है। यह विचार ज्ञान, भावना, प्रथाओं और संस्कारों का एक ऐसा समन्वित रूप है, जो एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होता है।

किसी देश या राष्ट्र की आत्मा उसकी स्वयं की संस्कृति है। जिस प्रकार आत्मा के बिना पंचभूत देह का कोई महत्व नहीं होता है उसी प्रकार संस्कृति विहीन देश या राष्ट्र भी संस्कृति के बिना अस्तित्व हीन होता है। संस्कृति किसी की व्यक्तिगत सम्पति न होकर पूरे समाज या राष्ट्र की निधि होती है। संस्कृति मनुष्य की सम्पूर्ण कलाओं की सम्मिलित उपलब्धि है। राष्ट्र या देश इन कलात्मक उपलब्धियों का संकलन और संरक्षण करता है।[1]

भारतीय संस्कृति सदियों से संचित भावात्मक मानसिक, बौधिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धि है। पाश्चात्य विद्वानों ने अपनी मान्यताओं के अनुरूप अपनी संस्कृति का निर्धारण किया है। उनके अनुसार ज्ञान, विश्वास कला, आचार, विधि रीति आदि क्षमताओं और रीतियों से युक्त ही संस्कृति है। जिसे मनुष्य समाज के व्यक्तियों द्वारा निर्मित करता है।

संस्कृति आत्मोन्नति का प्रतिफल है, जो ज्ञान विज्ञान की देन है। किसी भी देश की संस्कृति के परीक्षण के प्रमुख अंग उसमें सृजित साहित्य, उसका गौरवशाली धार्मिक इतिहास और कलात्मक सृजन है। तीनों ही क्षेत्र का सम्मिलित रूप वहाँ की संस्कृति के निर्धारण का आधार बनता है। यह तीनों ही क्षेत्र ललित कलाओं के अन्तर्गत आते है। जिस देश में विश्व प्रशंसित महाकाव्यों की रचना हुई है वह देश अवश्य ही सुसंस्कृत है।

1. डॉ. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ'' पृष्ठ संख्या 105

भारत में रचित वेद, पुराण, रामायण, महाभारत जैसे प्रमुख धार्मिक ग्रंन्थ है। स्थापत्य कला का विश्व प्रसिद्व श्वेत संगमरमर का ताजमहल, खुजराहो की मूर्तियाँ, आदि विश्वकला मंच पर अपना अस्तित्व प्रमाणित कर चुकी है। भारतीय चित्रकला के क्षेत्र को प्रंशसित करने वाले अजन्ता के भित्ति चित्र, मुगल, राजपूत और पहाड़ी कला के लघुचित्र अपने कलात्मक सौष्ठव को प्रमाणित करते हुए विश्व की कला तीर्थकाओं का गौरव बढ़ा रहे है।

इन्ही मान्यताओं के आधार पर भारतीय संस्कृति उच्च तथा प्राचीनतम संस्कृति मानी जाती है। अतः संस्कृति और कला का अटूट सम्बन्ध माना गया है। कला को ही संस्कृति एवं संस्कृति को ही कला माना गया है। विभिन्न राष्ट्रों की सामाजिक मान्यताओं, प्राचीन संस्कृति एवं तत्कालीन विचारधाराओं का प्रभाव साहित्यकार और कलाकारों पर पड़ता है। यही कारण है कि धर्म जाति और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार ही कला का निर्माण होता है।

कलाओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता अवश्य है परन्तु आंशिक रूप से कला तत्कालीन संस्कृति को सुधार कर उसको अपने में सुरक्षित रखती है। मानवीय जीवन तो अनेक नियमित–अनियमित, ज्ञात–अज्ञात श्रृंखलाओं का समष्टि रूप है। कलाकार का सम्बन्ध केवल वर्तमान में ना होकर अतित व भविष्य में भी होता है।

महान् कलाकार तो देश काल की सीमा से ऊपर उठकर सार्वभौमिक समाज का प्रतिनिधित्व करता है। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांगीतिक, सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक रहा है। संगीत अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है। कला संस्कृति का दर्पण है और संस्कृति कला की प्रेरणा। संगीत व संस्कृति का विकास एक दूसरे पर निर्भर करता है। संगीत हमारी समस्त सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मनोहर रूप है। हमारे देश की संस्कृति बड़ी ही अनूठी है, इसकी गोद में असंख्य चीजों का संमागम है। हमारी सभी कलाओं को संस्कृति का दर्पण बताया गया है।[1]

---

1. डॉ. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ'' पृष्ठ संख्या 105

मानव सदैव सौन्दर्य का प्रेमी रहा है। वह अपने जीवन के हर क्षेत्र में सुन्दरता की कामना करता है। मानव की इसी सौन्दर्य भावना के द्वारा कला का जन्म हुआ है। मानव अपने सभी भावों को कला के माध्यम से ही व्यक्त करता है। कला को सौन्दर्य से परिपूर्ण बताया गया है। मानव जो भी कार्य करता है उसे कला की संज्ञा दी गई है। भारतीय कला में यहाँ की संस्कृति के मूल तत्वों का साकार रूप प्रकट होता है।

कला को कल्याण की जननी कहा गया है क्योंकि सृष्टि में व्याप्त सभी पदार्थो में कला का वास बताया गया है। कला का मुख्य कार्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख या आनन्द प्रदान करना है। अंग्रेजी भाषा में कला को (art) कहा जाता है। 'कला' को हमारे भारतीय व पाश्चातय दोनों ही विद्वानों ने परिभाषित किया है। भारतीय कला विभाजन में कला का विभाजन चारू तथा कारू शिल्प के रूप में किया गया है।

विद्वानों ने कलाओं को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। पंचाला ने 54 कलाएँ मानी है। वातस्यायन में कलाओं के 64 प्रकार बताये है। कला के अनेक पहलू बताये गये है। कला और जीवन को कभी भी पृथक नहीं किया जा सकता है। कला अरूप को रूप प्रदान करती है। क्योंकि कला ही रूप का सृजन करती है। कला का क्षेत्र व्यापक होता है जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तु कला, संगीत कला, काव्य कला इत्यादि। इन सभी कलाओं में रूप विधान को लेकर कला प्रकट होती है।

कलाओं में ललित कलाओं का तात्पर्य, नवीन से लिया गया है। ललित कलाओं के सृजन कर्ता, चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुकार, संगीतकार व काव्यकार होते है। जिन सृजन कलाओं में रूप, प्रमाण, भाव, उपमा व लावण्य आदि तत्व विद्यमान रहते है। उन कलाओं को ललित कला कहा जाता है। ये ललित कलाएँ मानव में सदसंस्कार जाग्रत कर उन्हे सुसंस्कृत नागरिक बनाती है।

सभी ललित कलाएँ मनुष्य के सांस्कृतिक उत्थान के साथ–साथ मानव के आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। ललित कलाएँ सौन्दर्य बोध की असाधारण सामग्री का सृजन कर वह राष्ट्र गौरव की वृद्वि करती है। किसी भी देश के महाकाव्य, स्थापत्य, चित्रागार एवं मूर्तियाँ उस राष्ट्र का गौरव स्थल मानी जाती है।

ये सब ललित कलाओं की सन्तुष्टि के लिए नव सृजन की आतुरता ललित कलाओं को जन्म देती है। ललित कला को चारू कला के नाम से जाना जाता है। जिनमें वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला व संगीकला। ये सभी कलाएँ सौन्दर्य को मूर्तरूप प्रदान करती है। ललित कला को अंग्रेजी भाषा में **Fine-Art** कहा जाता है। ये सभी कलाएँ ललित कला के अन्तर्गत आती है।

कला में सम्पूर्ण समाज की रूचियों का समावेश होता है। कला को मानव–मानव के बीच का साधन बताया गया है। समाज के नव निमार्ण में कला की महत्वपूर्ण भूमिका बतायी गई है। कला ही मानव जीवन को एक सूत्र में बाँधकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रसस्त करती है। समाज का विकास कला के द्वारा ही होता है। कला के द्वारा समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर किया जा सकता है।

संगीत के द्वारा किसी भी विचारधारा को प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत करने का सफल साधन बताया गया है। युद्ध के दौरान सैनिकों में नया जोश उत्पन्न करने के लिए संगीत का ही सहारा लिया जाता है। सैनिकों को देश–भक्ति के गीत सुना कर उनमें नया जोश उत्पन्न किया जाता है। संगीत समाज में जागृति का निर्माण करता है। आज भी हमारे सामाजिक कार्यो व अवसरों मे भी संगीत का समावेश पाया जाता है।

संगीत के द्वारा ही समस्त कार्य सम्पन्न किए जाते है। संगीत के द्वारा ही समाज एकता व देश प्रेम की भावना को पैदा किया जा सकता है । समाज के हर क्षेत्र में संगीत विद्यमान है। साथ ही हमारे सभी विद्वानों ने कला को समाज का दर्पण बताया है। हमारे देश की संस्कृति बड़ी ही अनूठी मानी गयी है। इसकी गोद में असंख्य, दुर्लभ चीजों का समागम है।

कला के द्वारा हमारी सभ्यता व संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होता है। संस्कृति को आंगल भाषा में कल्चर शब्द से सम्बोधित किया गया है। इस संस्कृति शब्द का तात्पर्य मानवीय क्रिया कलापों से लिया जाता है। किसी भी देश या राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति कहलाती है। संस्कृति किसी भी व्यक्तिगत धरोहर न होकर पूरे समाज या राष्ट्र की धरोहर होती है।

किसी भी देश की संस्कृति की झलक, देश में सृजित साहित्य व धार्मिक इतिहास में देखा जा सकता है। स्थापत्य कला का विश्व प्रसिद्व आगरे का ताजमहल, खुजराहो के मंदिर, देवी–देवताओं की विशाल मूर्तियाँ हमारी कला के अनुपम उदाहरण माने गये है। संगीत अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है।

कला को ही संस्कृति का दर्पण बताया गया है, तथा संस्कृति कों कला की प्रेरणा क्योंकि संगीत व संस्कृति का विकास एक दूसरे पर निर्भर करता है। अतः कला एवं संस्कृति का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। भारतीय संगीत विश्व का प्राचीनतम तथा श्रेष्ठतम संगीत रहा है। भारतीय संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है की यहाँ बाहय व आंतरिक दोनों ही प्रकार के सौन्दर्य का समान रूप से विकास हुआ है।

भारत में प्राचीनतम काल से ही संगीत का महत्व अधिक रहा है। हमारे सन्त कवियों व ऋषि–मुनियों ने संगीत को आध्यात्मिक व मानसिक विकास का साधन बताया है। संगीत कला का प्रभाव जड़ व चेतन दोनों पर ही समान रूप से देखा गया है। भारतीय संगीत का संबंध मानव के चरित्र, धर्म, संस्कृति तथा कला आदि के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है।

संगीत कला का उदेश्य मानव को अलौकिक आनन्द की प्राप्ति कराना है। संगीत मन को शान्ति, आनन्द और प्रेरणा प्रदान करता है। संगीत कला के अन्तर्गत नवीन शक्ति का वास होता है। संगीत के द्वारा मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है। संगीत द्वारा भौतिक तथा आध्यात्मिक, लौकिक तथा अलौकिक आनन्द प्राप्त करने तथा प्रदान करने की जितनी शक्ति संगीत में है उतनी शक्ति अन्य किसी भी कला में नहीं हैं।

स्वर तथा लय का इतना सशक्त प्रभाव होता है कि सभी इसके आनन्द में लीन हो जाते है। संगीत में दिव्य शक्ति का वास बताया गया है। संगीत एक दूसरे के दिलों को छूता है। संगीत को विश्व का नैतिक विधान कहा गया है। यह विश्व को दिव्य सौन्दर्य प्रदान करता है।

संगीत मानव मस्तिष्क में नवीन रंग और भावनाओं में रंगीन उड़ान की नयना भिराम सुशमा एवं निराशा के प्रांगण में आनंद प्रवाहित करता है, तथा विश्व के प्रत्येक प्रदार्थ में जीवन और उत्साह के अभिनव स्फुरणों को मुखरित करता है। संगीत का अन्य कलाओं जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य कला व काव्यकला आदि, इन सभी कलाओं के साथ संगीत का घनिष्ठ संबंध बताया गया है।

dyk dk vFk lxhr dyk d ifjç{; e

¼lxhr dyk dk ifjp; ½

संगीत एक आदिकालीन कला है, सृष्टि के साथ ही संगीत का जन्म माना जाता है। प्राण और उष्णता अर्थात वायु और अग्नि का सम्पर्क जैसे ही स्थापित हुआ, मधुर स्वर लहरियाँ गूंज उठीं और उन लहरियों ने सकल ब्रह्माण्ड को मधुर ध्वनियों द्वारा झकृंत कर दिया। इन्ही स्वर लहरियों को संगीत के क्षेत्र में नाद कहा जाता है, इसलिए महान् मनिषियों ने नाद को नादब्रहम कहा है।[1]

क्योंकि इसके बिना संसार के सभी कार्य अधूरे ही रह जाते है। नाद के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता है। प्रत्येक कार्य की सिद्वि में प्राण और उष्णता के पारस्परिक सम्पर्क की आवश्यकता होती है और यही नाद संगीत कला का मूलाधार है। नाद की महिमा का गान करते हुए कहा जाता है कि नाद से बड़ा कोई मन्त्र नहीं है, आत्मा से बढ़कर कोई देवता नहीं है, इसके अनुसंधान से बड़ी कोई पूजा नहीं है और तृप्ति से बढ़कर कोई सुख नहीं है। संगीत कला में नाद का विशिष्ट महत्व बताया गया है। मानव जीवन में सामान्यतः संगीत का महत्व अनेक रूपों में परिलक्षित होता है। बालक अपने बाल्यकाल से ही घंटियों की मधुर ध्वनि नुपुर की झंकार या कंठ से निःसृत मधुर स्वर लहरियों की और सहज ही आकृष्ट होता है।

1. नमिता बैनर्जी, 'मध्यकालीन संगीत और तत्कालीन समाज पर प्रभाव' पृष्ठ संख्या 130

धीमी–धीमी गति में गाई गई लोरी उसे मीठीं नींद में सुला देती है। अतः सुमधुर ध्वनि या रंजक ध्वनि उसे जन्म से ही प्रिय होती है। केवल बालक ही क्यों, यौवनावस्था व वृद्वावस्था में भी संगीत की 'स्वरलहरियों' का अनुकूल प्रभाव मानव पर पड़ता है। अत्यन्त वेगवान उमंग भरी स्वर लहरियों को सुनकर मानव मन झूम उठता है। संगीत कला मानव–जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ी हुई है। जीवन का कोई भी कार्य इसके बिना अधूरा ही है।

प्रत्येक अवसर पर संगीत किसी न किसी रूप में विधमान रहता है। चाहे वह कोई मांगलिक कार्य हो अथवा ईश्वर आराधना हो या फिर युद्व–क्षैत्र, प्रत्येक क्षैत्र संगीत विहीन अपूर्ण है। प्रत्येक स्थान पर संगीत का अपना महत्व है।[1] संगीत वह कला है जिसके द्वारा संगीतज्ञ अपने हृदय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को स्वर व लय के द्वारा प्रकट करता है। सृष्टि के स्वर्णिम विहान से लेकर प्रलय की काली संध्या तक संगीत का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ता है।

जीवन के हर क्षेत्र में संगीत कला का वास है। मानव सभ्यता के साथ ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। इन कलाओं में संगीत कला, चित्रकला, काव्यकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला आदि कलाओं का विकास हुआ है। इन सभी कलाओं में संगीत कला को सर्वोपरि बताया गया है। कला का उद्गम सौन्दर्य की मुलभूत प्रेरणा से हुआ है। हमारे ऋषि–मुनियों तथा महान् संत कवियों ने संगीत को आध्यात्मिक और मानसिक विकास का साधन बताया है।

परमात्मा के सदृश्य विश्व के कण–कण में संगीत व्याप्त है, और इसका प्रभाव जड़ और चेतन दोंनों पर समान रूप से पड़ता है। संगीत के प्रभाव से वनस्पति, जीव जन्तु व सभी मनुष्य प्रभावित हुए है। संगीत ने इन सभी को सदैव अपनी और आकर्षित किया है। संगीत में गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों कलाओं का समावेश माना गया है। जैसा कि संगीत रत्नाकर में संगीत कला के संदर्भ में एक श्लोक प्राप्त होता है।

गीतं, वाद्यं, तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।[1]

1. डॉ. निशि माथुर, भारतीय संगीत और कलाकार' पृष्ठ संख्या 6

तीनों कलायें एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं किन्तु स्वतंत्र होते हुए भी गायन के आधीन वादन तथा वादन के आधीन नृत्य है और इन सभी में गीत प्रधान होने के कारण गायन के लिये इस साहित्य मे 'गीत' संज्ञा प्राप्त होती है। व्यक्ति प्राचीन समय से ही आनन्द तथा सौन्दर्य की खोज में लीन रहा है। आनन्द तथा सौन्दर्य की सुंदरतम अभिव्यक्ति ही कला है।[1] संगीत का आधार भूत तत्व नाद है, जो समस्त ब्रह्मण्ड में व्याप्त और प्राण भूत तत्व के साथ सम्बद्व है। संगीत का अन्य मूलभूत तत्व लय है, जो सृष्टि की गतिमानता का प्रतीक है।

कला के रूप में अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर पहुँचकर रसात्मक के जिस तत्व को प्रतिफलित करता है, वही नैतिक उत्कृष्टका साधन बनकर आत्मा–परमात्मा की एकाग्रता का सोपान बन जाता हैं। इसको अध्यात्म–वादियों ने ब्रह्म मानकर 'रसो वे सः कहा है। इस प्रकार रस ही वह तत्व है, जिसकी प्राप्ति के लिए अध्यात्मवादियों ने अनाहत नाद को तथा संगीतविदो ने आहत नाद को कला के रूप में अपनी साधना का माध्यम स्वीकार किया है।

दोनों ही माध्यम साधना को अंगीकृत करके मानद हृदय का परिष्कार कर उसे मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करते है। संगीत में चित्तवृतियों को शान्त और एकाग्र करने का महान् गुण है। इसलिए भक्ति और संगीत को एक दूसरे का पूरक माना गया है।[2] विष्णु धर्मोतर पुराण में वाद्य तथा नृत्य को गीत का अनुवर्ती माना गया है, तथा नृत्य कला के सम्यक् अध्ययन के लिए गीत तथा वाद्य का ज्ञान नितान्त आवश्यक निर्दिष्ट है।[3] प्राचीन भित्ति चित्रों में तीनों ही कलाओं का साकार दर्शन होता है। संगीत का पर्यावाची शब्द **Music (DANEPUB)** हैं। जो इटालियन भाषा का शब्द है। इसका अर्थ मनोरंजन से लिया गया है।[4]

---

1. डॉ. निशि माथुर, भारतीय संगीत और कलाकार' पृष्ठ संख्या. 6
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग 'संगीत मासिक पत्रिका अंक जून 2013 पृष्ठ संख्या 39
3. डॉ. शरद चन्द्र 'श्रीधर पराजंये' भा0 संगीत का इतिहास' पृष्ठ संख्या 4
4. .....वही पृष्ठ

विश्व के अनेक देशों में संगीत के लिए अलग–अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे यूनानी भाषा में संगीत को मौसिकी कहा जाता है। लैटिन भाषा में संगीत को मुसिका शब्द की संज्ञा दी गई है। अरबी व फारसी भाषा में संगीत को मौसिकी कहा जाता है।[1] इस नादात्मक जगत् के मानव सवेंगों को की सर्वोत्कृष्ट भाषा को संगीत कहा गया है। संगीत विश्व का नैतिक विधान है, यह विश्व को दिव्य सौन्दर्य प्रदान करता है एवं मानव मस्तिष्क में नवीन में रंग भरता है। विश्व के कण–कण में जीवन और उत्साह के अभिनव स्फुरणों को मुखरित करता है।

संगीत कला का अर्थ व परिभाषाएँ

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में 'संगीत' का व्युत्पत्तिगत अर्थ 'सम्यक' गीतम् रहा है। वंराहोपनिषद् की निम्न पंक्ति से इसी अर्थ का बोध स्पष्टतः होता है।

'संगीत ताल लय वाद्य वशं गतापि मौलिस्थ कुम्भपरिरक्षण धीर्नटीव'!![2]

व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'सम्यक' गीतम्' का बोधक होने पर प्रचार के अन्तर्गत 'संगीत' गीत, वाद्य तथा नृत्य के अभिन्न साहचर्य का ज्ञापक रहा है। नाट्य–शास्त्र के अनुसार गीत नाटक के प्रमुख अंगो में से अन्यतम है तथा वादन एवं नर्तन दोंनों उसके अनुगामी है।[3]

'संगीत' शब्द गीत शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाकर अर्थात गान के सहित अंग भूत क्रियाओं नृत्य व वादन के साथ किया हुआ कार्य संगीत कहलाता है।[4]

uR;a ok|kuxa çkDea ok|a- xhrkuofrz pA
vrks xhra ç/kkuRokn=knk ofHk/kh;rsAA[5]

1. डॉ0 निशा रावत संगीत में नैट सफलता के पथ' पृष्ठ संख्या 1
2. डॉ0 शरद चन्द्र श्रीधर पराजंये, भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ संख्या 3
3. ....वही पृष्ठ संख्या
4. बसन्त संगीत विशारद्' पृष्ठ संख्या 33
5. ....वही पृष्ठ संख्या

अर्थात गायन के अधिन वादन और वादन के अधिन नर्तन है, अतः इन तीनों कलाओं में गायन को ही प्रधानता दी गयी है। शोपेन हावर ने 'संगीत' को सभी कलाओं का सरताज बताया है।[1]

शापेन हाँवर के अनुसार : केवल 'संगीत' ही ऐसी कला है जो श्रौताओं से सीधा सम्बन्ध रखती है। इसे किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है। गीत, वाद्य और नृत्य, तीनों ही संगीत कला की श्रेणी मे आते है। इन तीनों ही कलाओं के मिश्रण से संगीत में भाव व संप्रेषणा की शक्ति बढ़ जाती है। आंगिक चेष्टा, शब्द और स्वर, इन तीनों ही कलाओं की सम्मिलित शक्ति, संगीत कला को अन्य किसी भी कला की अपेक्षा अधिक समर्थ बना देती है, इसलिए भारतीय संगीत को आनन्द प्रदान करने वाली कला भी कहा गया है।[2]

पाली त्रिपिटकों में संगीत : कला के लिए 'गान्धर्व' एवं 'संगीत' तथा 'शिल्प' संज्ञा प्रप्त होती है। संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं का सर्वत्र उल्लेख मिलता है।[3] कौटिल्य के अर्थ शास्त्र में गीत, वाद्य, नृत्य, तथा नाट्य का उल्लेख सहचरी कलाओं के रूप में हुआ है।[4] संगीत एक ऐसी कला है, जो विश्व की हर सभ्यता का अटूट हिस्सा रहा है। विश्व का कोई भी समुदाय जो आधुनिक हो, या पुरातन, या पंरपरागत संगीत से अछूता नहीं है। संगीत सार्वभौमिक है।[5]

हरबर्ट स्पेशंर के मतानुसार संगीत के प्रेरणादायक और प्रभावशाली स्वरों को सफल वक्ताओं की वाणी से ही ग्रहण किया गया है। संगीत के स्वर–भाव और भावनाओं के अनुरूप ही होते है। इस प्रकार स्वर ही प्रथम संगीत यंत्र माना जाता है।[6]

---

1. बसन्त संगीत विशारद्' पृष्ठ संख्या 33
2. बसन्त, संगीत विशारद, पृष्ठ संख्या 560
3. डा. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 112
4. डा. शरद चन्द्र श्रीधर पराजंये, भारतीय संगीत का इतिहास. पृष्ठ संख्या 4
5. डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत मासिक अंक मई 2013 पृष्ठ संख्या 32
6. डा. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाऐं पृष्ठ संख्या 84

बीथोविन (Beethoven) के मतानुसार

संगीत युद्ध कि प्रेरणा का स्त्रोत है जो सैनिक और विजेताओं को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साहित करती है। रण संगीत एक महत्वपूर्ण संगीत का सार्थक रूप है जो उत्साहवर्द्धक होने के साथ–साथ कर्तव्य पालन की प्रेरणा देता है।[1]

रोमेनरोलेण्ट के मतानुसार :

संगीत यश का एक महाकाव्य है यह प्रभावशाली विजय गाथा है।[2]

लोबानाईटी के मतानुसार :

संगीत एक गुढ़ गणितीय प्रस्तुति है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो आत्मा का सम्वर्द्धन करती है। यह अन्धो का प्रत्यक्ष दर्शन है।[3]

स्पेंगर के अनुसार :

संगीत मानवीय बोध की सर्वश्रेष्ठ कला है यह न तो जन्मजात सहज प्रवृति है न अतिश्योक्ति है न ज्ञान का तत्व है न बौद्धिक व्यापार है और न अन्तः प्रेरणा है। भावात्मक, अनुभव, भावनाओं का स्वरों द्वारा प्रस्तुतीकरण है जो लयात्मक हो वह संगीत कला है।[4]

'kkiu gkoj d erku lkj :

संगीत दृश्य जगत से भिन्न हैं यह एक मानसिक तथा आत्मिक अदृश्य सर्वशक्तिमान की समीपता प्रदान करता है।[5]

---

1. डॉ. सरोज भार्गव 'सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाऐं पृष्ठ संख्या 85
2. .....वही पृष्ठ
3. .....वही पृष्ठ
4. .....वही पृष्ठ
5. .....वही पृष्ठ

yfyr dykvk e lxhr dk LFkku

कलाओं में ललित कलाओं का एक विशेष स्थान माना गया है। ललित कला के अन्तर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला, और संगीत कला को रखा गया है। इनका कार्य मनुष्य के उपयोग की वस्तुयें बनाना नहीं है। बल्कि इनका एकमात्र प्रयोजन उनसे आनन्द प्राप्त करना है।

ललित कलाओं में हमें कोई भौतिक सुख प्राप्त नहीं होता किन्तु मन तथा मस्तिष्क को असीम आनन्द व सुख की प्राप्ति होती है इन कलाओं के द्वारा सदेव उत्साह प्रेरणा तथा प्रफुल्ता प्राप्त होती है।

कला को 'उपयोगी कला' और 'ललित कला' इन दो भागों में विभाजित किया जाता है और यह माना गया है कि उपयोगी कला–व्यवहार में उपयोगी होती है तथा ललित कला मन के संतोष के लिये है और उसमें उस विशिष्ट मानसिक सौन्दर्य की योजना है, जो उपयोगिता वाद से भिन्न है।[1]

क्रोचे के अनुसार :

कला एक अखण्ड अभिव्यक्ति है तथा जिस कला को व्यक्त करने का माध्यम जितना स्थूल होगा उतनी ही वह कला निम्न स्तर की मानी जायेगी और इसके विपरीत जिस कला का माध्यम जितना सूक्ष्म होगा वह उतनी ही उच्च स्तर की कला मानी जायेगी।

इसलिए संगीत कला जिसका माध्यम स्वर है, माध्यम की सूक्ष्मता के कारण उसको सर्वश्रेष्ठ कला माना गया है।[2]

---

1. डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत और कलाकार' पृष्ठ संख्या 5
2. डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत और कलाकार' पृष्ठ संख्या 6

yfyr dykvksa esa laxhr dk LFkku

1- fofHkUu Hkkfrd midj.kksa ,oa lkexzh ds vk/kkj ij %&

इस आधार पर सभी कलाओं को क्रम में रखा जा सकता है। वास्तुकला में पत्थर, ईट, मिट्‌टी, चूना व लकड़ी इत्यादि अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मूर्तिकला में प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों में पत्थर, छैनी व हथौड़ा प्रमुख है। चित्रकला में काम आने वाली वस्तुओं में कागज, रंग व तूलिका का स्थान प्रमुख है। काव्य तथा संगीत में केवल शब्द तथा नाद का ही स्थान बताया गया है। परन्तु काव्य के अन्तर्गत भाषा के साथ नाद भी विद्यमान रहता हैं, जबकि संगीत में केवल नाद ही रहता है।

अतः इन कलाओं में जिस कला के अन्तर्गत सबसे कम उपकरणों की आवश्यकता होती है, प्रायः उसी कला को सर्वश्रेष्ठ कला कहा जाता है। अतः संगीत ही एक ऐसी कला है जिसमें अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, अतः वास्तुकला मूर्तिकला, चित्रकला व काव्यकला, इन सभी कलाओं में संगीत कला का स्थान सर्वोपरि है।

2. गति के आधार पर :

किसी भी कला की श्रेष्ठता का मापदंड उसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव डालना है। स्थापत्य कला एक ऐसी कला है जो पूर्ण रूप से स्थिर है। किसी भी भवन को एक बार बनाने के पश्चात् उसे दूसरे स्थान पर नहीं ले जाया जा सकता है। इस स्थिति में सभी व्यक्ति उस भवन का आनन्द नहीं ले पाते है। मूर्तिकला में भी मूर्तिकार अगर छोटी मूर्ति बनाता है तो उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, परन्तु कई मूर्तियाँ इतनी विशाल होती है जिनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जाया जा सकता है। फिर भी अगर उनको ले जाना चाहें तो उनके खंडित होने का भय बना रहता है।

अतः सभी लोग इसका भी अवलोकन नहीं कर पाते है। चित्रकला में चित्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है परन्तु उसका अवलोकन भी बहुत कम लोग कर पाते है। काव्य तथा संगीत ऐसी कलाएँ जिन्हे कहीं भी ले जाया जा सकता है।

काव्य का आनन्द बिना शिक्षा के नहीं लिया जा सकता है परन्तु संगीत का आनन्द प्रत्येक व्यक्ति ले सकता है। संगीत को किसी स्थान पर प्रस्तुत किया जा सकता है। अतः इन सभी कलाओं में संगीत कला का स्थान सर्वश्रेष्ठ है।

3. नवीनता के आधार पर :–

स्थापत्य कला में जो भवन एक बार बन जाता है। उसे बार–बार तोड़कर बनवाना संभव नहीं है। मूर्तिकार भी एक बार मूर्ति बनाने के बाद उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता है। अगर वह मूर्ति में परिवर्तन करना चाहता है तो उसको दुबारा से मूर्ति बनानी पड़ेगी। यही स्थिति चित्रकला की है। सिर्फ काव्य तथा संगीत में कलाकार अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा हर बार नवीनता प्रकट कर सकता है। कई संगीतज्ञ एक ही बंदिश को भिन्न–भिन्न तालों व भिन्न–भिन्न रागों में गायन करते हुये सुनाई पड़ते है। अतः संगीत कला श्रेष्ठ है।

4. प्रभाव की दृष्टि से :– प्रभाव की दृष्टि से वास्तुकला, मूर्तिकला व चित्रकला का प्रभाव केवल मानव तक ही सीमित है। इन कलाओं का प्रभाव जड़ पदार्थ व पशु–पक्षियों पर नहीं पड़ता है। मूर्तिकला व चित्रकला को देखकर मानव प्रभावित हो सकता है। काव्य कला भी केवल शिक्षित लोगों को ही अपनी और आकर्षित कर सकती है। परन्तु संगीत कला का प्रभाव वनस्पति, पशु–पक्षियों व मानव सभी को पर पड़ता है। अतः संगीत कला का स्थान सर्वोपरि है।

5. कला के द्वारा भावों को प्रकट करना :–

मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति कलाओं के द्वारा ही करता है। अतः जो कला मानव के भावों को अधिक से अधिक प्रकट करें वही कला सर्वश्रेष्ठ कला कहलाती है। वास्तुकला में किसी भी भवन के निर्माण में नक्शे व योजनाओं की आवश्यकता होती है। इसलिए वह स्थूल रूप धारण करती है। मूर्तिकार मूर्ति में अपने भावों को उतार सकता है।

चित्रकला में रंगो व रेखाओं के माध्यम से काफी भावों को चित्रकार अपने चित्रों मे प्रकट कर सकता है। परन्तु काव्य व संगीत एक ही समय में भिन्न–भिन्न भावों को प्रकट कर सकते है। इस प्रकार काव्य व संगीत दोनो ही समान रूप से भावाभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम है। काव्य का प्रभाव केवल शिक्षित लोगों पर ही पड़ता है। जबकि संगीत कला का प्रभाव जड़–चेतन दोनों पर समान रूप से पड़ता है। अतः सभी कलाओं में संगीत कला का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

संगीत की सर्वोच्चता के पक्ष में शेपन हार्क ने कहा है कि

“Music is the highest art which gived us a bandon, where the will to live is linked it is the vehiate of religious and mistrical experience.[1]

वाल्टर पेटर ने कहा है की जितनी भी कलायें है वे सभी संगीत की ओर उन्मुख है।[2]

---

1. मृत्युंजय शर्मा ‘संगीत मैनुअल‘ पृष्ठ संख्या 169
2. ..... वही पृष्ठ

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत विश्व का प्राचीन तथा श्रेष्ठतम संगीत रहा है। भारतीय संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि यहाँ बाहय व आंतरिक दोनों ही प्रकार के सौन्दर्य का समान रूप से विकास हुआ है। भारत में प्राचीन काल से ही संगीत का महत्व अधिक रहा है। हमारे सन्त कवियों व ऋषि–मुनियों ने संगीत को आध्यात्मिक व मानसिक विकास का साधन बताया है।

संगीत कला का प्रभाव जड़ व चेतन दोनों पर ही समान रूप से देखा गया है। भारतीय संगीत का संबंध मानव के चरित्र, धर्म, संस्कृति तथा कला आदि के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। संगीत कला का उद्वेश्य मानव को अलौकिक आनन्द की प्राप्ति कराना है। संगीत मन को शान्ति, आनन्द और प्रेरणा प्रदान करता है। संगीत कला के अन्तर्गत नवीनता की शक्ति का वास होता है।

संगीत के द्वारा मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है। संगीत द्वारा भौतिक तथा आध्यात्मिक, लौकिक तथा अलौकिक आनन्द प्राप्त करने तथा प्रदान करने की जितनी शक्ति संगीत में है उतनी शक्ति अन्य किसी भी कला में नहीं हैं। स्वर तथा लय का इतना सशक्त प्रभाव होता है कि सभी इसके आनन्द में लीन हो जाते है। संगीत में दिव्य शक्ति का वास बताया गया है। संगीत एक दूसरे को छूता है। संगीत को विश्व का नैतिक विधान कहा गया है।

यह विश्व को दिव्य सौन्दर्य प्रदान करता है। संगीत मानव मस्तिष्क में नवीन रंग और भावनाओं में रंगीन उड़ान की नयना भिराम सुषमा एवं निराशा के प्रांगण में आनंद प्रवाहित करता है, तथा विश्व के प्रत्येक पदार्थ में जीवन और उत्साह के अभिनव स्फुरणों को मुखरित करता है। संगीत का अन्य कलाओं जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य कला व काव्यकला आदि, इन सभी कलाओं के साथ संगीत का घनिष्ठ संबंध बताया गया है।

&&&&&&&&&&&&

laxhr f’k{kk dk uohu ikB~;Øe

lxhr f'k{kk dk uohu ikB;Øe

वर्तमान परिवेश में राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत शिक्षा की काफी प्रगति हुई है। यहाँ की सभी शिक्षण संस्थाओं में संगीत के शास्त्रीय एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों पर अत्यधिक बल दिया जाता है एवं गायन, वादन तथा नृत्य का अलग–अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है।

किसी भी प्रशिक्षण या शिक्षा के लिए निर्धारित विषयों से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्थित कार्य योजना को ही पाठयक्रम कहा जाता है। राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संचालित शिक्षण संस्थाओं में संगीत विषय का अध्ययन स्नातक एवं अधिस्नातक स्तर पर संबधित विश्वविद्यालयों पाठ्यक्रम के आधार पर करवाया जाता है। यहाँ के प्रमुख विश्वविद्यालयों में कोटा विश्वविद्यालय कोटा, बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली, तथा राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

इन सभी विश्वविद्यालयों में संगीत स्नातक तथा अधिस्नातक स्तर की कक्षाओं के सैद्वान्तिक तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रमों में भिन्नता दिखाई देती है। वर्तमान में इन विश्वविद्यालयों द्वारा संगीत विषय का जो पाठ्यक्रम स्नातक तथा अधिस्नातक स्तर पर निर्धारित किया गया है वह निम्न प्रकार से है।

lxhr ikB;Øe

University of Kota

Syllabus : B.A. Part –I Examination - 2015

Indian Music Paper -Ist

Paper –I " PRINCIPLES OF INDIAN MUSIC"(Vocal & Instrument)

Unit – 1

1. Definition of the following terms : Swar, Shruti, Raga, Varna, Alnkar, Bahutva, Alpatva, Laya, Tala, Gayak, Nayak Kalawant and Avirbhava, Tirobhava Swarsthanniyam

Unit – 2

1. Critical and comparative study of all the ragas prescribed in the practical course. Identification and development of ragas through alaps.

2. Writing of prescribed Talas with Dugun, Tigun and Chaugun of Ektal, Chautal, Trital, Dhamar, Tilwada, Jhumara, Roopak, Teevra and Dadra.

Unit – 3

3. Basic principles of Hindustani Music system given by Pandit Bhat Khande.
4. Elementary knowledge of Rajasthani Folk Music and Folk Instru

Unit4

1- Qualities of a good musical performance

2- Knowledge of the following – Harmony and Melody, Adhunik Alap Gayan, Types of Gamak and Tans.

Unit – 5

1. Comparative study of Hindustani and Karnataka Swar system.
2. Notation writing of songs and gats in the prescribed ragas.

University of Kota

Syllabus: B.A. Part –I Examination - 2015

KNOWLEDGE OF INDIAN MUSIC

APPLIED & GENERAL" (Vocal & Instrumental) I

Paper –IInd

Unit – 1

1 Knowledge of Gram Moorchhana, Rag Lakshanas.

2 Definition of the following – Nad, Sangeet, Aroh, Avroh, Pakad, Vadi Samvadi, Vikrit, and Vakra Swar.

Unit – 2

1- Detailed study of the notation system of Pt. Vishnu Digamber and Pt. Bhat Khande 2. Jatis of Ragas. 3. Utility of Music in life.

Unit – 3

1- Basic Knowledge of the following Natya Shastra & Sangeet Ratnakar

2- Contribution of the following – Pt. Jas Raj, Pt. Bheem Sen Joshi, Pt. Ravi Shankar, Ustad Allahrakha Khan, Ustad Amzad Ali Khan

Unit – 4

1- Use and description of the following instruments–Tanpura, Tabla, Pakhawaj, Sitar, Veena, Harmonium.

2- Elementary knowledge of the following dances – Kathak, Bharat Natyam, Kathakali,Manipuri, Odissi,

Unit – 5

1 Contribution of "Akashavani" "Door Darshan" and "Sangeet Natak Academy" in the propagation of Music.

2 Definition of " That", Ten That of Pt. Bhat Khande (Name and Swaras)

SPRACTICAL VOCAL & INSTRUMENTAL

Theory

Instruction for students offering Instrumental Music.

(Practical – I)

Candidates can offer any one of the following instruments : Violin, Sarod, Guitar, Flute, Israj and Sitar.

1. To the accompaniment of Tabla to play Vilambit and fast Gat with sufficient verities of Todas in Dugun and Chaugun layas in any two ragas from the prescribed ragas. Fast Gat with varieties of Todas and Jhala in any ragas from the prescribed ragas not selected under clause (i)
2. To play Alaps with special practice in Meend Work in any two ragas not selected under (i) and (ii)
3. To play ten verities of Alankars in any two ragas
4. To Play two Gat in ragas composed in roopal and Ektal

Instruction for students offering Vocal Music. (Practical – I

1. To the accompaniment of Tabla to sing a slow Khayal and fast Khayal with sufficient Alaps and Tanas of different Verities in any two ragas form the prescribed ragas.
2. To the accompaniment of Tabla to sing a fast Khayal and one Tarana,(in any rags) with Tanas in any to Ragas from the prescribed Ragas (not selected under clause 1)
3. To the accompaniment of Tabla or Pakhawaj to sing one Dhrupad, one Dhamar in two different ragas not selected under clause 1 and 2 in Dhrupad students are to learn Dugun, Tigun and Chaugaun and in Dhamar Dugun and Chaugun only .
4. To sing ten Varieties of Alankars in any two ragas

University of Kota (B.A. Part-II)

Theory Paper – I – Principles of Indian Music-II

Unit – I

1- Detailed study of the following composition :

Dhrupad, Dhamar, Khayal, Thumri, Tappa, Lakshangeet, Swarmalika, Tarana, Trivat & Chaturang.

2- Use & Description of the following instruments :

Guitar, Violin, Sarod, Flute, Naga Swaram, Tabla

Unit – II

1- Knowledge of the following :

GatJodAlap, Meend, Jamjama, Krintan, Jhala, Gamak.

a. Choral and Orchestral Music

b. Music and fine Arts

Unit-III

General Study of the development of music in the 19& 20 Century.

Basic Knowledge of the following :

(a) Sangeet Chintamani

(b) Sangeet Bodh

(c) Shree Malyakshya Sangeet

(d) Pranav Bharti

Unit-IV

1. 72 melas of Pt. Vyankat Mukhi and 32 That according to the Swars of Hindustan Music of Pt. Bhatkhande.
2. Placement of Shudha Swars on the wire of Veena according to Pt. Ahobal & Pt.Bhatkhande.
3. FolkMusic with special reference to Himachal Pradesh, Punjab, U.P., & Maharashtra.

Unit- V

Shruti & Swarsthan according to Ancient and modern music scholars Bharat & Bhatkhande.

Life Sketch and contribution of the following musicians :

(a) Ustad Amir Khan (B) Ustad Allauddin Khan

(C) Ustad Vilayat Khan (D)Pt. Vinayak Rao Patwardhan

University Of Kota (B.A. Part-II)

Theory Paper-II - Knowledge of Indian Music

Applied & General-II

Unit – I

Working system of Microphone & Loudspeaker

Recording System / Possibilities of Distance Education in Music.

Unit – II

Music Auditorium and its architectural acoustics

Audio visual discipline. / Music & Theater.

Unit –III

1. Basic Knowledge of the following :
Nardiya Shiksha, Vrihaddeshi, Sangeet Darpan

2. General Introduction of Western Musicians :
Bach, Mozart, Beethoven, Schubert

Unit – IV

Voice Culture 'Kaku' and its types in music.

Main Musical forms of Karnataka classical Music

Unit – V

Legends of Indian Classical Music Ameer Khusro, Swami Haridas, Tansen , Sadarang Adarang. Basic principles of Composition and Raag creation.

General study of Haweli Sangeet.

- http://www.uok.ac.in/syllabus.html

University of Kota

INDIAN MUSIC- Pt-III- (Vocal &Instrument) -2015

B.A. Pt-III Examination 2015

Paper- I “Principles of Indian Music”-III

Unit –I

1. Comparative Study of ragas of the prescribed course.
2. To write Theka of following tal in Dugun Tigun & Chaugun:Sooltal Adachautal, panjabi, Dhamar, Teevra, Rupak, Ektal, Jhaptal.
3. Notation : Writing of Composition of prescribed course.

Unit – II

1. Historical study of Rag Classification in details (Matang to Modern period)
2. Qualities of Good Music Listeners.

Unit-III

1. Description of following Gharana’s Agra, Gwalior, Kirana, Senia
2. Utility of Gharana in the present context.

Unit- IV

1. Utility of music in Society.
2. Utility of Music in Therapy.
3. Contribution of woman musicians in the field of music

Unit-V

1 Folk Music with special reference to Gujarat, Madhya Pradesh, Bengal, Assam & Odisha.

2 Qualities of good music performer & performance.

University of Kota
B.A. Pt-III - Examination 2015
Paper- II : Knowledge of Indian Music:
Applied & General"III

Unit-I

1. Importance of composition in classical music and qualities of good composition .
2. Classical music publicity & media.
3. Aim of music education in Univesities.

Unit-II

1. Modern Shuddha Scale of Karnataka & Hindustani Music.
2. 35 types of Karnatak Music tal according to "Panchjati" classification.
3. Major & Minor Scale of Western Music
4. Frequencies of Shuddha notes of Indian & Western Music. & Vikrit

Unit –III

1. Contribution of the following artists:Pt. Nikhil Banarjee. Pt. Omkar Nath Thakur, Ustad Ali Akbar Khan. Pt. S.N. Ratanjankar
2. Impact of Rajasthani Folk Music on Classical Music.
3. Professional dimensions of music.
4. General study of Ravindra Sangeet.

Unit-IV

1. Utility of time theory
2. Raga & Rasa.
3. Ragang classification of Pt. Narayan Moreshwar Khare.
4. Raga & Ritu.

Unit-V

1. Classification of musical instrument.
2. Application of music in education.
3. Career for students offering music.

PRACTICAL- I

Ragas Prescribed :

1. To sing/ play slow Khyal gat and a fast Khyal gat of the candidate choice.
2. To sing/play slow Khyal./gat of examiner's choice.
3. To sing/play fast Tarana/gat of examiner's choice.
4. To sing a dhrupad or Dhamar with Layakaris / Alap with special practice
   a. in meend. Gamak, Krinatan, Zazama.
5. To play Thekas on Tabla.
6. Tunning of Instrument Tanpura/Sitar.
7. To sing/play given combinations or recognize etc.

Ragas prescribed :

Jaijaiwanti, Purvi, Patdeep, Marva, Puriya, Bihag, Jounpuri, Shudha Sarang, Sudha Kalyan,

Gaud Malhar, Bhairavi.

1- To the accompaniment of Table to sing slow & drut khayal with sufficient varieties of a. Alaps and Tans in any four Ragas.

2- To sing drut khyals in any four ragas not selected under Clause I.

3- To sing Dhrupad & Dhamar with sufficient Layakaris in two Ragas not selected a. under Clause I and II

4- To sing a Tarana in any Raga.

Instructions for students offering Instrumental Music:

1- To the accompaniment of Tabla to play slow and fast gat with sufficient alaps & Tans
   a. with variety in any four Ragas from prescribed Ragas.
2- To Play fast gat any four Ragas not selected under Clause I.
3- To play Alaps with special practice in meend, krintan, Gamak, Jamjama in any
   a. two Ragas. Not selected under Clause I and II
4- To play three gat in any Raga Composed in Roopak Jhaptal, Dadara & Ektal.

Common Instructions:

1. To play Thekas on Tabla of the following Talas, Choutal. Jhumara, Tilwada.
2. Practice of Tunning of the Instrument which offered.

PRACTICAL –II (Vocal & Instrumental)

Prescribed Ragas (Vocal & Instrumental) – Basant, Bahar, Todi, Multani

(a) Stage performance (Vitambit & Drut Khayl/Vuitambit & Drut Gat of student's choice with Alap & Tan)

(b) Drut Khayal/Drut Gat with Alap and Tan of Examiner's Choice.

(c) Comprative Study of Ragas

University of Kota

M.A (Previous) Examination - 2015

Paper – Indian Music

Paper –Ist : PRINCIPLES OF MUSIC

Unit-I

Shruti, Swar, Types fo Scales, Diatonic, Chromatic Equally tempered etc. Shruti Swar discourse of Bharat, Shrangdev and Ahobal.

Unit-II

Views of Pt. Bhatkhande, Pt. Omlkar Nath Thaku and Lalit Kishore Singh on Shruti Swar and Scales. Modern Shudha scale of Hindustani and Karnataka Music.

Unit-III

General idea of the forms of Music.

General idea of Geeti and Vani

Chief characteristics of different Gharanas of Vocal and Instrumental Music.

Unit –IV

Impact of Folk music on Classical Music and Vice-versa,

Main Musical Instruments and classical composition (Music form) in Karnatak Music. Technique and presentation of Vrinda Vadan and Varinda Gana. New Trend and characteristics of Modern Indian Vrinda Vadan and Varinda Gana

Unit-V

General idea of Rabindra Sangeet. Western Scales (Ancient and Modern). Division of a scale scording to the number of severts and cents in a scale.

Paper-II

History of Indian Music

Unit-I

Evolution and development of Indian Music during ancient, medieval and modern ages with special reference top the works of Bharat Matang narad (Sangeet makarand) Sharangdev Lochchan, Ramamatya, Ahobal, Bhavbhatt, Vyankatmukhi, Pt. Bahtkhande and Pt. Vishnu Dugamber Paluskar.

Unit-II

Origin of Music. Evolution and growth of the Various musical forms, Gram Ragas, Bhasha and vibhasa.

Unit-III

Historical evolution of Pakhawaj, Veena, Sitar, Sarod, Tabla and Flute. General Idea of the factors that differentiate Karnatak Music and Hindustani Music.

Unit-IV

Special Study of the Trinity. Evolution of Indain and Western and Western Notation system.

Unit-V

Efforts for development of the art of music by various Institutions and Artists in the post & - independent era in the field of teaching performance and writing.

Paper –III & IV – Practical (Vocal and Instruments)

Paper-III and IV (Practical)

(a) Raga of Examiner's Choice (Slow khyal/gats)

(b) Ragas of Examiner's Choice etleast two fast Khyals/gats

(c) Alap in two Ragas

(d) Singing of Dhrupad etc.

OR

Four Gats Composed in Tals other than trital

(e) Tunning of Tanpura or Instrument one offer.

Paper-IV

(a) Notation
(b) Comparative and Critical study of ragas (Vivo-Voce)
(c) Stage performance

Paper-III and VI (Practical)

Compulsory Group: Yaman, Ahaiya Bilaval, Bageshwaro or Jaijawanti, Darbari Kanhada, Brindavani Sarang.

Optional Group

(i) Shyam – Kalyan, Puria – Kalyan, Jait –Kanlyan Hansdhwani
(ii) Yamini- Bilawal, Devgiri Bilawal, Kukubh&Bilawal Sarparda- Bilwal.
(iii) Jhinjoti, Rageshri, Narayani, Khambavati, Malgunji.
(iv) Jogia, Vibhas (Bhairav-Ang) Gunakri (Bhairav-Ang) Basant-Mukhari.
(v) Lalit, Puriya, Bhatiyar, Pancham.
(vi) Nayaki-Kanhada, Sugharai-Kanhada, Abhogai-Kanhada, Shahana-kanhada.
(vii) Shudha-Sarang, Madhymad Sarang and Lanka Dahan Sarang.
(viii) Kedar, Maluha – Kedar, Hemant, Sarswati.

University of Kota
M.A. (F) Indian Music2015

Paper V- Voice Culture and Philosophy of Music

Unit-I

1. Anatomy and Physiology of throat and ear. Human voice and its technique,
2. Elementary theory of sound-Its Production and propagation.

Unit-II

1. Art and Concept of beauty. Place of music in fine arts.
2. Application of general principles and ideas of aesthetics in music.

Unit-III

1. Music as the embodiment of the spirit of Indian Art and culture.
2. Art appreciation and music Listening

Unit-IV

1. Music and Religion. Emotional experience in life through Music.
2. Function of Music. Pictorial aspect of music.

Unit-V

1. Role of music in Indian philosophy. Concept of music in western world. Raga and Rasa.
2. Aesthetic experience through the art of music.

University of Kota
M.A. (F) Indian Music2015
Either paper VI (I)- Psychology of Music

Unit-I

Relation of Psychology with Music

Definiation and Scope of psychology

Unit-II

Applications of music in Educational Psychology,

Socio-Psychology

Abnornal Psychology and Industrial Psychology

Unit-III

Emotional Integration through music

Mind and music

Taste in music. Sensation hearing in music

Unit-IV

Attention--Role of Interest in Attention (Music)

Feeling, Emotion and Appreciation of music

Imagination and creative activity of music

Unit-V

Learning (music) Importance of heredity and environment in music.

Musical aptitude tests.

University of Kota

M.A. (F) Indian Music2015 Paper VI (II)-

Comparative Study of Music of VariousCountries

Unit-I

Comparative study of musical scale of Europe, China, Japan and Jawa.

Unit-II

Forms of the music of Europe, Japan, Arabia, Persia, America and India.

Unit-III

Three dimensions' of European Music Tone and Harmony.

Unit-IV

System of notations of Ancient Greece and modern Europe.

Unit-V

Evolution of Orchestral music from the Greek period to the modern times.
European Instruments.

Paper VII – Essay on Any Musical Subject/ Stage Performance/Dissertation .

Paper VIII Practical : (Lasting for 1½ hrs. per candidate)

(a) Question of Khayals of Gats (slow) candidate will be required to sing/play two slow Khayal/Gats of Examiner's choicethere shall be no "choice Raga" of the candidates in VIII Practical.

(b) Question of Khayal /Gats (Fast) Two

(c) Alaps in two Ragas 20 Marks

OR

Four Gats composed in Tals other than Trial

N.B. : The Practical paper will be set at the spot by the Board of Examiner in consultation with the internal Examiners.

Paper IX Practical :

Extempore composition from the given songs on new pattern

(a) Viva General awareness of the subject

(b) Comparative and Critical study of Ragas

N.B. : The Practical paper will be set at the spot by the Board of Examiner in consultation with the internal Examiners.

Syllabus for paper VIII and IX (Practical)

Compulsory Group : :

Marva, Bhairav, MianKiMalhar, Bihag, Malkons and Todi

Optional Group :

(a) AhirBhairav, BairagiBhairav, Nut Bhairav, Anand Bhairav Sourashtra Bhairav, Shivmat Bhairav.

(b) Gauri, LalitaGauri, Jaitashri, Triveni, Purvi

(c) Jog, Jogkons, Chandrakauns, KaunsiKahada

(d) Sur Malhar, RamdasiMalhar, JayantMalhar, NatMalhar, MeghMalhar.

(e) Hanskinkini, Patdeep, Madhuvanti, Kirvani, Bhrwa, Sindura.

(f) Gujari Todi, BilaskhaniTodi, Bhupal Todi, Saragavarali, Multani.

(g) Nand, Bihagada, NatBihag, MaruBihag, Savani (Bihag Ang)

(h) Deshi, Khat, Devgandhar, Gandhari, KomalRishabh Asavari.

University of Rajasthan
B.A. Part –I Examination - 2015

Paper –Ist Indian Music

Unit – I

1. Definition and explanations of the following terms : Ragalapa at Roopkalap, Bahuta and Alpatva Avirbhav and Tirobha Swasthan Niyam.

2. Critical study of all the Ragas, Identification and development of Raga through Alaps.

Unit – II

1. Important and Basic rules regarding Hindustani Music.

2. Writing of the prescribed Talas, writing of different types of Layakaris Dugun, Tigun, Chaugan, Dhamar, Kharva, Triral, Jhaptal, Ektal, Chautal, Dabra.

Unit –III

1. Explanation of the following terms :

2. Harmony and Melody, Adhunik Alap Gayan, Notation writing of Composition Gats in the prescribed Ragas.

University of Rajasthan

B.A. Part –I Examination - 2015

Paper –IInd Indian Music

Unit – 1

1. Definition of Gram, Moorchana, Rag Lakshanas, Nayak, Gayak Kalawant and Gandharava, Adat, Jigar Hisab, Varieties of Gamak Tanas.

2. Detailed study of the Notion system of Pt. Vishnu Digamber and Bhatkhande. Elementary knowledge of staff Notation.

Unit – II

3. Contribution of the following :
Jaideo, Sharangdev, Swami Haridas, Amir Khusro, Tansen, Pt. Vyankat Makhi.

4. General study : Development of Music from 13th to 18th century with special reference to :
(a) Religion Muisc (b) Musical Compositions
(c) Musical Instruments.

Unit –III

Classification of Instruction :

1. Use and description of the following instrument :
Tabla, Sitar, and Sitar Tanpura, Elementary knowledge of the following dances : Khatak, Bharat Natyam, Katha kali and Manipuri.

University of Rajasthan

B.A. Part –II Examination - 2015

Paper –Ist Indian Music

Unit – 1

3. Shruti and Swarsthanas according to Bharat and Pt. Bhatkhande. Placement of Shudha swaras on the wire of veena according to Pt. Ahobala, Pt. Bhatkhande. Comparative study of the swaras of North and South Indian Music.

Unit – II

(a) Different types of laykaris such as Dugun, Tigun, Chaugun, and Chhagun.
(b) To write the thekas of the following talas : Dhamar, Tilwada, Ektal, Chutal, Rupak Tal, Punjabi Tal, Sooltal, Jhumra, Tivra.
(c) To write the following talas in Dugun, Tigun and Chaugun.
(d) Critical and comparative study of the ragas prescribed for practical course.

Unit –III

2. Gat, Jhala, Ghasit Job-alap. Zamzama and Krantan, Meend and Gamaka.
3. Notation writing.
4. Writing of Alaps and Tanas in and todas different Ragas.
5. Recognition of Ragas from given notes and writing of Alaps showing : “Nyas” on some given Swaras.

University of Rajasthan

B.A. Part –II Examination - 2015

Paper –IInd Indian Music

Unit – I

1. Modern Shudha Scales of Karnatak and Hindustani Music.
2. Major and Minor Scales of Western Music.
3. History of Indian Music in the Nineteenth and Twentieth Century.

Unit – II

1. Frequencies of the Music.
2. Classification of Ragas according to Raga-Ragini Paddhati.
3. Life sketches, contribution and style of the following musicians : Allauddin Khan, Amir khan, Kesar Bai, Kerkar Pt. Onkar Nath Thakur, Heerabai Barodkar.

Unit – III

1. Theory of Mela and Janya ragas and 72 Melas of Pt. Vyankeatmakhi. 10 Thatas of Bhatkhande, 332 Thatas according to the Swaras of Hindustani Music.
2. A short essay on any subject of general musical interest.
3. Use and description of the following instruments palchawai, Veena, Dilruba and flute.

- http://uniraj.ac.in/syllabi/sylmainb.htm

University of Rajasthan

B.A. Part –III Examination - 2015

Paper –Ist Indian Music

Unit – 1

1- Rag and Rass

2- Comparative study of different Gharanas of Vocal and Instumental.

3- Music & Religion.

Unit – II

1. Life sketches and contribution of following musicians :
   Abdul Karim Khan, Panna lal ghos, Ustad Bismillah Khan, Pt. Ravi Shankar, Smt. Manik Verma, Bade Gulam Ali Khan.
2. Folk instruments of Rajasthan.
3. Forms of Indian Music.
4. Forms of Classical Music in Karnataka Music.

Unit –III

6. Writing of Notation of different compositions in prescribed Ragas.
7. Writing of Alaps and Tanas Todas in different Ragas.
8. Recognition of Raga from given notes and writing of Alapas showing “Nyas” on some given swaras.
9. Writing of Thekas with different layakaris Dugen, Tigun, Chaugan and Chhagen in the following Talas –

   Tilwada Tal, Dhamar, Trtal, Jhaptal, Ektal, Chautal, Roopak Tal, Dabra, Punjabi, Sooltal, Jhoomra, Adachautal, Tivra, Deepchandi and Brahmatal.

University of Rajasthan

B.A. Part –III Examination - 2015

Paper –IInd Indian Music

Unit – I

4. Origin of Music
5. Study of the works of Matang, Bharat, Sharangdev, Vishnudigambar Paluskar and Bhatkhande.
6. Shruti Swar and types of Scales Diatonic, Chromatic, Equally tempered etc.

Unit – II

1. General ideas of the forms of Vedic music.
2. General ideas of Giti and Vani
3. Impact of Folk music on classical music and Vice-versa.

Unit – III

1. General ideas of the Rabindra Sangeet.
2. Essay of General music interest.
3. Description and use of the following instruments – Sitar, Sarangi, Sarod, Santoer and Isrraj.

- http://uniraj.ac.in/syllabi/sylmainb.htm

University of Rajasthan

M.A (Previous) Examination - 2015

Paper – Indian Music

Paper –Ist : PRINCIPLES OF MUSIC

1. Shruti , Swar and Types of Scales, Diatonic, Chromatic, Equally tempered etc. Shruti , Swar Discourse of Bharat. Sharangdev, Ahobal, Pt. Bhatkhande, Pt. Onkar Nath Thakur and Lalit Kishor Singh.
2. Hindustani and Karnatak Musical Scales Modern Division of a scale according to the Number of server and cents in a scales. Western scales (Ancient and Modern).

   General ideas of the forms of Vedic music.
   General ideas of Giti and Vani
3. Study of style involved in different schools or Gharanas of Vocal and Instrumental Music.
   Impact of Folk music : Classical Music and Vice-Versa. General Characteristics of Folk Music with reference to Rajasthani Folk Music.
4. Main Musical instruments and classical composition (musical form) in Karnatak Music.
5. Technique, presentation and exposition of Vrinda-vadan and Vrinda Gana.
6. New trends in Indian Varinda vadan and Vrinda Gana. Harmonic and Melodic Music.

Study of the following Musical forms :

Hamophony and polyphony. Ecclesiastical Scales.

Authentic and Plegal modes chorde, counter points symphony general ideas of Rabindra Sangeet.

Paper –IInd : History of Music

1. Evolution and development of Indian Music during Ancient, Medieval and Modern ages with special reference to the work of : Bharat, Matang Narad (Sangeet Markarand) Sharangdev, Lochan, Ramamatya, Ahobal, Bhavbhatt, Vyankatmakhi, Pt.Bhatkhande, Pt. Vishunu Digambar Paluskar,
2. Historical Evolution of the musical scales of India from ancient to Modern times.
3. Evolution and growth of the various musical forms Gram Ragas, Bhasha and Vibhasha.

   Historical Evolution of Pankajwaj, Veena, Sitar, Sarod, Tabla, and flute, General idea of the factors that differentiate Karnatak Music and Hinsustani Music
4. Special study of the Trinity of Music :

   The Evolution of Indian and western Notation System Efforts for development of the art of the Music by Various institutions and artist in the Post independence Era in the Field of training. Performance and writing.

Paper –IIIrd & IVth : Practical

(a) Choice Rag
(b) Question Rag (Slow Khayal of Gat)
(c) Question Rag in two fast khayal, of Gat
(d) Alap
(e) Singing one Dhrupad, Dhamar Etc.

Paper –IVth : Practical

(a) Notation writing of any Song or Gat (Record)
(b) Viva voce pertaining to general question on Rag (Laya and Tal)
(c) Comparative and critical study of Rag.

University of Rajasthan

M.A (Final Examination - 2015

Paper –V-Voice Culture and Philosophy Of Music

Anatomy and philosophy of Human throat and ear. Human voice and its techniques.

Paper –V-Voice Culture and Philosophy Of Music

Voice Culture.

Elementary theory of sound – Its production and propogation

Place of music in fine arts.

Applications of General Principles of aesthetics to music aesthetic ideals in music.

Music as the embodiment of the spirit of Indian Culture and ideals of arts.

Art appreciation and music listeners.

Music and religion.

Emotional experience in life through music.

Functions of music.

Pictorial aspect of Music.

Role of music in Indian Philosophy.

Concept of music in western world.

Raga and Rasa.

Aesthetic experience through the art of music.

Paper –VI- Psychology of Music

Relation of psychology with music.

Definitions and scope of psychology.

Application of music in Educational psychology., Social psychology,

Abnormal psychology And Industrial psychology.

Emotional integration through music.

Mind and Music.

Taste in Music.

Sensation, Hearing in music.

Feelings, emotion and appreciation of music.

Attention, Role of Interest in Music.

Imagination and creative activity in music. Learning (Music)

Imagination of heredity and environment in music. Musical aptitude tests.

Paper –VI- Comparative Study of Music of Various Countries.

1.Comparative Study of Music scale of Europe, China, Japan and Jawa.

2. Forms of the music of Europe, Japan, Arabia, Persia and American Indians.

3. Three dimensions of European music Tone and Harmony.

4. System of notations of Ancient Greek and Modern Europe.

5. (a) Evolution of orchestral music from the Greek period to the modern times.

(b) European Instruments

Paper VII- Essay on any Musical Subject :

Stage Performance/Dissertation.

Paper VIII and IX (Practical)

(a). Choice Rag

(b) Question of Khyal or Gat (slow)

(c) Question of Khyal or Gat (fast)

(d) Alap

(e) Dhrupad or Dhamar

Or

Four Gats composed in Tals other.Than Trital

- http://uniraj.ac.in/syllabi/ug&pgannual_syllabus_

BANASTHALI VIDYAPITH

M.A. Music - First Semester : Paper-I

Principles of Music – Part-I

Section –I

Shruti – Swar, discourse of Bharat, Ahobal, Pundarik Vitthal, Somnath , Ramamatya, Sharangdev, Lochan, Pt. Bhatkhande, Omkar Nath Thakur, K.C.D Brahaspati.

Section-II

a. Detailed study of Karnatki Taal Paddhati - main 7 Taals, Formation of 35 Taal on the basis of change in Matras of “Laghu”
b. Voice culture

Section –III

Western scales, Diatonic, Chromatic and equally tempered scale.

First Semester :

Paper-II – History of Music – Part-I

Section –I

(a) Origin of Music and Vedik Kalin Sangeet
(b) Historical evolution of Pakhawa, Veena, Flute and Sarangi.

Section-II

Evolution and development of Indian Music during Ancient, Medieval and Modern ages, with special reference to works of Bharat, Matang, Narad,

(Sangeet Makarand), Sharangdev, Lochan, Ramanatya, Ahobal, Bhavabhatt, Vyankatmakhi, Pt. Bhatkande and Pt. Vishnu Digamber Paluskar.

Section –III

a. Historical evolution of the Music scales of Indian from ancient to modern times.
b. Evolution and growth of various musical forms, Khyal, Kriti, Tarana and Tillana.

First Semester : Paper-III – Practical Comparative Study of Ragas –I

(a) Choice Rag
(b) Question Rag (Slow Khayal or Gat)
(c) Question Rag (Fast Khayal or Gat)
(d) Critical and comparative study of the prescribed Ragas.
(e) Singing one Dhrupad/ Dhamar etc.
Playing Basic Thekas on Tabla
Or
Gats composed in tals other than Tria

First Semester : Paper-IV – Stage Performance –I

One Vilambit and Fast Khayal or one Masitkhani or Rajakhani Gat Should be prepared from the list of Ragas.

Any Raga may be selected from the practical course for the paper.

1. Performance of Raga of candidates own choice lasting approximately for 30 minutes.

First Semester : Paper-III-IV – Stage Performance –I

List of Ragas :

1. Yaman 2. Shyam-Kalyan 3. Pooriya Kalyan
4. Hansdhwani 5. Alhaiya Bilawal 6. Yamini Bilawal
7. Devgiri Bilawal 8. Bhairav 9. Jogia 10. Viba
11. Gunkari 12. Basant Mukhari 13. Kedar 14. Hemant

BANASTHALI VIDYAPITH

M.A. Music

Second Semester :

Paper-I – Principles of Music – Part-II

Section –I

(a) Definition and Explanation of Tal, Laya Matra, Vibhag, Das Pran of Taal.

(b) Swar – Prastar (Meru-Khand)

Section –II

(a) Technique , presentation and exposition of Vrinda Vadan and Vrinda Gana.

(b) New Trends in Indian Vrinda Vadan and Vrinda Gana.

(c) General idea of Ravindra Sanfeet.

Section –III

(a) Elementary theory of Sound, its production and propagation.

(b) Analysis of sound

a. Characteristics of Musical Sound
b. Noises and Musical Sound.
c. Pitch, Timber, Volume.

(c) a. Acoustics of an auditorium and concert hall.

b. Definition of echo reverberation, resonance.

Paper-II – History of Music – Part-II

Section-I

(a) General idea of the factors that differentiated Karnatak Music and Hindustani Music.

(b) Special study of the Trinety of South Indian Music.

Section-II

(a) The Evolution of Indian and Western Notation System.

(b) Importance of present day electronic gadget in the field of Indian Music.

Section-III

(a) Origin and development of Gharanas in Hindustani Music.
Role of Gharanas in development and presentation of Music.

(b) Relevence of Gharanas in present age and the study of important Gharanas of Vocal Music and Instrumental Music.

Paper-III – Practical Comparative Study of Ragas –II

(a) Choice Rag

(b) Question Rag (Slow Khayal or Gat)

(c) Question Rag (Fast Khayal or Gat)

(d) Critical and comparative study of the prescribed Ragas.

(e) Singing one Dhrupad/ Dhamar etc. Or
Gats composed in tals other than Trial

Paper-IV – Stage Performance –II

One Vilambit and Fast Khayal or one Masitkhani or Rajakhani Gat Should be prepared from the list of Ragas.

Any Raga may be selected from the practical course for the paper.

2. Performance of Raga of candidates own choice lasting approximately for 30 minutes.

Paper-III-IV – (Practical)

List of Ragas :

1. Bageshri 2. Darbari Kanhara 3. Nayaki Kanhara
4. Abhogi Kanhara 5. Marwa 6. Bhatiyar 7. Puriya 8. Lalit
9. Jhinijhoti 10. Ragheshree 11. Narayani 12. Suddha Sarang
13. Madmad Sarang 14. Saraswati 15. Hemant

BANASTHALI VIDYAPITH

M.A. Music-Third Semester :

Paper-I – Aesthetics and Culture of Music – Part-I

Section –I

(a) Art and concept of Beauty.
(b) Application of general principles and ideals of Aesthetics in Music.

Section –II

(a) Place of Music in Fine Arts.
(b) Interrelationship of Fine Arts.

Section –III

(a) Pictorial aspect of Music

Paper-II – Psychology of Music – Part-I

Section –I

(a) Psychology and its scope
(b) Relation of Psychology with Music.

Section –II

(a) Application of general ideas of Music in Educational, Child and social psychology

(b) Application of general ideas of Music in Abnormal & Industrial psychology and Therapy.

Section –III

(a) Learning and its application in Music.
(b) Memory, Imagination and creativity in Music

Paper-III – Practical Comparative Study of Ragas –II

(a) Choice Rag
(b) Question Rag (Slow Khayal or Gat)

(c) Question Rag (Fast Khayal or Gat)
(d) Critical and comparative study of the prescribed Ragas.
(e) Singing one Thumri/ Dadra etc.

Or

Gats composed in tals other than Trital

Paper-IV– Stage Performance –III

One Vilambit and Fast Khayal or one Masitkhani or Rajakhani Gat Should be prepared from the list of Ragas.

Any Raga may be selected from the practical course for the paper.

1- Performance of Raga of candidates own choice lasting approximately for 30 minutes.

Paper-III-IV – (Practical)

List of Ragas :

1. Bihag 2. Nand 3. Bihagda 4. Marubihag
5. Kalawati 6. Patdeep 7. Kirvani 8. Miyan Malhar
9. Megh Malhar 10. Ahir Bhairav 11. Bairagi Bhairav
12. Nat Bhairav 13. Multani 14. Madhuwanti

BANASTHALI VIDYAPITH

M.A. Music

FOURTH SEMESTER :

Paper-I – Aesthetics and Culture of Music – Part-II

Section –I

(a) Function of Music

(b) Role of Music in Indian culture with special reference to Philosophical and devotional aspect of Music.

Section –II

(a) Concept of Music in Western World.

(b) Art Application and taste of Music listeners.

Section –III

Rag & Ras

Paper-II –Psychology of Music – Part-II

Section –I

(a) Sensation, Hearing in Music : Anatomy & Physiology of human ear & throat

(b) Musical aptitude test.

Section –II

(a) Importance of Heredity and Environment in Music.

(b) Role of Interest and attention in Music.

Section –III

(a) Psychology of Musician.

(b) Aesthetic appreciation : sensitivity to artistic styles.

Paper-III – Practical Comparative Study of Ragas –II

(a) Choice Rag

(b) Question Rag (Slow Khayal or Gat)

(c) Question Rag (Fast Khayal or Gat)

(d) Critical and comparative study of the prescribed Ragas.

(e) Singing one Thumri/ Dadra etc.

Or

Gats composed in tals other than Trital

Paper-IV – Stage performance –IV

One Vilambit and Fast Khayal or one Masitkhani or Rajakhani Gat Should be prepared from the list of Ragas.

Any Raga may be selected from the practical course for the paper.

2- Performance of Raga of candidates own choice lasting approximately for

Paper-III –IV (Practical)

List of Ragas :

1. Malkauns 2. Jog 3. Jog Kauns 4. Chandra Kauns

5. Kaunsi Kandra 6. Todi 7. Gujri Todi 8. Bilaskhani Todi

9. Bhupal Todi 10. Poorvi 11. Shree 12. Basant

13. Desi 14. Komal Rishabh

lxhr dyk dh lt'ukRedrk ,o lkekftd ¼ljkdkj½

संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांगीतिक व सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है। यह प्राचीन काल से ही जन–जीवन के आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है।

^xhre ok|e rFkk uR;e =;a lxhr ePpr^A[1]

अर्थात गायन, वादन, तथा नृत्य इन तीनों ही कलाओं के समावेश को संगीत कहा गया है। संगीत प्रकृति के कण–कण में समाया हुआ है। संगीत की भावात्मक एकता आत्मीयता एवं बन्धुत्व का प्रतीक मानी जाती है। संगीत विश्व में व्याप्त एक ऐसा स्नेह सूत्र है जिसके द्वारा मानव ही नहीं अपितु पशु–पक्षी एवं वनस्पती को भी अपनी और आकर्षित करने की शक्ति रखता है।

संगीत रचना के सम्पूर्ण नियमों को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता हैं परन्तु वह रचनाकारों की प्रतिभा, ज्ञान, अनुभव व स्वभाव आदि पर निर्भर होता है। 'संगीत की परिभाषा देते हुए स्व0 श्री रवीनद्रनाथ ठाकुर ने कहा है 'जहाँ साहित्य का अन्त होता है, वहीं से संगीत का प्रारम्भ होता है।[2] कोई भी कलाकार अपनी कला का निर्माण कल्पना शक्ति के द्वारा ही करता हैं। क्योंकि संगीत कला पूर्णतया कल्पना शक्ति पर ही आधारित होती है।

कल्पना शक्ति एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा कलाकार अपने अनुभव के आधार पर नवीन रचनाएँ करता है तथा कलाकार अपनी मनोवृत्तियों, इच्छाओं व भावनाओं को कल्पना से सजाकर संगीत के मधुर स्वरों द्वारा ही प्रकट करता है।

1. प्रो0 हरिशचन्द्र श्री वास्तव 'संगीत निबन्ध संग्रह' पृष्ठ संख्या 94
2. प्रो0 हरिशचन्द्र श्री वास्तव 'संगीत निबन्ध संग्रह पृष्ठ संख्या 114

वास्तव मे कलाकार के हृदय को आनन्द प्रदान करने वाली शक्ति के द्वारा ही वह संगीत में नवीनता का भाव प्रकट करता है। विज्ञान की नई–नई खोजे भी कल्पना शक्ति के द्वारा ही की जाती है। मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र कल्पना शक्ति पर ही आधारित होता है। संगीत के क्षेत्र में तो कल्पना शक्ति का और भी महत्व बढ़ जाता है। क्योंकि (गायन, वादन, नृत्य) इन सभी में कल्पना शक्ति के बिना नवीनता प्रकट नहीं की जा सकती है। सृजनात्मक नई–नई भौतिक वस्तुओं की रचनाओं से सम्बन्धित होती है, जिसके द्वारा ही विभिन्न मूल्यवान चीजों का जन्म होता है।

प्रसिद्व मनोवैज्ञानिक जेम्स ड्रेवर ने मनोविज्ञान शब्दकोश में कहा हैं कि सृजन शब्द को आवश्यक नई वस्तु के बनाने, रचनात्मक कल्पना जहाँ विचारों या कल्पना के नये–नये रूप बनाए जाए इस रूप में परिभाषित किया है।[1]

सी. श्योर ने भी कल्पना में सृजनात्मक शक्ति के महत्व को स्पष्ट किया है। रचनात्मक कार्य में कल्पना आवश्यक रूप से होगी, इसलिए इन्होने कल्पना को रचनात्मक व सृजनात्मक शक्ति को द्योतक बताया है।[2]

संगीत के क्षेत्र में जब कल्पना के महत्व पर अधिक जोर दिया जाता है। तो तीन पक्ष उभरकर सामने आते है :– कला, कलाकार, कल्पना के माध्यम से ही सौन्दर्य उत्पन्न करता है, एवं अपनी कल्पना में नये–नये रंग भरता है। संगीत के अन्तर्गत वह दिव्य शक्ति है कि मानव व पशु पक्षी अपनी सुध–बुध खोकर मस्त हो जाते हैं। अतः कल्पना शक्ति संगीतकार की योग्यता व उसके अभ्यास और मस्तिष्क की उपज पर ही निर्भर करती है। हर्बटरीड ने कहा है कि :

"Art is nothing but the good Making of Something. It may be sound or thing or image or anything.[3]

---

1. डॉ0 निशि माथुर 'भारतीय संगीत व कलाकार' पृष्ठ संख्या 18
2. .....वही पृष्ठ संख्या
3. डॉ0 निशि माथुर 'भारतीय संगीतव कलाकार' पृष्ठ संख्या 19

राग की रचना करते समय रचनाकार की कल्पना का एक अपना रूप होता है। नवीन राग रचना के समय रचनाकार की कल्पना उस राग के विशाल सागर की ओर आकर्षित हो जाती है व उसी में नये–नये रूप प्रकट होते जाते है। कल्पना के द्वारा ही हमारे संगीत विद्वानों ने नये–नये रागों का निर्माण किया है। जैसे राग के कोमल निषाद को शुद्व निषाद करके चन्द्रकौंष राग बनाया जा सकता है। मुल्तानी राग में रिषभ और धैवत को शुद्व कर मधुवन्ती राग की रचना की जा सकती है।

भूपाली राग के रिषभ व धैवत को कोमल कर विभास राग की नवीन रचना की जा सकती है। किसी भी राग में गत या बदिंश को बनाने में स्मृति व कल्पना, दोनों का ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक ही राग में हमें कई रचनाएँ प्राप्त होती है परन्तु प्रत्येक रचना में रचनाकार की कल्पना अपना रूप प्रकट कर अपना एक अलग ही विशिष्ट स्थान बनाये रखती है। मुखड़े का उठान, सम का दिग्दर्शन, विश्रांति स्थल, विभिन्न लयों का प्रयोग, स्वर व शब्दों में सामंजस्य राग की विशेष स्वर संगतियों के द्वारा रचना में नवीनता का समावेश हो जाता है।

उदाहरणार्थ राग मारूबिहाग के बड़े ख्याल की बंदिश 'रसिया हो न जा' इसे पंडित भीमसेन जोशी व केसर बाई केरकर जैसे कई गायकों ने गाया है पर सभी गायकों के गायन में भिन्नता दिखाई देती है। क्योंकि कुशल गायक व वादक ही कला को अपनी मौलिकता प्रदान करना चाहता है, और यही मौलिकता उसकी कल्पना शक्ति होती है। कल्पना पूर्व अनुभव से सीखे गये नमूने को एक नये रूप में रखकर नई चींज की सृष्टि करती है एवं समस्त कल्पनाएँ व्यक्तिगत योग्यता एवं शिक्षा पर निर्भर रहती है।

कल्पना की समृद्वता यर्थात और शिक्षा द्वारा इकट्ठे किए गये प्रदत्तों पर निर्भर करती है, और यही कारण है कि संगीत में भी धीरे–धीरे सौन्दर्य की रचना होती रहती है। कोई भी कलाकार अपने गुरू की कला का अनुकरण कर उसमें अपनी कल्पना के द्वारा नवीनता का भाव उत्पन्न करता है। इस कल्पना शक्ति द्वारा ही कलाकार संगीत मे नई–नई बातें पैदा करता है। शास्त्रीय संगीत में आलापचारी का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है, क्योंकि आलापचारी के द्वारा ही हम रागों के स्वरूप दर्शाते है।

राग की रचना करते समय एवं उसको प्रस्तुत करते समय राग में रंजकता उत्पन्न करने वाले सभी गुणों को कल्पना शक्ति के द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता है। कलाकार प्रत्येक राग को आलाप, तान, अलंकार, मींड़ एवं विभिन्न प्रकार की लयकारियों, कण, गमक तथा आंदोलन द्वारा रागों को सजाकर नवीनता प्रकट की करता है।

राग के निर्माण में वर्ण, अंश, ग्रह और न्यास की जानकारी होना बहुत ही आवश्यक है। इनके आधार पर ही श्रुतियों तथा संवाद सिद्वान्त का ध्यान रखते हुए रागों का निर्माण किया जाता है। गीत रचना के संपूर्ण नियमों शब्दों द्वारा व्यक्त करना सम्भव नहीं है। वह रचनाकारों की प्रतिभा, ज्ञान, अनुभव और स्वभाव पर निर्भर होती है। संगीत के विश्व कवि स्व0 श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि जहाँ साहित्य का अन्त होता है वहीं से संगीत का प्रारम्भ होता gSA[1]

lxhr jpuk dk ie[k fl}kUr

1. किसी भी गीत का निमार्ण करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि गीत की बनावट सुंदर व सुडोल होनी चाहिए। अर्थात् गीत में स्वरों और शब्दों का सन्तुलित प्रयोग करना चाहिए।
2. गीतों में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द सरल होने चाहिए, क्योंकि सरल गीत मार्मिक और साधारण दोनों ही गीत श्रोताओं के लिए उपयोगी होते है।
3. कलाकार को गीत की स्वर रचना करते समय आवाज की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये तथा कलाकार को अतितार एवं अतिमंद्र सप्तक में नहीं गाना चाहिये।
4. कलाकार द्वारा एक ही प्रकार के स्वर समूह को बार–बार गीत में प्रयुक्त नहीं करना चाहिए, क्योंकि एक स्वर को बार–बार दोहराने से उसमें नवीनता नहीं रह पाती है।

1. प्रो0 हरिशचन्द्र श्री वास्तव 'संगीत निबन्ध संग्रह' पृष्ठ संख्या 114

5. राग प्रदर्शन की दृष्टि से :—किसी भी राग का प्रदर्शन करना कलाकार की अपनी निजी धरोधर है। कलाकार राग की कल्पना जिस ढंग से करता है उसके अनुसार राग का स्वरूप ही बदल जाता है। हांलाकी राग का मूल आकार एक जैसा ही रहता है परन्तु राग में स्वरों के प्रयोग करने का ढ़ग, आवाज की विशेषता, खटके, मुर्की, गमक आदि का प्रयोग राग के संपूर्ण स्वरूप को प्रस्तुत करने का ढ़ग, शब्द उच्चारण, ताल पक्ष इत्यादि ये सभी बातें राग के प्रभाव को निश्चित रूप प्रदान करती है। जिससे राग में सौन्दर्य के साथ–साथ नवीनता भी प्रकट होती है।

6. पद की दृष्टि से :—किसी भी बंदिश के निर्माण में उसका पद पक्ष सबल होना आवश्यक है। बंदिश में पद साहित्य जितना अच्छा होता है, वह बंदिश उत्तनी ही अच्छी व प्रभावशाली बन जाती है। बंदिश में शब्दों की योजना राग की प्रकृति के अनुरूप ही की जाती है। राग अपने विशिष्ट रूप में तभी सामने आता है जब उसकी शब्द रचना के अनुरूप ही स्वर, ताल और पद इन तीनों का प्रयोग ठीक ढ़ंग से किया जाता है।

7. लय की दृष्टि से :—लय के आधार पर ही हमारे भारतीय संगीत में असंख्य तालों का निमार्ण, ताल के दस प्राणों के आधार पर ही हुआ है। जब कलाकार अपनी कला कृति का प्रदर्शन इन तालों के सम, खाली, ताली, आदि के नियमों का पालन करते हुए प्रयोग करते है तो श्रौता उसको सुनकर के आनन्द में डूब जाते है एवं राग में सौन्दर्य का निर्माण हो जाता है।

8 cfn'k की रचना के आधार पर :—संगीत रचना के प्रमुख तीन तत्व माने गये है। स्वर, ताल और पद इन्ही तत्वों से आज हमारी बंदिश बंधी हुयी है। इसलिए बंदिश की रचना करने के लिए तीन तत्वों का होना आवश्यक है। स्वर की दृष्टि से स्वर का महत्वपूर्ण तत्व स्वर को बताया गया है। राग का स्वरूप जितने अच्छे स्वरों में स्वर बद्व होगा उस राग की बंदिश उतनी ही आकर्षक और सुन्दर बन जाती है।

9 **ताल की दृष्टि से** :—बंदिश के अन्तर्गत ताल का प्रयोग राग की प्रकृति तथा शब्द रचना के अनुरूप ही करना चाहिए, क्योंकि उपयुक्त स्थान पर ताल का प्रयोग करने से बंदिश प्रभावशाली होती है। ताल की विषम मात्रा से अगर बंदिश का उठान हो, और वह लय को काटती हुई चले तो उसका एक नया रूप हमारे सामने प्रकट होता है। अर्थात बंदिश के अन्तर्गत उसकी शब्द रचना के अनुरूप ही ताल का प्रयोग करना चाहिए अन्यथा बंदिश प्रभावशाली नहीं बन पाती है। अतः बंदिश में नवीनता बनायें रखने हेतु उपयुक्त स्थान पर ही ताल का प्रयोग करना चाहिए।

jkxk d feJ.k }kjk lkUn;l mRiUu djuk

संगीत में राग मिश्रण का मुख्य उद्वेश्य संगीत में नवीन रागों की उत्पत्ति करना है। इसी उद्वेश्य को ध्यान में रखते हुए नवीन रागों का निमार्ण किया जाता है। जैसे राग बसन्त बहार में राग बसन्त और बहार दो अलग–अलग रागों का मिश्रण है। परन्तु यह बात गायक व वादक पर निर्भर करती हैं कि वह दोनो ही रागों में से सबसे ज्यादा महत्व, राग प्रदर्शन में किस राग को देता है। सामान्यतयाः गायक या वादक जब राग बसन्त बहार को गाता या बजाता है तो उस राग में केवल राग की ही प्रबलता दिखाई देती है, और उस राग में बहार राग का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। संगीत के क्षेत्र में ऐसा देखा गया है कि मिश्रित राग एवं नवीन राग अप्रचलित रूप में पाये जाते है तथा जिन मिश्रित रागों का स्वरूप कर्णप्रिय एवं मधुर होता है वे ही राग संगीत जगत में प्रचलित होकर अधिक प्रयोग में लाये जाते है।

जैसे बसन्त बहार, मारू बिहाग, जोग, जोगकौंष इत्यादि। रागों का मिश्रण करते समय इस बात का ध्यान रखा चाहिये कि जो भी राग आपस में मिश्रित किए जाते है वे राग एक दूसरे के पोषक होने चाहिये। मिश्रित रागों के लिए

एक ही ठाठ के रागों का चयन कर राग की संरचना सरल एवं सुलभ प्रक्रिया से होना चाहिये।

जब कलाकार किसी भी राग की बदिंश को गा रहा होता है तो वह उस राग से मिलती जुलती राग को गाकर राग में नवीनता उत्पन्न कर सकता है। अर्थात कलाकार राग में आर्विभाव व तिरोभाव दिखाकर राग में सौन्दर्य उत्पन्न कर श्रौताओं को भाव–विभोर कर सकता है। जैसे राग वृन्दावनी सारंग गाते या बजाते समय उसके आरोह में शुद्व मध्यम की जगह यदि तीव्र मध्यम का प्रयोग कर राग को गाया या बजाया जाए तो वह राग वृन्दावनी सांरग से शुद्व सांरग हो जाता है।

ठीक उसी प्रकार यदि मालकौंष राग के कोमल निशाद को यदि शुद्व निषाद करके गाया या बजाया जाए तो वह राग मालकौष राग से चन्द्रकौष राग में बदल जाता है। इस प्रकार रागों में अलग–अलग स्वरों के मिश्रण से रागों में सौन्दर्य उत्पन्न किया जा सकता है।

lxhr ,oa uokpkj

शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का परिचायक माना जाता है। इसकी अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति के अनुरूप ठहरती है। इसमें आध्यात्मिक का सुख का आकर्षण आनन्द प्रकट होता है। इसके आकर्षण में आध्यात्मिक, गम्भीरता व अर्न्तआत्मा की सुन्दर छवि दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण कलाकार की कल्पना शीलता एवं विभिन्न कलाकारों द्वारा किए गए सांगीतिक प्रयोग है।

संगीत में नवीन प्रयोग, कलाकारों की कल्पना शक्ति को माना गया है। क्योंकि कला को सदेव परिवर्तनशील माना गया है। आज के और पुराने संगीत की तुलना में आवाज का लगाव भाव, विषय–वस्तु एवं रागदारी आदि में अत्यधिक परिवर्तन दिखाई देता है, इसलिए सृजनशील एवं रचनाधर्मी संगीतकार सदैव पुरानी लीक से हटकर संगीत में नव सृजन करते आये हैं।

हमारे संगीत विषय में रोचकता, आकर्षण एवं सृजन एक सतत् प्रवाहान जलधारा की भाँति है जो निरन्तर बहती रहती है और संगीत कला को जीवन्त रखती है। संगीत सृजन धर्मी संगीतकार के मन व भावों को मूर्त रूप प्रदान करते है। संगीत कलाकारों को संगीत में नवीनता लाने के लिए सदेव नए–नए प्रयोग करते रहने चाहिए।

आजकल ध्रुपद गायन व तत् वाद्यों में भी नवीनता प्रयोग करने वाले संगीत विशेषज्ञों में जयपुर के सुप्रसिद्व ध्रुपद विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तेलंग एवं उनकी सुपुत्री डॉ. मधु भट्ट तेलंग व प्रों ऋत्विक सान्याल (वाराणसी) आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। जयपुर के सुप्रसिद्व मोहन वीणा वादक पं0 विश्व मोहन भट्ट ने पाश्चात्य गिटार में नवीन तारों का प्रयोग कर उसे मोहन वीणा का स्वरूप प्रदान किया। पंडित जी द्वारा किए गये इस नव सृजन को देश–विदेश में काफी सराया गया है।

सृजनधर्मी संगीतकार मन में भावों एवं मर्म को समझते हैं एवं उसे मूर्तरूप प्रदान करते है तथा मनुष्य के विचारों में निहित नित–नवीनता एवं नूतन के प्रति सहज आकर्षण से ही सम्भव हो सकता है और वो ही संगीत प्रकृति एवं मनुष्य के सबसे करीब रहता है । ध्रुवपद में परम्परागत नियम और बन्धन है और ये नियम उसके भावात्मक एवं उसके कलात्मक रूप में सहायक होने चाहिये न कि उसमें बाधक बनें। ये नियम ध्रुवपद को स्वस्थ और सम्पुष्ट बनाने में सहायता होते है। कलाकार को कभी–कभी संगीत में कुछ नवीनता लाने के लिए नवीन कार्य करते रहना चाहिये।

lekt o lxhr dk lEcU/k

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए ही वह जीवन के विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करता है। समाज में ही उसे अपना नाम, जाति, कुल व धर्म आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। समाज का तात्पर्य व्यक्तियों के उस समूह से है जो किसी भी देश तथा स्थान पर समूह में निवास करते है। समाज में

रहकर ही व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन का विकास करता है। समाज के द्वारा ही व्यक्ति में अच्छे व बुरे गुणों का समावेश होता है। वर्तमान समाज अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। जैसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक आदि।

इन सभी समस्याओं के निरारकण में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे कवियों व सन्तों ने भी धर्म का प्रचार–प्रसार करने के लिए संगीत का ही सहारा लिया तथा संगीत के द्वारा ही समाज में उच्च आदर्शो को स्थापित किया जा सकता है।

संगीत के द्वारा ही समाज में सभ्यता व संस्कृति को संरक्षण प्रदान किया जा सकता है। संगीत को ही मानव समाज की कलात्मक व सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रतीक समझा जाता है। संगीत मानव के चरित्र निर्माण व उसके बौधिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें संगीत विद्यमान न हो। अर्थात जीवन का हर पहलू संगीत से जुड़ा हुआ है।

संगीत के महत्व को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि संगीत जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव समाज से जुड़ा हुआ है। अर्थात जीवन का कोई भी कार्य संगीत के बिना पूर्ण नहीं किया जा सकता है, चाहे वो समाज के मांगलिक कार्य हो या ईश्वर आराधना या फिर युद्व का मैदान, इन सभी में संगीत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है एवं संगीत ही व्यक्ति को मानवता का पाठ पढ़ाता है, तथा समाज में सभ्यता, संस्कृति व विश्व बन्धुत्व की भावना को जागृत करता है।

समाज में संगीत के द्वारा ही प्रेम व भाई चारे की भावना को जागृत किया जा सकता है। समाज में संगीत के द्वारा ही भावात्मक एकता का निर्माण किया जा सकता है। समाज में संगीत के द्वारा ही भावात्मक एकता का निर्माण किया जा सकता है। समाज में संगीत के द्वारा ही भावात्मक एकता का निर्माण किया जा सकता है।

अतः संगीत द्वारा व्यक्ति समाज में उच्च आदर्श तथा उच्च प्रेरणाओं को ग्रहण करता है। आज के युग में भी राष्ट्रीयता भक्ति के गीत गा–गा–कर देशवासियों के ह्रदयों में देश भक्ति की भावनाओं को जाग्रत किया है। संगीत हमारी आत्मा को निश्छल व पवित्र बना देता है।

हमारे समाज में प्रचलित सभी परम्पराओं का निर्वाह संगीत के द्वारा ही किया जाता है। क्योंकि संगीत ही मानव का सच्चा साथी होता है। अतः समाज में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति संगीत को अपने जीवन में स्थान देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत व समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

lkekU; tu thou e lxhr d dk;

मनुष्य जीवन में भावात्मक, ज्ञानात्मक व क्रियात्मक इस तरह के विविध पहलु दिखाई देते है। मानव के सामाजिक जीवन में इन तीनों ही पहलुओं में सन्तुलन होना आवश्यक है। संगीत के द्वारा ही मानव जीवन को समद्ध बनाया जा सकता है। हमारे सामाजिक जीवन में संगीत का उपयोग जिन–जिन कार्यो में होता है, उनका उल्लेख हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर दर्शा रहे है।

1. ईश्वर की आराधना में सहायक :संगीत के द्वारा ईश्वर की भक्ति की जा सकती है। संगीत द्वारा ईश्वर की भक्ति कर अपनी आत्मा को पवित्र व निश्छल बनाया जा सकता है। आज भी हमारे सभी घरों में ईश्वर की पूजा करते समय गा–बजाकर प्रभू की आराधना की जाती है। अतः संगीत ईश्वर प्राप्ति का साधन माना जाता है।
2. समाज में प्रचलित विभिन्न त्योहारों में संगीत का प्रयोग :– हमारे समाज में विभिन्न प्रकार के त्योहारों का प्रचलन है। इन त्योहारों को सभी जाति व धर्मो के लोग मनाते है। इन त्योहारों को लोग तरह–तरह से मनाते है।

   मानव जीवन में सरसता संगीत के द्वारा ही प्रकट होती है। हमारे पारिवारिक उत्सवों, पर्वो, त्योहारों व रीति–रिवाजों में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है एवम् समाज में प्रचलित सभी त्योहार संगीत के द्वारा ही मनाये जाते है।

3. संगीत द्वारा मनोरंजन :—मनोरंजन करना संगीत का महत्वपूर्ण कार्य है। हमारे अनेकों राजा व महाराजाओं ने भी संगीत को मनोरंजन के साधन के रूप में स्वीकार किया था। वे अपना मनोरंजन करने के लिए अपने दरबारों में संगीतज्ञों की नियुक्ति करते थे एवं संगीत द्वारा अपना मनोरंजन करते थे। संगीत के द्वारा सभी लोग अपना मनोरंजन करते है। आज भी कईं लोग कार्य करते समय संगीत को सुनते हुए दिखाई देते है। संगीत के द्वारा वे कठिन से कठिन काम को भी आसानी से करते हुए अपना मनोरंजन करते रहते है। अतः संगीत मनोरंजन का साधन भी माना जाता है।

4. संगीत द्वारा मानसिक तनावों को दूर करना :— संगीत के द्वारा मानसिक तनावों को दूर किया जा सकता है। आज के समय प्रत्येक व्यक्ति किसी ना किसी तनाव को लेकर तनाव ग्रस्त रहता है ऐसे में वह चिड़चिड़ा बन जाता है, लेकिन संगीत के द्वारा इस दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। इसका अनुपम उदाहरण आज के दैनिक जीवन में देखा जा सकता है।

   आज प्रत्येक व्यक्ति किसी ना किसी माध्यम से अपना मनोरंजन करता है इसके लिए वह रेडियो, टेपरिकार्डर, मोबाईल इत्यादि द्वारा संगीत सुनते हुए दिखाई देते है अतः संगीत द्वारा हम तनाव को दूर कर आनन्द प्राप्त कर सकते है।

5. संस्कारों में संगीत का उपयोग :—हमारे हिन्दू धर्म में सदैव 16 संस्कारों का प्रचलन रहा है। समाज में जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, पाणीग्रह संस्कार, भात भरना, मूडंन संस्कार, आदि संस्कार हमारे समाज में आज भी प्रचलित है। इन सभी संस्कारों में संगीत के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता है। अर्थात इन सभी में संगीत का उपयोग किया जाता है।

6. संगीत द्वारा भावाभिव्यक्ति प्रकट करना :—संगीत के द्वारा हम अपनी भावात्मक अभिव्यक्ति को आसानी से प्रकट कर सकते है एवं दूसरों को भी आनन्दित कर सकते हैं

7. संगीत स्फूर्ति उत्पन्न करने में सहायक :– संगीत मानव जीवन में स्फूर्ति देने का कार्य करता है। हम प्रत्यक्ष में देख सकते है कि किसान या कोई भी मजदूर अपना कार्य करते हुए कुछ ना कुछ गुनगुनाते हुए अपना कार्य करते रहते है, वे संगीत के माध्यम से कठिन से कठिन काम को आसानी से करते रहते है। संगीत के द्वारा उन्हे थकान का आभास ही नहीं होता है। क्योंकि उनको संगीत के द्वारा नवीन शक्ति प्राप्त होती रहती है।
8. संगीत द्वारा संस्कृति के दर्शन करना :– संगीत के द्वारा हम किसी भी देश या राज्य में निवास करने वाले लोगों की संस्कृति के दर्शन कर सकते है क्योंकि समाज संस्कृति का दर्पण होता है। लोक संगीत के द्वारा ही हम विभिन्न देशों तथा राज्यों की लोक संस्कृति के दर्शन कर सकते है। अतः संगीत समाज के दर्शन कराने में सहायक है।
9. संगीत द्वारा vkRe fo'ok l उत्पन्न करना :– संगीत द्वारा हम अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा कर सकते है। अगर छोटा सा बालक भी एक बार स्टेज पर जाकर कार्यक्रम दे दे तो वह दुबारा कार्यक्रम देने में संकोच नहीं करेगा, क्योंकि उसके अन्दर आत्मविश्वास पैदा हो जायेगा अतः संगीत हमारे आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है।

10. संगीत के द्वारा मनुष्य में नैतिकता का भाव उत्पन्न करना :–संगीत के द्वारा अनुशासन , प्रेम,दया तथा सहयोग की भावना उत्पन्न होती है संगीत में इतनी शक्ति होती है कि वह किसी मनुष्य एवं पशु–पक्षी को अपनी और आकर्षित कर सकता है। अतः संगीत में आकर्षित करने की शक्ति होती है।

11. संगीत द्वारा चिकित्सा :– संगीत को मानसिक चिकित्सा में सहायक माना जाता है। मानसिक चिकित्सालयों में चिकित्सक मानसिक रोगियों को मधुर संगीत सुनने की सलाह देते है। अतः संगीत द्वारा मानसिक रोगियों का उपचार किया जा सकता है।
12. संगीत द्वारा राष्ट्रीय एकता का भाव उत्पन्न करना :–संगीत द्वारा हम देश तथा विदेशों के कलाकारों को आमन्त्रित कर उनके कार्यक्रम करवाकर आपसी

मेल–जोल बढ़ा सकते है। इससे एक दूसर के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत होती है। हमारे राष्ट्रीय भक्ति गीत, इसका अनुपम उदाहरण है।

13. संगीत द्वारा जीवन में सरसता उत्पन्न होना :–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सरसता व उल्लासता का जन्म संगीत के द्वारा ही होता है। हमारे देश की सीमा पर तैनात खड़े सैनिकों के जीवन में आशा व उत्साह का संचार संगीत के माध्यम से ही होता है। इससे उनके जीवन में सरसता बनी रहती है। अतः संगीत में सरसता व उल्लासता पैदा करने की शक्ति निहित होती है।

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संगीत संरचना में कल्पना शक्ति का ही अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। हमारे संगीत विद्वानों ने भी कल्पना शक्ति पर ही अत्यधिक बल दिया है। क्योंकि कल्पना शक्ति के द्वारा ही संगीत में नवीनता का भाव प्रकट होता है। संगीत संरचना में स्वर, लय, ताल, व पद का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इन संगीत तत्वों के बिना संगीत का निर्माण नहीं किया जा सकता है। संगीत के निर्माण में कुछ आवश्यक नियमों का जानकार होना आवश्यक है। जैसे आवाज लगाने का ढ़ग, बंदिश को प्रस्तुत करने का ढ़ग व आलापचारी की कुशलता, तान पक्ष व ताल का उचित स्थान पर प्रयोग कर मधुर संगीत का निर्माण किया जा सकता है।

संगीत के द्वारा हम हमारी संस्कृति के दर्शन कर सकते है। लोक संगीत के द्वारा हम किसी भी देश या प्रान्त की संस्कृति जैसे रहन–सहन पहनावा, त्योहार व संगीत आदि में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। संगीत जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव से जुड़ा हुआ है, और मानव समाज का ही एक अंग है। अतः संगीत व समाज दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध हेाता है।

Lkxhr dyk d fofHkUu 0;kolkf;d vk;ke

संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति संगीत से जुड़ा हुआ है। आज कई लोग संगीत के माध्यम से अपना जीवन यापन कर रहे है। आधुनिक युग में संगीत अर्थोपार्जन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। संगीत एक कलात्मक कैरियर का साधन बन चुका है। संगीत के व्यावसायिक क्षेत्र में अनेक म्यूजिक कम्पनियों का आगमन हुआ है। यह संगीत कम्पनियाँ अनेक संगीत कलाकारों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर आकर्षक वेतन प्रदान कर रही है। संगीत के वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। वर्तमान में संगीत एक उद्योग बन चुका है। इसके अन्तर्गत विभिन्न म्यूजिक कम्पनियाँ एवं रिर्काडिंग स्टूडियों की गणना की जाती है।

वैश्वीकरण और उदारीकरण ने संगीत उद्योग को नवीन आयाम प्रदान किए है। हमारी बदलती हुई जीवन शैली और उपभोक्तावाद ने संगीत के व्यावसायिक स्तर को कई गुना बढ़ा दिया है। संगीत के क्षेत्र में वृन्दवादन, वृन्दगान, फिल्म संगीत, नृत्य निर्देशन तथा संगीत से ओत–प्रोत विभिन्न व्यावसयिक विज्ञापन, संगीत चिकित्सा आदि के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाया जा सकता है।

अपने मनोभावों को स्वर ताल और भाव के द्वारा कलात्मक ढ़ंग से प्रकट कर देना ही संगीत है। संगीत एक ऐसी कला है जो देशी–विदेशी लोगों को अपनी और आकर्षित करता है। आज सम्पूर्ण समाज किसी ना किसी रूप में संगीत से जुड़ा हुआ है। आज कई लोग संगीत के माध्यम से अपना जीवन यापन कर रहे है।

वर्तमान समय में संगीत व्यावसायिक दृष्टि से एक नवीन युग की और बढ़ रहा है। संगीत के इस नवीन युग में अर्थोपार्जन व जीविका की दृष्टि से अनेक प्रवृतियों ने जन्म लिया है। प्राचीन समय में संगीत को साधना व तपस्या का माध्यम समझा जाता था, परन्तु वर्तमान समय में संगीत एक कलात्मक कैरियर का साधन बन गया है।

संगीत क्षेत्र में वृन्द वादन, वृन्दागान, फिल्म संगीत, नृत्य, निर्देशन व संगीत से ओत–प्रोत विभिन्न व्यावसायिक विज्ञापन शिक्षा के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, इत्यादि ऐसे अनेक क्षेत्र है। जिनमें संगीत के द्वारा आकर्षक कैरियर बनाया जा सकता है। इन कम्पनियों द्वारा संगीत के विभिन्न ऑडियों व वीडियों एलबम बना कर उन्हे बाजार में बेचकर अत्यधिक धन–लाभ अर्जित कर रहे है। आज कईं ऐसी संगीत कम्पनियाँ है जो कलाकारों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर उन्हे अच्छा वेतन प्रदान कर रही है। जिससे कलाकारों को धन व प्रसिद्वी दोनो की ही प्राप्ति हो रही है। संगीत के व्यावसायिक आयामों को हम निम्न बिंदुओं के आधार पर दर्शा रहे है।

1- lxhr f'k{kd d: i e 0;olk; %&

वर्तमान समय में संगीत अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। संगीत शिक्षण हेतु राज्य सरकार व भारत सरकार द्वारा समय–समय पर संगीत शिक्षकों, को संगीत व्याख्याताओं व संगीत प्रोफेसरों की नियुक्ति की जाती है। इन शिक्षकों अपनी योग्यतानुसार वेतन व भत्ते सरकार द्वारा प्रदान किए जाते है। आज देश में स्थित अनेक केन्द्रिय विद्यालयों व जवाहर नवोदय विद्यालयों में संगीत शिक्षक कार्यरत है।

जिन्हे सरकार द्वारा आकर्षक वेतन व मूलभूत सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। देश के अनेक महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में सरकार द्वारा संगीत प्राध्यापकों की नियुक्ति की जाती है। जिन्हे उच्च वेतन के साथ–साथ राजपत्रित अधिकारी की पदवीं से भी सम्मानित किया जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में संगीत विद्यार्थी बी.ए. व एम.ए. संगीत के द्वारा संगीत अध्यापक के लिए आवेदन कर संगीत अध्यापक बन सकता है एवं अच्छा धन अर्जित कर सकता है। इसके अतिरिक्त संगीत विद्यार्थी यदि संगीत में एम.ए. पीएच.डी. है या एम.ए. संगीत के साथ नेट या स्लेट है तो वह संगीत प्राध्यापक के रूप में कार्य कर अच्छा धन अर्जित कर सकता है। अतः व्यावसायिक दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में संगीत का भविष्य उज्जवल प्रतीत होता है।

2. संगीत कलाकार के रूप में व्यवसाय :—

आज संगीत का क्षेत्र इतना विकसित हो गया है जिसकी गूंज चारों ओर सुनाई देती है। हमारे समाज में प्रचलित कई कार्य ऐसे है जिन्हे केवल संगीत के द्वारा ही सम्पन्न किया जा सकता है। जैसे विवाह संस्कार मूण्डन संस्कार, जन्म संस्कार, अन्तिम संस्कार या कोई अन्य खुशी का अवसर इन सभी कार्यो में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इन कार्यो को सम्पन्न करने के लिए कई लोग आर्केस्ट्रा पार्टी को आमन्त्रित करते है। जिससे हर खुशी के अवसर का आनन्द चार गुना बढ़ जाता है। इन पार्टीयों को आगे से आगे प्रोग्राम मिलते रहते है तथा इनको मुहँ मांगा पारिश्रमिक भी मिल जाता है। आज बड़े–बड़े शहरों में ऐसे कईं होटल है जो होटल में आए अतिथियों का मनोरंजन करनें के लिए कई संगीत कलाकारों को आमन्त्रित करते है।

कई कलाकार होटलों में गज़ल का प्रोग्राम देकर अच्छा धनोपार्जन कर रहे हैं। कई लोग विवाह आदि में महफिल का प्रोग्राम करवाते है जिससे कलाकार मुहँ मांगा धन प्राप्त कर सकता है। वर्तमान समय में आज भी कई प्रोफेशनल जातियाँ है जो राजपूतों में होने वाले विवाह समारोह में माँढ़ गायकी का अच्छा प्रोग्राम देकर अच्छा धन व प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे है। कई तबला वादक संगीत के छात्र व छात्राओं के साथ तबला संगति कर के अच्छा जीवन व्यक्तित कर रहे है। अतः संगीत व्यवसाय का भविष्य उज्जवल है।

3- vkdk’kok.kh rFkk njn’ku d {k= e lxhr O;olk;%&

वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा देश के बड़े–बड़े शहरो में आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों की स्थापना की गयी है। संगीत के क्षेत्र में इन दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज कई लोग आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर अच्छा धन कमा रहे है। कई कलाकारों को तो आकाशवाणी केन्द्रों पर स्थायी कलाकारों के रूप में नियुक्त किया गया है।

जिन्हे अच्छे वेतनमान के साथ–साथ सरकार द्वारा दी गई सभी मूलभूत सुविधाऐं प्राप्त हो रही है। आज आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों द्वारा संगीत व्यवसाय को काफी बढ़ावा मिला है।

4- lxhr funi’kd d :lk e 0;olk; %&

वर्तमान समय में संगीत का अत्यधिक प्रयोग चित्रपट संगीत में किया जा रहा है। आज कोई भी फिल्म ऐसी नहीं है जिसमें संगीत विद्यमान न हो। अर्थात बिना संगीत के फिल्म निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आज कई लोग फिल्म इंडस्ट्री में अपना म्यूजिक फिल्मों में देकर काफी धन अर्जित कर रहे है। जिससे धन व प्रसिद्धि दोनो ही प्राप्त हो रही है।

5- vk|kfxd {k=k e lxhr 0;olk; %&

आज का युग औद्यौगिक युग माना जाता है क्योंकि देश में छोटे व बड़े उद्योग धन्धों की भरमार है। ये सभी उद्योगपति अपने उद्योग–धन्धों का प्रचार–प्रसार करने के लिए संगीत कर ही सहारा लेते है। ये आकाशवाणी या दूरदर्शन केन्द्रों के माध्यम से विभिन्न सांगीतिक विज्ञापन तैयार करवाकर उन्हे आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित करवाते है। जिससे कलाकारों dk Hkh vPNk /ku&ykHk ikIr gk tkrk gA bl idkj vk|kfxd {k= e Hkh lxhr 0;olk; dk ipyu c< x;k gA

6- futh lxhr fo|ky;k }kjk lxhr 0;olk; %&

आधुनिक समय में संगीत शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। आज देश में अनेक संगीत के विद्यार्थी ऐसे है जो संगीत में डिग्री व डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् अपना निजी संगीत विद्यालय किसी भी संस्था से सम्बद्वता प्रमाण पत्र प्राप्त कर प्रथमा से लेकर निपुण तक की कक्षाओं का संचालन कर रहे है। इन विद्यालयों में संगीत का मासिक शुल्क लिया जाता है। जिससे अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है। इस प्रकार ये संगीत के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ धन भी कमा रहे है और अपने परिवार का निर्वाह कर रहे है।

7 /kkfed {k= e lxhr 0;olk; %&

धार्मिक क्षेत्र भी संगीत व्यवसाय से जुड़ा हुआ है। आज कई कलाकार किसी भी संगीत कम्पनी में अपना अनुबन्ध कर सकता है। ये कलाकार विभिन्न प्रकार के भक्ति संगीत की (सी.डी. व डी.वी.डी.) ऑडियों व विडियों बनाकर अच्छा धन अर्जित कर सकते है। आज कई बड़े–बड़े सन्त व कथावाचक अपनी कथा को संगीत के द्वारा ही भक्तों को रसपान करवाते है तथा कलाकारों को आकर्षक वेतन प्रदान करते है।

8- dkfj;kxkQh d {k= e 0;olk; %

कोरियोंग्राफी के छोटे पर्दे पर बच्चों से लेकर बड़े–बड़े लोगों तक डान्स रियलिटी शो आयोजित किये जा रहे है। बच्चों से लेकर बड़ो तक सभी को देश के ख्याती प्राप्त कलाकारों के साथ–साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त gvk gA vkt dbi कोरियोग्राफर फिल्मों में अपनी कोरियोंग्राफी का जलवा दिखाकर अत्यधिक धन व प्रसिद्वि प्राप्त कर रहे है। संगीत से प्रेम रखने वाला कोई भी व्यक्ति कोरियोंग्राफी का प्रशिक्षण प्राप्त कर कोरियोग्राफर बनकर अपना जीवन यापन कर सकता है। आज कई कोरियोग्राफर छोटे–छोटे बच्चों को डान्स सीखाकर उन्हे रियलीटी शो के लिए तैयार कर रहे है। ये कोरियोग्राफर बदले में अच्छा धन ट्यूशन के रूप में प्राप्त कर रहे है। अतः कोरियोग्राफर बनकर भी अपना जीवन यापन किया जा सकता है।

9- lxhr leh{kd d :Ik e 0;olk; %&

वर्तमान युग में मीडीया की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। मीडीया के द्वारा ही संगीत के कार्यक्रमों को अधिक से अधिक सफल बनाया जा सकता है। वर्तमान में कई प्रकार की पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही है। जैसे राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक नवज्योति, दैनिक जागरण, देश की धरती, इत्यादी। इन सभी पत्रिकाओं में साप्ताहिक या पाक्षिक, एक संगीत का लेख प्रकाशित किया जाता है। जिससे संगीत के प्रचार–प्रसार के साथ संगीत समीक्षकों को भी आर्थिक लाभ मिल जाता है।

10- lxhr fpfdRlk d: :lk e: 0;olk; %&

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी तनाव से ग्रसित होता है। इस तनाव पूर्ण जीवन में संगीत औषधी के रूप सहायक हुआ है। संगीत चिकित्सा का महत्व देश–विदेश दोनों मे ही पाया गया है। प्रशिक्षित संगीत चिकित्सक अपने मरीजों के स्वास्थय में सुधार लाने हेतु संगीत के विभिन्न पहलुओं का उपयोग करता है। मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में संगीत विद्यालय चिकित्सा का अत्यधिक महत्व माना जा सकता हैं। क्योंकि संगीत व नृत्य मानसिक रोगों के उपचार में सहायक सिद्व हुए है।

एक संगीत चिकित्सक मानसिक तनाव से युक्त कर सकता है। भारत में वैदिक विज्ञान ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की 'रागों' में चिकित्सा प्रभाव होने का दावा किया है। प्राचीन काल से ही संगीत को चिकित्सीय कारक के रूप में उपयोग में लाया गया है। भारत में संगीत मधुर ध्वनि के माध्यम से एक योग प्रणाली की तरह है जो मानव जीवन पर कार्य करती है तथा आत्मज्ञान की हद के लिए उनके उचित कार्यो को जागृत व विकसित करती है।

जो कि हिन्दू दर्शन और धर्म का अतिंम लक्ष्य है। मधुर लय भारतीय संगीत का प्रधान तत्व है। 'राग' का आधार मधुर लय है, विभिन्न्न राग केन्द्रिय तंत्रिका प्रणाली सं संबंधित अनेक रोगों के इलाज में प्रभावी बताया गया है।[1] आज कई लोग मानसिक तनावों से मुक्ति पाने के लिए विभिन्न नाद अनुसंधान केन्द्रों का सहारा लेते है।

इन नाद साधना केन्द्रों पर जाकर संगीत की मदद द्वारा कई लोग अपने तनाव को दूर कर आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे है। इसके बदले इन साधना केन्द्रों के संचालकों को अच्छा धन लाभ प्राप्त होता है। अतः संगीत चिकित्सा के रूप में भी इसका व्यवसाय किया जा सकता है।

11- lkm.M bQSDV Lis'kfyLV ds :i esa O;olk; %

मनोरंजन के क्षेत्र मे संगीत का विशिष्ट स्थान माना जाता है। इसका उपयोग फिल्म संगीत, नाटक, एकाभिनय तथा मूकाभिनय के अन्तर्गत होता है। आज बच्चे बूढ़े सभी कम्प्यूटर गेम खेलते हुए दिखाई देते है। इन कम्प्यूटर गेमों कों आकर्षक बनाने हेतु साउण्ड इफैक्ट स्पेशलिस्ट की आवश्यकता होती है। आज कई लोग विभिन्न कम्पनियों में साउण्ड इफैक्ट स्पेशलिस्ट रूप में अपना व्यवसाय कर रहे है।

12- E;qftd LVwfM;ks }kjk laxhr O;olk; %

संगीत व्यवसाय के क्षेत्र में यह एक नवीन आयाम माना जाता है, चाहे किसी भी प्रकार का संगीत हो उसे स्टूडियों में ही रिकार्ड किया जाता है। इन स्टूडियों में कई कलाकार प्रति प्रोग्राम के हिसाब से अपना धन अर्जित करते है। कई कलाकारों को स्टूडियों द्वारा नियमित कलाकार के रूप में नियुक्त किया जाता है एवं उन्हे आकर्षक वेतनमान दिया जाता है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है की संगीत ने व्यावसायिक क्षेत्र में अपनी जड़े गहरी जमा ली है। व्यावसायिक दृष्टि से संगीत का क्षेत्र अति उत्तम है तथा इसमें रोजगार की अपार संम्भावनाएँ निहीत है।

prqFkZ v/;k;

laxhr f'k{k.k laLFkkvksa

ds laxhr f'k{kd]

dykdkj

,oa

mudk ;ksxnkuA

lxhr f'k{k.k lLFkkvksa ds lxhr f'k{kd dykdkj ,oe mudk ;kxnku

राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में ऐसे अनेक संगीत शिक्षक कलाकार हुये है, जिन्होने अपनी साधना व चिन्तन शक्ति से शास्त्रीय संगीत को सजाया सवाँरा है। यहाँ के सभी संगीत शिक्षक कलाकारों ने संगीत के शास्त्रीय एवं क्रियात्मक पक्ष के प्रति समर्पित होकर संगीत कला को समृद्ध किया है। इन शिक्षक कलाकारों में विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय संगीत शिक्षकों की गणना की जाती है, जिन्होने संगीत के उन्नयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर संगीत कला को परिवक्व एवं समृद्व बनाया हैं।

आज भी संगीत को संरक्षित करने और शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए संगीत शिक्षक कलाकारों द्वारा अनेक ग्रन्थों तथा संगीत पुस्तकों का सृजन किया जा रहा है। हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के संगीत शिक्षण संस्थानों में सेवारत एवं सेवानिवृत संगीत शिक्षक कलाकार जिन्होने संगीत उन्नयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन सभी शिक्षक कलाकारों के सांगीतिक योगदान तथा उनके जीवन परिचय पर अंग्राकित प्रकाश डाला गया है।

इस अध्याय में सम्मिलित सभी गुणीजनों का जीवन परिचय, उनके द्वारा उपलब्ध करवायी गयी जानकारियों के आधार पर तैयार किया गया है।

<i<kM {k= d ie[k lxhr f'k{kd dykdkj

Jh vfdr HkV~V ¼çk/;kid fl rkj½

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के प्रसिद्व युवा संगीत शिक्षक एवं सितार वादक श्री अंकित भट्ट का जन्म 18 नवम्बर 1982 को जयपुर के प्रसिद्व संगीत गुरू श्री चन्द्रमोहन भट्ट के यहाँ हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली व संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है।

श्री अंकित भट्ट सेनिया घराने के प्रमुख गुरू एवं कलाकार पंडित शशी मोहन भट्ट के परम शिष्य है। आपके विभिन्न सांगीतिक लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है। आप निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित परीक्षाओं के सफल परीक्षक हैं।

आपको आकाशवाणी द्वारा बी हाई ग्रेड प्रदान की गई है। आपको हिन्दी मूवी डिजायर में पार्श्व गायक हरिहरण के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा सुरमणी अवार्ड से नवाजा गया है। आपने टाइम्स म्यूजिक एलबम में अपना सितार वादन किया है। वर्तमान में आप बनस्थली विद्यापीठ के संगीत विभाग में प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री अंकित भट्ट द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- T;kfr xkLokeh ¼ ik/;kfidk dFkd uR;½

प्रसिद्ध नृत्यागंना डॉ0 ज्योति गोस्वामी का जन्म 1963 को गुलाबी नगर जयपुर में हुआ था। डॉ0 ज्योति गोस्वामी संगीत साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। डॉ0 ज्योति गोस्वामी ने जयपुर घराने के प्रसिद्व नृत्य गुरू पंडित गिरधारी महाराज से शिक्षा प्राप्त की है।

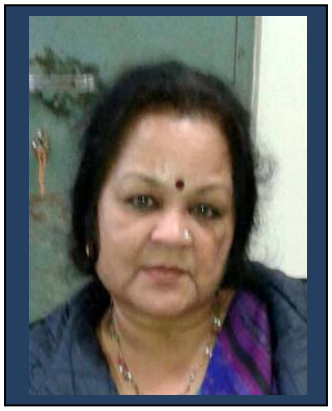

डॉ0 ज्योति भातखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ व राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर की सफल परीक्षक है। आपने विभिन्न नृत्य नाटिकाओं का आयोजन कर कथक नृत्य के प्रचार–प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

आपने विभिन्न संगीत सेमिनारों में कथक का सौन्दर्य पक्ष, विषय पर व्याख्यान दिए है तथा आप विभिन्न प्रतियोगिताओं की निर्णायक रही है। डॉ0 ज्योति को सन् 2013 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, 1993 में सुर सिंगार संमसद मुम्बई द्वारा श्रृंगार मणी की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है।

आपने ''कथक नृत्य के विकास में बीकानेर संभाग का योगदान'' विषय पर शोध कार्य कर संगीत जगत को नवीन दिशा प्रदान की है। वर्तमान में आप राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत प्राध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. ज्योति गोस्वामी द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- lhek lDlsuk ¼lxhr çk/;kfidk dB lxhr½

ख्याल गायिका डॉ0 सीमा सक्सैना का जन्म 1964 को जयपुर में हुआ था। डॉ0 सीमा सक्सैना संगीत–साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आप भातखण्डे

संगीत विद्यापीठ लखनऊ एवं बनस्थली विद्यापीठ द्वारा करवाये जा रहे है शोध कार्यो में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की सफल कलाकार है। डॉ0 सीमा के विभिन्न सांगीतिक लेखों का प्रकाशन संगीत मासिक पत्रिका हाथरस द्वारा किया जा चुका है। आपके प्रमुख लेखों में ख्याल का सांगीतिक पक्ष एवं समय सिद्वान्त की प्रासंगिकता सफल लेख रहे है। आपको राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर द्वारा सदस्यता प्रदान की गई है।

आपको आकाशवाणी द्वारा बी हाई ग्रेड प्रदान की गई है। आप बनस्थली विद्यापीठ, कोटा विश्वविद्यालय तथा राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर की सफल परीक्षक रही है। डॉ0 सीमा को 1991 में साहित्य कला संस्थान द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

आपने विभिन्न अतंरमहाविद्यालय प्रतियोगिताओं में संगीत निर्णायक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ0 सीमा ने ‘‘सदा रंगीले की ख्याल बंदिशों का काव्य शास्त्रीय अध्ययन’’ विषय पर शोध कार्य कर संगीत जगत को एक नीवन दिशा प्रदान की है। वर्तमान में आप राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दे रही है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. सीमा सक्सैना द्वारा दी गई जानकारी।

Mk0 ';ke lqUnj 'kekZ ¼lxhr ik/;kid dBB lxhr½

ध्रुपद गायक डॉ0 श्याम सुन्दर शर्मा का जन्म 25 जून, 1979 को जयपुर में हुआ था। डॉ0 श्याम सुन्दर शर्मा, ने ग्वालियर एवं डागर घराने के प्रसिद्व कलाकार पंडित लक्ष्मण भट्ट तैंलंग तथा डॉ0 मधु भट्ट तैलंग से ध्रुपद एवं धमार गायन का गहन प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। आपने देश के विभिन्न संगीत समारोहों में डॉ0 मधु भट्ट तैलंग के साथ अपनी भव्य प्रस्तुतियों का परिचय दिया है। डॉ0 श्याम ने विभिन्न संगीत सेमीनारों में ध्रुपद तथा धमार विषय पर व्याख्यान दिए है। आप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं अखिल भारतीय गार्न्धव महाविद्यालय मंडल मुम्बई द्वारा आयोजित परीक्षाओं के निर्णायक हैं।

आपने पंडित औंकार नाथ ठाकुर द्वारा प्रवीत ग्रन्थ संगीताजली भाग प्रथम व द्वितीय की ध्रुपद व धमार बन्दिशों का सांगीतिक विश्लेषण'' विषय पर शोध कार्य पूर्ण कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ0 श्याम ने संगीत शिक्षण पद्वति एवं समकालिन कलाओं में संगीत एवं समाज ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अवलोकन विषय पर अपने विचार व्यक्त किए है। आपको राजस्थान के कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में डॉ0 श्याम सेन्ट विल्फ्रेड पी.जी. कॉलेज मानसरोवर जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है। डॉ0 श्याम का यह सांगीतिक योगदान सराहनीय है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 श्याम सुन्दर शर्मा द्वारा दी गई जानकारी।

Jh jfo HkVV rSyax ¼laxhr f'k{kd½

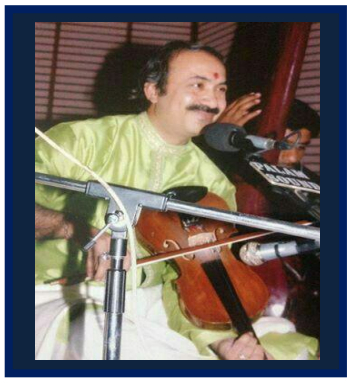

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के प्रसिद्व युवा संगीत शिक्षक एवं वायलिन वादक श्री रवि भट्ट का जन्म जयपुर में यहाँ हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली व संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है। श्री रवि भट्ट डागर व ग्वालियर घराने के प्रमुख गुरू एवं कलाकार पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग के पुत्र एवं शिष्य है। आपके विभिन्न सांगीतिक लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है। श्री रवि भट्ट आकाशवाणी व दूरदर्शन के सफल कलाकार माने जाते है। आपका संगीतिक योगदान सरहानीय रहा है।

iafMr y{e.k HkVV rSyax ¼lsokfuo`Rr f'k{kd½

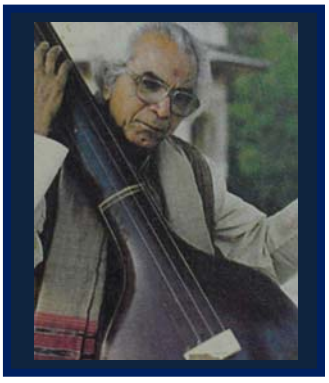

भारत के सुप्रसिद्व ध्रुपद विशेषज्ञ पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग का जन्म जयपुर में हुआ है। पंडित जी भारतीय संगीत की प्राचीन शैली ध्रुपद तथा धमार के विशेष प्रतिनिधी माने जाते है एवम् पंडित जी ग्वालियर तथा डागर घराने के सिद्व हस्त कलाकार के रूप में जाने जाते है। आप गायन तथा वादन दोनो ही शैलियों में पारंगत है। पंडित जी ने अपनी संतान के रूप में सात स्वरों को ईजाद किया है । मेरी कल्पना के अनुसार शोभा से सा, रवि से रे, उषा से ग, मधु से म, पूनम से प, आरती से ध, निशा से नि। ये सभी संगीत की सभी विद्याओं में निपुण है। पंडित जी ने कई बंदिशों की नवीन रचना कर संगीत जगत को लाभान्वित किया है। आप गायन, वादन तथा साहित्य क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। आपके प्रमुख शिष्यों में डॉ. मधु भट्ट तैलंग, डॉ आरती भट्ट तैलंग, डॉ निशा भट्ट तैलंग, डॉ श्याम सुन्दर शर्मा, श्री ओम प्रकाश नायर, श्री ब्रज मोहन ड़ांगी, डॉ हनुमान सहाय तथा गणेश लाल बारेठ का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री रवि भट्ट तैलंग द्वारा दी गई जानकारी।
- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में पंडित लक्ष्मण भट्ट द्वारा दी गई जानकारी।

Mk0 lftr no /kfj;k ¼çk/;kid ok;fyu½

प्रसिद्ध वायलिन वादक डॉ0 सुजित देव धरिया का जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण द्वारा प्राप्त की है। आप बनारस घराने के प्रमुख संगीत गुरू पंडित वनिष प्रसाद के प्रमुख शिष्य रहे है। डॉ0 धरिया के विभिन्न सांगीतिक लेख छायानट पत्रिका में प्रकाशित होते रहे है।

आप अपने कार्यक्रम आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा संगीत समारोहों के द्वारा देते रहते है। डॉ0 धरिया ने संगीत संबंधी विषय पर रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय में कई पत्रों का वाचन किया है।

आप आकाशवाणी द्वारा बी ग्रेड प्राप्त कलाकार रहे है। वर्तमान में आप बनस्थली विद्यापीठ के संगीत विभाग में वायलिन प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 सुजित देव धरिया द्वारा दी गई जानकारी।

Jh ?ku';ke tknku ¼çk/;kid] daB laxhr½

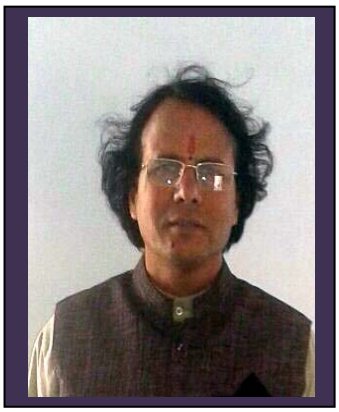

ख्याल गायक श्री घनश्याम सिंह जादोन का जन्म जयपुर में हुआ था। आप प्रसिद्ध ख्याल गायक बाबा श्री सुखदेव जी महाराज के परम शिष्य रहे है। आप शास्त्रीय एवं सुगम संगीत की दोनों ही विधाओं में निपुण है तथा गायन के साथ–साथ आप तबला संगत का भी अनुभव रखते है। श्री जादोन ने संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा तथा संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है।

श्री जादोन ने सांगीतिक धरोहर को सुरक्षित रखने एवं संगीत प्रचार–प्रसार हेतु संगीत को अपना लक्ष्य बनाया है। आप संगीत के कार्यक्रम संगीत समारोहों के द्वारा देते रहते है।

आपने विभिन्न संगीत सेमीनारों में ख्याल गायकी विषय पर व्याख्यान दिए है। वर्तमान में श्री घनश्याम सिंह जादोन भवानी निकेतन महाविद्यालय जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में 15 वर्षो से अपनी सेवाएँ दे रहे है। आप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परीक्षक है। है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में घनश्याम जादोन द्वारा दी गई जानकारी।

Jh vke çdk'k uk;j ¼çk/;kid dB laxhr½

प्रसिद्व युवा ध्रुपद गायक श्री ओम प्रकाश नायर का जन्म 27 फरवरी 1985 को जयपुर में हुआ था। ग्वालियर एवं डागर घराने के प्रसिद्व संगीत विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग तथा डॉ0 मधु भट्ट तैंलंग के सानिध्य में आपने संगीत की गहन शिक्षा प्राप्त की है।

श्री नायर ने कई राष्ट्रीय मंचों पर अपनी भव्य प्रस्तुतियाँ दी है। आपको बाल गन्धर्व संस्था जयपुर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर सुर श्री अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

श्री नायर को आकाशवाणी के ज्ञानवाणी चैनल पर संगीत विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित किया गया था। जिसके अन्तर्गत आपका सांगीतिक व्याख्यान ''टॉक शो'' के द्वारा प्रसारित किया गया।

वर्तमान में आप परिष्कार पी.जी. कॉलेज मान सरोवर, जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में ओम प्रकाश नायर द्वारा दी गई जानकारी।

Mk0 vkjrh HkVV rlyx ¼çk/;kfidk dB lxhr½

ख्याल गायिका डॉ0 आरती भट्ट तैलंग का जन्म 26 सितम्बर 1969 को हुआ था। आप ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग की शिष्या एवं सुपुत्री है। डॉ0 आारती भट्ट संगीत साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है एवं आपके निर्देशन में कई शिक्षार्थी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके है।

डॉ0 आरती भट्ट कई विश्वविद्यालयों की परीक्षक है। आपको कई संस्थाओं द्वारा सांगीतिक प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में आमन्त्रित किया जाता रहा है। डॉ0 आरती आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की सफल कलाकार रही है।

डॉ0 आरती भट्ट ने ग्वालियर घराने के राजू भैया पूछ वाले का भारतीय संगीत के विकास में अमूल्य योगदान शीर्षक पर शोध कार्य पूर्ण किया है एवंम घरानेदार चीजों को आगे बढ़ाना ही आपका परम उद्देश्य रहा है।

वर्तमान में डॉ0 आरती भट्ट तैलंग राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 आरती भट्ट तैलंग द्वारा दी गई जानकारी।

Mk0 e/kq HkVV rSyax ¼çk/;kfidk daB laxhr½

प्रसिद्ध ध्रुपद गायिका डॉ0 मधु भट्ट तैलंग का जन्म 28 मार्च 1961 को जयपुर में हुआ था। डॉ0 मधु भट्ट डागर व ग्वालियर घराने के प्रसिद्व गायक पंडित लक्ष्मण भट्ट तेलंग की परम शिष्या व सुपुत्री है।

आप संगीत साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट योगदान रखती है। डॉ0 मधु भट्ट के निर्देशन में कई संगीत शिक्षार्थी शोध कार्य कर शोध उपाधि प्राप्त कर चुके है।

आप कई वर्षो से अनेक विश्वविद्यालयों की परीक्षक एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों की सदस्या है। आपने कई संगीत सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय संगीत कार्यशालाओं में अपने कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ दी है। डॉ0 मधु भट्ट ने अनेक राष्ट्रीय स्तर की संगीत कार्यशालाओं का आयोजन कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आपने कई राष्ट्रीय एवं अन्तर राष्ट्रीय संगीत समारोहों में विभिन्न सांगीतिक विषयों पर व्याख्यान दिए है। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन की सफल कलाकार है। डॉ0 मधु भट्ट के यू.एस.ए. व जयपुर बी.एम.बी. म्यूजिक कम्पनी द्वारा एलबम भी रीलीज किए गए है। आप ध्रुपद में कई नवीन प्रयोग धर्मी रचनाएँ करती रहती है।

आपकी प्रमुख कृतियों में ध्रुपद परम्परा एवं हिन्दस्तानी संगीत के पखावज वादन को वल्लभ सम्प्रदाय की देन व आपका प्रसिद्व लेख राजस्थान की समृद्व संगीत परम्परा के नाम से प्रकाशित हुआ है। वर्तमान में डॉ0 मधु भट्ट राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के संगीत विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। आप अनगिनत पुरस्कारों व सम्मानों से नवाजी गयी है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 मधु भट्ट तैलंग द्वारा दी गई जानकारी।

Mk0 y{eh jkuh ekFkqj ¼lsokfuo`r] çk/;kfidk½

डॉ0 लक्ष्मी रानी माथुर का जन्म 3 नवम्बर 1948 को अजमेर राजस्थान में हुआ था। आप प्रसिद्व ख्याल गायक डॉ0 विद्याधर राव व्यास की प्रमुख शिष्या रही है। आप ग्वालियर घराने की ख्याल गायिका रही है तथा विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से आपकी सांगितीक वार्ताओं का प्रसारण किया जा चुका है।

डॉ0 लक्ष्मी रानी को आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की प्रमुख कलाकार रही है। आपके द्वारा लिखे गये कई सांगितीक लेखों का प्रकाशन विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हो चुका है। आपने संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है।

डॉ0 लक्ष्मी रानी राजस्थान के कई प्रमुख विश्वविद्यालयों की पाठ्यक्रम समिति में सदस्यता प्राप्त है। आप राजस्थान लोक सेवा आयोग की भर्ती परीक्षाओं में विषय विशेषज्ञ के रूप में योगदान देती आयी है तथा विभिन्न महाविद्यालयों में परीक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुकी है। आप आकाशवाणी द्वारा बी. ग्रेड कलाकार है आपने ई.टी.वी. राजस्थान द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में अपना योगदान दिया है तथा राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर, राजकीय महाविद्यालय बून्दी तथा राजकीय महाविद्यालय अलवर, में अध्यापन कार्य किया है। डॉ0 लक्ष्मी रानी ने राजकीय महाविद्यालय बून्दी में संगीत विषय का शुभारम्भ कर महत्पवपूर्ण योगदान दिया है। आपने ''राजस्थान के लोक देवी देवताओं से सम्बन्धित गीतों का सांगीतिक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया है। संगीत जगत आपके अथाह योगदान का आभारी है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 लक्ष्मी रानी माथुर द्वारा दी गई जानकारी।

çk- lqeu ;kno ¼ dB laxhr½

भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में प्रोफेसर सुमन यादव का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। प्रोफेसर सुमन यादव ऑल इंडिया रेडियो से ए ग्रेड की कलाकार रही है। प्रो. सुमन ग्वालियर घराने की प्रसिद्व गायिका डॉ. लीलावती अड़सले की प्रमुख शिष्या रही है। आपकी गायकी में ग्वालियर घराने की गायकी के अतिरिक्त किराना तथा जयपुर घराने का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

प्रो. सुमन यादव ने गायन शैलियों में कई नवीन प्रयोग किए है। जिनमें कई देशो के स्थानीय संगीत को राजस्थानी लोक संगीत में ढ़ाला है। फलस्वरूप कई बेहतरीन रचनाएँ सामने आई और लोगों ने उन्हे बेहद पसन्द किया है। प्रो. सुमन शास्त्रीय संगीत की सभी विद्याओं में निपुण है।

आप विभिन्न संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ देती रही है। प्रसिद्व संगीत कम्पनी टाईम्स म्यूजिक द्वारा आपकी गज़लों का एक एलबम रिलिज हुआ है। इन सभी गज़लों का कम्पोजिशन स्वंय सुमन जी द्वारा ही किया गया है तथा सुमन जी ने बेल्जियम की प्रसिद्व म्यूजिक कम्पनी ब्लू प्लेम द्वारा राजस्थानी फोक गीतों का एलबम रिलिज किया है।

वर्तमान में आप राजस्थान विश्वविद्यालय संगीत विभाग में संगीत प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है। आपके निर्देशन में कई संगीत शोधार्थी शोध कर चुके है। आपका सांगीतिक योगदान सदैव सरहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में प्रोफेसर सुमन यादव द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- fu'kk HkV~V r|y|x ¼l|xhr çk/;kfid½

डॉ0 निशा भट्ट तैलंग का जन्म 26 सितम्बर 1957 को राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर में हुआ था। आपके पिता एवं गुरू पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद विशेषज्ञ के नाम से जाने जाते है। आपको बचपन से ही सांगीतिक वातावरण प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप आपके गुरू एवं पिता पंड़ित लक्ष्मण भट्ट तैंलग से संगीत की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

डॉ. निशा ने संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा तथा संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है। आपने संगीत के प्रचार–प्रसार एवं सांगीतिक धरोहर को सुरक्षित रखने हेतु संगीत को अपना लक्ष्य बनाया है।

डॉ. निशा आकाशवाणी द्वारा A^+ ग्रेड प्राप्त कलाकार रही है। आपको राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों की पाठयक्रम समिति में सदस्यता प्राप्त है। आपने ''आगरा घराने के सुप्रसिद्व संगीताचार्य स्व. पंडित श्रीकृष्ण नारायण रातजंकर'' विषय पर शोध कार्य कर संगीत जगत को अमूल्य योगदान दिया है।

डॉ. निशा राजकीय महाविद्यालय बून्दी में संगीत प्राध्यापिका के रूप में अपनी सेवायें प्रदान कर चुकी है। वर्तमान में आप राजकीय महाविद्यालय टोंक में प्राचार्या के पद पर सेवायें दे रही है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ0 निशा भट्ट तैलंग द्वारा दी गई जानकारी।

Mk-xkjo tu ¼çk/;kid dB lxhr½

प्रतिष्ठित संगीत शिक्षक कलाकार : डॉ.गौरव जैन अध्यापन के क्षेत्र में स्नातकोत्तर राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दे रहें है। डॉ.गौरव ने संगीत की शिक्षा संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है। डॉ. गौरव ने समय–समय पर फिल्म संगीत पर अपने आर्टिकल प्रकाशित करवायें है।

डॉ. गौरव ने आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा संगीत समारोहों के द्वारा अपने कार्यक्रमों की कई प्रस्तुतियाँ दी है। डॉ. गौरव आकाशवाणी द्वारा **B** ग्रेड प्राप्त कलाकार है। डॉ. गौरव ने सरल रामायण एवं गा मेरे संग गा टी.वी. सीरीयल में अपनी मधुर आवाज दी है तथा कई संगीत कम्पनियों ने आपके एलबम रीलीज किये हैं जिनमें राधारमण हरि बोल, सुन्दरकाण्ड, (टी.सीरीज) वीणा कैसेट्स द्वारा रीलीज एलबम वतन ये हमारा प्यारा हिन्दुस्तान कॉफी लोकप्रिय रहा है।

डॉ. गौरव ने विभिन्न विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगताओं में निर्णायक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. गौरव ने, ''हिन्दी फिल्म संगीत की लोकप्रिय गज़लों का सांगीतिक विश्लेषण संगीतकार मदनमोहन के विशिष्ट सन्दर्भ में'' सांगीतिक विषय पर शोध कार्य किया है। डॉ. गौरव सरल स्वभाव तथा मृदुभाषी व्यक्ति है। वर्तमान में डॉ. गौरव राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत प्राध्यापक के रूप में सेवाएँ दे रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ.गौरव जैन द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- çHkk ekFkqj ¼ çk/;kfidk d.B laxhr½

प्रसिद्व ख्याल गायिका डॉ. प्रभा माथुर का जन्म 31 मार्च 1962 को जयपुर, राजस्थान में हुआ था। आप ग्वालियर घराने के प्रसिद्व गायक श्री एस.एस. पाण्डेय की परम शिष्या रही है।

आपके कई लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है। डॉ. प्रभा विभिन्न विश्वविद्यालयों की सफल परीक्षक मानी जाती है। डॉ. प्रभा ने नेशनल सेमिनार ऑन म्यूजिक रिसर्च मुम्बई में जयपुर का गुणीजन खाना विषय पर पत्र वाचन कर अपना अमूल्य योगदान दिया है।

डॉ. प्रभा विभिन्न प्रतियोगिताओं की सफल निर्णायक रही है। आपने 'भारतीय संगीत' को जयपुर राज्य की देन'' विषय पर शोध कार्य कर ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की सांगीतिक उपलब्धियों को उजागर किया है। वर्तमान मे डॉ. प्रभा राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर में संगीत प्राध्यापिका के रूप में अपनी सेवायें दे रही है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. प्रभा माथुर द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- gueku Igk;

डॉ. हनुमान सहाय का जन्म 25 नवम्बर 1960 को ग्राम पदमपुरा जिला जयपुर में हुआ था। आप भारत के सुप्रसिद्ध ध्रुपद–विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग के प्रमुख शिष्य रहे है। आपने उपशास्त्रीय संगीत की अन्य विद्याऐं जैसे ठुमरी, दादरा, माँढ़ इत्यादि की शिक्षा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के प्रसिद्ध संगीत गुरू एवं कलाकार पंडित चिंरजी लाल तंवर से प्राप्त की है।

डॉ. हनुमान आकाशवाणी द्वारा B^+ ग्रेड प्राप्त कलाकार है। आपने देश के विभिन्न संगीत समारोहों तथा शिक्षण संस्थानों में अपने कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ दी है तथा संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपके सांगीतिक लेख प्रकाशित होते रहते है।

डॉ. हनुमान भातखंडे विश्वविद्यालय लखनऊ के परीक्षक रहे है। आपने बनस्थली विद्यापीठ, सत्यसाई कॉलेज, परिष्कार कॉलेज आदि कई शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन कार्य कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. हनुमान ने ''ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के कवि, गायकों की संगीत साधना पर विश्लेषणात्मक अध्ययन'' शीर्षक विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया है। वर्तमान में आप अपने निवास स्थान पर ही संगीत विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. हनुमान सहाय द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- laxhrk xksdVs ¼laxhr çk/;kfidk] dB laxhr½

डॉ. संगीता गोकटे का जन्म 31 जुलाई, 1966 को इन्दौर मध्यप्रदेश में हुआ था। आपने

संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली तथा संस्थागत शिक्षण के द्वारा प्राप्त की है। आप ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार श्री वसन्त खेर की प्रमुख शिष्या रही है। डॉ. संगीता आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की प्रमुख कलाकार मानी जाती है। आप आकाशवाणी द्वारा **B** ग्रेड प्राप्त कलाकार है।

आपके कई सांगीतिक लेख संगीत कला विहार मासिक पत्रिका में प्रकाशित होते रहते है। आपको गार्न्धव महाविद्यालय मण्डल मुम्बई द्वारा परीक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। डॉ. संगीता ने ''प्रोफेसर बी.आर. देवधर का सांगीतिक व्यक्तित्व विषय'' पर शोध कार्य किया है। आपने संगीत के प्रचार–प्रसार एव सांगीतिक धरोहर को सुरक्षित रखने हेतु संगीत को अपना लक्ष्य बनाया है।

आपके द्वारा संगीत का एक विद्यालय जयपुर में वसन्त म्यूजिक इन्सट्ीयूट के नाम से चलाया जा रहा है। जिसमें कई विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे है। वर्तमान में डॉ. संगीता वैदिक कन्या महाविद्यालय मानसरोवर जयपुर में संगीत प्राध्यापिका के रूप में अपनी सेवायें दे रही है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. संगीता गोकटे द्वारा दी गई जानकारी।

gkMkSrh {ks= ds çeq[k laxhr f'k{kd dykdkj

Jherh çsj.kk 'kekZ ¼çk/;kfidk flrkj½

सितार वादिका श्रीमती प्रेरणा शर्मा का जन्म 1 जुलाई 1969 में हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा डॉ0 कविता चक्रवती से प्राप्त की है। आपके कई सांगीतिक लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है। श्रीमती प्रेरणा शर्मा को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा व महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में सदस्यता प्रदान की गयी है।

आप विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नात्तक व स्नात्तकोत्तर स्तर की परीक्षक है। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन की सफल कलाकार है। आपको सरकारी व गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में आमन्त्रित किया जाता रहा है।

वर्तमान में आप राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा में संगीत संगीत प्राध्यापक (सितार) के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही है। आपको सांगीतिक योगदान सराहनीय है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्रीमती प्रेरणा शर्मा द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- fuf'k ekFkqj ¼laxhr çk/;kfidk] dkB laxhr½

डॉ. निशि माथुर का जन्म 6 जून 1956 को शिक्षा नगरी अजमेर राजस्थान में हुआ था। डा. निशि संगीत साहित्य एवं शोध कार्यो में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आपके निर्देशन में कई छात्र–छात्राएँ तथा सेवारत व्याख्याता पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके है।

आप कई वर्षो से अनेक विश्वविद्यालयों की परीक्षक एवं विभिन्न समितियों की सदस्या है। डॉ. निशि के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष 1999, 2004 एवं 2009 में लघु शोध स्वीकृत हुए है। आपने कई संगीत सम्मेलनों, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कॉन्फ्रेन्स में विभिन्न सांगीतिक पत्रों का वाचन किया है। आपने आकाशवाणी के माध्यम से अनेक सांगीतिक वार्ताओं की प्रस्तुतियाँ दी है।

डॉ. निशि को श्री भारतेन्दू समिति द्वारा साहित्य श्री की उपाधि से सम्मानित किया गया है। डा. निशि वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय बून्दी संगीत विभाग में संगीत विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत है। आपका सांगीतिक योगदान सरहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. निशि माथुर द्वारा दी गई जानकारी।

श्री गोविन्द प्रकाश गन्धर्व (नृत्य शिक्षक)

हाड़ौती क्षेत्र के प्रतिष्ठित संगीत नृत्य शिक्षक श्री गोविन्द प्रकाश गन्धर्व का जन्म का जन्म 2 जुलाई, 1959 को कोटा में हुआ था। श्री गोविन्द ने संगीत शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली एवं संस्थागत शिक्षण द्वारा प्राप्त की है। श्री गोविन्द जयपुर घराने के प्रसिद्व नृत्य गुरू पण्डित गिरधारी जी महाराज के परम शिष्य माने जाते है। श्री गोविन्द ने दूरदर्शन तथा विभिन्न संगीत समारोहों द्वारा अपने नृत्य के कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ दी है। आपको राजस्थान सरकार द्वारा नृत्य की उत्कृष्ट सेंवाओं के लिए वर्ष 2006 में सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में श्री गोविन्द राजकीय माध्यमिक संगीत प्रभाकर विद्यालय रामपुरा, कोटा में कार्यरत है। सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।[1]

Kku Un d ekj xIrk ¼lokfuo`r f'k{kd½

हाड़ौती क्षेत्र के प्रतिष्ठित संगीत नृत्य शिक्षक श्री ज्ञानेन्द्र कुमार गुप्ता का जन्म का जन्म इटावा उत्तरप्रदेश में हुआ था। श्री ज्ञानेन्द्र ने संगीत शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली एवं संस्थागत शिक्षण द्वारा प्राप्त की है। श्री ज्ञानेन्द्र ने जयपुर घराने के प्रसिद्व नृत्य गुरू पण्डित बद्रीप्रसाद जी से शिक्षा प्राप्त की है। श्री ज्ञानेन्द्र ने विभिन्न संगीत समारोहों द्वारा अपने नृत्य के कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ दी है। आपको राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा नृत्य की उत्कृष्ट सेंवाओं के लिए वर्ष 2008 में कला पुरोधा की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। श्री ज्ञानेन्द्र राजकीय माध्यमिक संगीत प्रभाकर विद्यालय रामपुरा, कोटा में संगीत शिक्षक (कथक नृत्य) के पद पर अपनी सेवाऐं देते हुए सेवानिवृत हो चुके है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

---

1. शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री गोविन्द प्रकाश गन्धर्व द्वारा दी गई जानकारी।
3 शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री ज्ञानेंन्द्र कुमार गुप्ता द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- jk'ku Hkkjrh ¼çk/;kid] dB laxhr½

राजस्थान के एक मात्र तथा हाड़ौती क्षेत्र की शान, मधुर आवाज के धनी सुप्रसिद्ध गज़ल गायक डॉ. रोशन भारती का जन्म 2 मई 1967 को भारत की राजधानी नई दिल्ली में हुआ था। डॉ. रोशन भारती सेनिया घराने के प्रसिद्व कलाकार माने जाते है। डॉ. रोशन संगीत साहित्य एवं लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखते है। आपके निर्देशन में कई शोधार्थी शोध कार्य कर चुके है । डॉ.रोशन आकाशवाणी द्वारा टोप ग्रेड कलाकार माने जाते है। आपको राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर तथा कई विश्वविद्यालयों द्वारा सदस्यता प्रदान की गयी है। डॉ. रोशन ने देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी मधुर आवाज का जादू बिखेरा है तथा संगीत की विभिन्न कम्पनियों द्वारा आपके एलबम रिलीज हुए है। जिनमें दाग़, एहसास गज़ल गोल्ड, शामे गज़ल, उल्फत ख्वाहिशें इत्यादि आपके सफल एलबम रहे है। आपको कई पुरस्कारों द्वारा नवाजा गया है। वर्तमान में डॉ. रोशन राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा संगीत विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत है। आपका सांगीतिक योगदान सराहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में डॉ. रोशन भारती द्वारा दी गई जानकारी।

Jh çekn 0;kl ¼lxhr f'k{kd½

श्री प्रमोद व्यास का जन्म 2 फरवरी 1956 को बून्दी में हुआ था। आप आगरे घराने के प्रसिद्व ख्याल गायक उस्ताद सादिक हुसैन कुरेशी के परम शिष्य रहे है। आपके कई सांगीतिक लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है। श्री प्रमोद व्यास को आकाशवाणी द्वारा B^+ ग्रेड प्रदान की गई है। आपने ई.टी.वी. राजस्थान पर कई लोक गीतों की प्रस्तुतियाँ दी है।

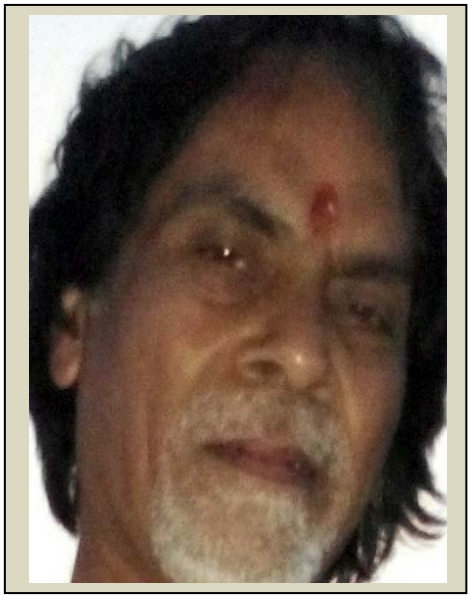

आपके कई राजस्थानी एलबम टी. सीरीज कम्पनी द्वारा रीलीज किए गये है। जिनमें हेरयाई रे कोटा बून्दी एवं टड़ मेंढ़को एलबम काफी सफल रहा है।

वर्तमान में आप राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, रामपुरा में वरिष्ठ संगीत अध्यापक के पद पर कार्यरत है। श्री प्रमोद राजकीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षाओं के परीक्षक रहे है। आपका सांगीतिक योगदान सरहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री प्रमोद जी व्यास द्वारा दी गई जानकारी।

Mk- jktsUnz ekgs’ojh ¼çk/;kid daB laxhr½

प्रतिष्ठित संगीत शिक्षक कलाकार डॉ. राजेन्द्र माहेश्वरी का जन्म 16 सितम्बर 1967 को हुआ था। डॉ. राजेन्द्र के कई सांगीतिक लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है। डॉ.राजेन्द्र ने राष्ट्रीय सेमिनार में भक्ति संगीत व समाज विषय पर पत्र वाचन किया है। डॉ. राजेन्द्र पटियाला घराने के प्रसिद्ध गायक उस्ताद बाखर खाँ के परम शिष्य रहे है। आपको शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियों में निपुणता प्राप्त है। डा. राजेन्द्र को राजस्थान के प्रमुख विश्वविद्यालयों व भारतखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ द्वारा सदस्यता प्रदान की गयी है। डॉ राजेन्द्र आकाशवाणी और दूरदर्शन पर अपने कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुतियाँ देते रहते है।

डॉ. राजेन्द्र कॉलेज शिक्षा निदेशालय जयपुर, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर , राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के सफल परीक्षक माने जाते है। डॉ. राजेन्द्र ने जवाहर कला केन्द्र जयपुर में कार्यक्रम अधिकारी (संगीत व नृत्य) के पद पर कार्य करते हुए विभिन्न राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का सफल आयोजन करवाया है।

डॉ. राजेन्द्र ने राजस्थान के विभिन्न अंचलो के कलाकारो को पंजीकृत कर उनकी कला से समाज को अवगत कराने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डा. राजेन्द्र संगीत शोध कार्यो में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। वर्तमान में डॉ. राजेन्द्र राजकीय जानकी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा में कार्यरत है। डॉ. राजेन्द्र ने ''गणपत लाल डाँगी व्यक्तित्व एवं कृतित्व राजस्थान लोक गीत एवं पारसी थियेटर के संबंध'' में शीर्षक पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया है। आपका सांगीतिक योगदान सदैव सरहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री डॉ. राजेन्द्र द्वारा दी गई जानकारी।

Jh jkenkl jko ¼lxhr f'k{kd½

श्री रामदास राव का जन्म 21 जून 1944 को हुआ था। आपको संगीत की शिक्षा पारिवारीक वातावरण में ही प्राप्त हुई है। आप संगीत की सभी गायन शैलियों में निपुण है। आपने अनेक देश भक्ति गीतों एवं गज़लों का सृजन किया है। श्री रामदास आकाशवाणी द्वारा B^+ हाई ग्रेड प्राप्त कलाकार रहे है। आप के कई कार्यक्रम आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्र जयपुर से प्रसारित होते रहते है। आपने प्रित न जाने रीत' (जी.टी.वी.) चैनल पर प्रसारित होने वाले सीरियल में अपना संगीत दिया है तथा स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन मुम्बई में सन् 1981–82 में अपना शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया है। श्री रामदास ने डिस्कों को चूड़ो व छोरी बीकानेर की, टी.सीरीज कम्पनी द्वारा रिलीज एलबम में अपना संगीत दिया है।

आप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर व पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ बीकानेर के परीक्षक रहे है। श्री रामदास को सन् 1979–80 मे सुर सिंगार संसद मुम्बई द्वारा सुरमणि की उपाधि से सम्मानित किया गया है तथा अखिल भारतीय गज़ल प्रतियोगिता कटनी मध्यप्रदेश में स्वर्ण कमेटी द्वारा भी आपको सम्मानित किया जा चुका है। आपने विभिन्न संस्थाओं में निर्णायक महोदय के रूप में भी अपना अमूल्य योगदान दिया है।

श्री रामदास को निर्देशक द्रोण द्वारा हिन्दी फिल्म 'लव इन डेजर्ट' के लिए पार्श्व गायक के रूप में साईन किया है। आपका सांगीतिक योगदान सरहानीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्री रामदास राव द्वारा दी गई जानकारी।

Jherh lq/kk vxzoky ¼çk/;kfidk lsokfuo`r½

प्रसिद्ध सितार वादिका व ख्याल गायिका श्रीमती सुधा अग्रवाल का जन्म 8 सितम्बर 1943 को हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा डॉ0 प्रेम प्रकाश जोहरी से गायन व श्री दामोदर लाल काबरा से सितार की शिक्षा प्राप्त की है। इनके अतिरिक्त आपको उस्ताद अमीर खाँ व पंडित रविशंकर द्वारा भी संगीत शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्रीमती सुधा अग्रवाल संगीत साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आपने कई विश्वविद्यालयों में परीक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दी है। श्रीमती सुधा अग्रवाल की अनेक सांगीतिक वार्ताओं का प्रसारण आकाशवाणी कोटा द्वारा किया जा चुका है। श्रीमती सुधा अग्रवाल ने राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा में सन् 1969 से 1998 तक संगीत प्राध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ दी है। श्रीमती सुधा ने सन् 1998 के पश्चात् उपाचार्य का पद ग्रहण कर इस महाविद्यालय में संगीत स्नातकोत्तर गायन, वादन की कक्षाओं का शुभारम्भ करवाया।

आपको भारत सरकार द्वारा आकाशवाणी जयपुर केन्द्र में 1986 से 2003 तक ऑडिशन बोर्ड में सदस्यता प्रदान की गई। श्रीमती सुधा ने अजमेर विश्वविद्यालय के संगीत एवं नाट्य विभाग में डीन के रूप में अपनी सेवाएँ दी है। आपको राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्यता भी दी गई है। आपने संगीतिका व संगीत संकल्प संस्था कोटा में सचिव के पद पर कार्य कर संगीत उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आप 1998 से 2000 तक राजकीय महाविद्यालय टोंक में प्राचार्य के पद पर सेवाएँ देते हुए सेवानिवृति प्राप्त की है। आज भी श्रीमती सुधा अग्रवाल के पास कई शोधार्थी मार्ग दर्शन हेतु आते रहते है। आपका यह सांगीतिक योगदान अतुलनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्रीमती सुधा अग्रवाल द्वारा दी गई जानकारी।

ifMr y[ku yky शर्मा ¼lxhr f'k{kd lsokfuo`r½

पंडित लखन लाल शर्मा का जन्म 3 दिसम्बर 1949 में हुआ था। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत की सभी विधाओं में निपुण है। पंडित जी ने संगीत शिक्षा वल्लभ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गायक पंडित ब्रजमोहन शर्मा के सानिध्य में प्राप्त की है। पंडित जी ने लगभग

45 वर्ष तक राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय रामपुरा में संगीत शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की है। पंडित जी द्वारा कई लेख संगीत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे है। पंडित जी द्वारा रचित कला निर्देशन एवं संगीत, संगीत और चिकित्सा, संगीत ज्योतिषी विधान, प्रमुख लेख है। आप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर व पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ राजस्थान बीकानेर व अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल के सफल परीक्षक रहे है। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन के सफल कलाकार रहे है।

आकाशवाणी द्वारा आपको बी हाई ग्रेड प्रदान की गई है। पंडित जी ने एल.सी.ई. आर.टी. दिल्ली द्वारा महिला बाल शिक्षा पर आधारित लघु फिल्म में संगीत निर्देशक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने संगीत सेमीनार कोटा में संगीत की दशा व दिशा विषय पर राजकीय जानकी देवी बजाज महाविद्यालय में व्याख्यान दिया है। पंडित जी ने अखिल भारतीय संगीत कॉन्फ्रेन्स में भाग लेकर राजस्थानी माढ़ गायन व शास्त्रीय गायन में सर्वोच्य स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है एवं संगीत विद्यार्थियों को प्रशिक्षण भी दिया है। आपका सांगीतिक योगदान सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में पंडित लखन लाल शर्मा द्वारा दी गई जानकारी।

Jherh lxhrk lDlsuk ¼v/;kfidk dsB lxhr½

प्रसिद्ध ख्याल गायिका श्रीमती संगीता सक्सैना का जन्म 3 नवम्बर 1968 को कोटा में हुआ था। आपने संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा व संस्थागत शिक्षण द्वारा प्राप्त की है। श्रीमती संगीता सक्सैना प्रसिद्ध ख्याल गायक प्रो0 पंडित रामाश्रय झा ''रामरंग'' की शिष्या रही है एवं आपके विभिन्न सांगीतिक लेख संगीत कला विहार में प्रकाशित हो चुके है। आपने राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरोही तथा राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुकी है।

श्रीमती संगीता सक्सैना संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा (सी.सी.आर.टी.) मान्य गुरू है। आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की सफल कलाकार मानी जाती है। आपने विभिन्न संगीत सेमीनारों में ख्याल गायिकी विषय पर व्याख्यान दिए है।

श्रीमती संगीता सक्सैना को 1992 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा श्रेष्ठ गायिका के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में आप संगीत गुरूकुल, आस्था मेलोडी के नाम से कोटा में संगीत की एक संस्था का संचालन कर रही है। जिसमें संगीत के कई विद्यार्थी संगीत शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे है। आपका यह सांगीतिक योगदान सराहनीय है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में श्रीमती संगीता सक्सैना द्वारा दी गई जानकारी।

mLrkn jtc vyh Hkkjrh ¼lxhr f'k{kd dykdkj½

राजस्थान के मात्र, हाड़ौती क्षेत्र की शान मधुर आवाज के धनी, संगीत शिक्षक तथा पार्श्व गायक उस्ताद रजब अली भारती का जन्म 14 दिसम्बर 1969 को कोटा में हुआ था। श्री रजब अली भारती संगीत–साहित्य सृजन में अपना विशिष्ट स्थान रखते है। आपके निर्देशन में संगीत के कई विद्यार्थी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दे चुके है। आपने संगीत की शिक्षा सेनिया घराने के प्रसिद्ध ख्याल गायक उस्ताद यासमीन भारती व डॉ0 रोशन भारती के सानिध्य में प्राप्त की है। श्री रजब शास्त्रीय व सुगम संगीत की विभिन्न गीत शैलियों में निपुण है। श्री रजब अली भारती ने यूनिवर्सल कम्पनी द्वारा रिलिज एलबम रूहानियत में गानों की रचना कर अपनी मधुर आवाज भी दी है। आपने कोटा सिंघानिया स्कूल का सुरतंरगिनी नामक एलबम भी रिलिज करवाया है। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन के सफल कलाकार माने जाते है। आपको आकाशवाणी द्वारा बी हाई ग्रेड प्रदान की गयी है। श्री रजब अली ने टी.वी. सीरीयल महाभारत, कैसी लागी लगन, जो इश्क की मर्जी वो रब की मर्जी एवं नाजुक रिश्ते मूवी में अपनी मधुर आवाज दी है। इसके अतिरिक्त आपने बॉलीवुड मूवी देख भाई देख में भी पार्श्व गायन किया है। आपको भारत सरकार के सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा गज़ल गायन में राष्ट्रीय छात्रवृति प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वर्तमान में आप 'सरपदमपत सिंघानियाँ विद्यालय, कोटा में **(H.O.D.)** संगीत विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में रजब अली भारती द्वारा दी गई जानकारी।

mLrkn lkfnd gqlSu dqjs'kh ¼[;ky xk;d½

प्रसिद्ध ख्याल गायक उस्ताद सादिक हुसैन कुरेशी का जन्म 10 दिसम्बर 1946 को हुआ था। उस्ताद कुरेशी आगरे घराने के प्रसिद्ध ख्याल गायक उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ (टोंक वाले) के परम शार्गिद रहे है।

आप शास्त्रीय गायन व सुगम संगीत की दोनों ही विद्याओं में निपुण है। आपने कई संगीत सेमीनारों में ख्याल गायकी विषय पर कई व्याख्यान दिए है। आप अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई के सफल परीक्षक रहे है। उस्ताद कुरैशी विभिन्न सरकारी व गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित की जाने वाली संगीत प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में आमन्त्रित किए जाते रहे है।

आपके प्रमख शिष्यों में प्रसिद्ध पार्श्वगायक क्षितिज तारे (मुम्बई) नीतू सोंलकी व श्री प्रमोद व्यास (संगीत शिक्षक) का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

वर्तमान में उस्ताद सादिक हुसैन कुरेशी अपने निवास स्थान पर ही संगीत विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे है। जिनमें कई विद्यार्थी महाविद्यालय स्तर के होते है। उस्ताद कुरेशी शान्त स्वभाव व मृदु भाषी के धनी व्यक्ति है। आप संगीत सेवा में निरन्तर संलग्न रहते है। आपका सांगीतिक योगदान सदा सराहनीय रहा है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में उस्ताद सादिक हुसैन कुरेशी द्वारा दी गई जानकारी।

पंडित महेश चन्द्र शर्मा (संगीत शिक्षक)

प्रतिष्ठित संगीत शिक्षक पंड़ित महेश चन्द्र शर्मा का जन्म 20 फरवरी 1939 को हुआ था। आप ग्वालियर घराने के प्रसिद्व ख्याल गायक श्री.ए.आर.शास्त्री के शिष्य रहे है। पंडित महेश चन्द्र शर्मा संगीत साहित्य लेखन में अपना विशिष्ट स्थान रखते है। आपकी आकाशवाणी कोटा केन्द्र द्वारा कई सांगीतिक वार्ताएं प्रसारित हो चुकी है। आपने विभिन्न संगीत सेमीनोरों में संगीत विषय से सम्बन्धित कई व्याख्यान दिए है। आपको राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर द्वारा संगीत कला पुरोधा का सम्मान प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त आपको राजस्थान पत्रिका सम्मान पत्र एवं मुम्बई की संकल्प संस्था द्वारा आपकों संगीत ऋषि की उपाधि भी प्रदान की गयी है।

पंड़ित जी ने हाड़ौती क्षेत्र की अनेक संगीत प्रतिभाओं को तैयार किया है जिनमें पार्श्वगायिका श्रेया घोषाल, शास्त्रीय गायिका संगीता सक्सैना, आर्दश सक्सैना, क्षितिज तारे का नाम प्रमुख है। पंडित जी को देश के ख्याति प्राप्त गायक कलाकारों जैसे पंडित जसराज, परवीन सुल्ताना, शुभा मृद्गल, डॉ0 प्रभा अत्रे, जैसे अनगिनत कलाकारों के साथ हारमोनियम पर संगीत करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। पंडित शर्मा राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय रामपुरा, कोटा से सेवानिवृत हो चुके है एवं वर्तमान में पंडित जी अपने निवास स्थान पर ही संगीत विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे है।

- शोधार्थी द्वारा दी गई प्रश्नावली के संदर्भ में पंडित महेश चन्द्र शर्मा द्वारा दी गई जानकारी।

भारतीय संगीत के विकास में राजस्थान के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित संगीत शिक्षण संस्थाओं में पूर्व तथा वर्तमान में कार्यरत संगीत शिक्षक कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगीत कला को इन सभी गुणीजनों ने अपने अथक प्रयास एवं निरन्तर साधना से सुरक्षित रखा है तथा संगीत के उन्नयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इन गुणीजनों के अथक प्रयास एवं परिश्रम से ही भारतीय संगीत जगत को योग्य संगीत शिक्षक एवं कलाकार प्राप्त हुये है। संगीत के उन्नयन में जिन–जिन कलाकारों ने पूर्व तथा वर्तमान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन सभी गुणीजनों के नामों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया गया है।

1. हाड़ौती क्षेत्र के पूर्व संगीत शिक्षक कलाकार :

श्री बालचन्द जैन, डॉ. नासिर मोहम्मद मदनी, श्री योगेन्द गुप्ता, श्री विजेन्द्र गौतम, श्री पूरणमल जैन, स्व0 डॉ0 चन्द्रकला सक्सैना, स्व0 श्री तेजकरण राव, स्व0 श्री रामगोपाल डांगी, स्व0 श्री केशरीलाल गंन्धर्व, स्व. श्री चांदमल राव, स्व0 नवलकिशोर राव, स्वः श्री रामकरण राव, स्वः छीतर जी राव, स्वः मांगीलाल जी पंवार, श्री ज्ञानेन्द्र गुप्ता, बुद्धीसिंह बाफना, आईदान शास्त्री जैसे गुणीजनों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

2. वर्तमान शिक्षक कलाकार :

श्रीमती संगीता सोरल, सुश्री सुनिता वासुदेव, सुश्री दमयन्ती पंत, श्री राजेन्द्र कुमार तंवर, श्री देवेन्द्र सक्सैना, श्री गोविन्द गन्धर्व, श्रीमती चित्रकला सक्सैना, श्री ओमप्रकाश पांचाल, डॉ0 अभिलाषा, डॉ0 कल्याण सिंह हाड़ा, डॉ0 पुनिता श्री वास्तव, श्रीमती विभा माथुर आदि संगीत शिक्षक कलाकारों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

<<kM {k= d iol rFkk orleku f’k{kd dykdkj

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के पूर्व तथा वर्तमान संगीत शिक्षक कलाकार जिन्होने संगीत क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उन प्रमुख गुणीजनों के नाम निम्न प्रकार से है।

1. <<kM {k= d iol lxhr f’k{kdk d uke :

डॉ0 आभा व्यास, डॉ0 रमेश चन्द्र नाडकर्णी, डॉ0 राजीव वर्मा, डॉ0 अपेक्षा पेडांकर, डॉ0 अनुसुया पाठक, डॉ0 माया रानी टॉक, प्रभा भारद्वाज, जैसे गुणीजनों को नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

2. <<kM {k= d orleku lxhr f’k{kd dykdkj :

डॉ0 शिवा व्यास, श्री राजीव अग्रवाल, श्री गीत सुधा भट्ट पारिक, डॉ0 शची भट्ट, श्री मोहन माथुर, श्री मोहनलाल, श्री हर्षित वेयर, श्रीमती उमा विजय, श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, डॉ0 कविता सक्सैना, डॉ0 सुनिता श्री माली, डॉ0 ओमनाथ व्यास, डॉ0 सन्तोष पाठक, श्रीमती प्रभा बजाज, श्रीमती कमलेश शर्मा, श्री अंकित पारीक, डॉ0 वन्दना कल्ला, श्रीमती अंजलिका शर्मा, डॉ0 नेहा जोशी, श्रीमती शिप्रा भट्ट, श्रीमती ऐश्वर्या भट्ट, श्रीमती गरिमा पारीक (बनस्थली) प्रो0 इना शास्त्री, प्रो0 किंशुका, श्री वास्तव, प्रो0 नीलम पारीक, प्रो0 शर्मीला टेलर, डॉ0 उर्वशी पारीक, डॉ0 वन्दना शर्मा, एम.एस. यकसिता वर्मा तथा डॉ0 वन्दना चौबे का नाम प्रमुखता से लिया जाता जा सकता है।

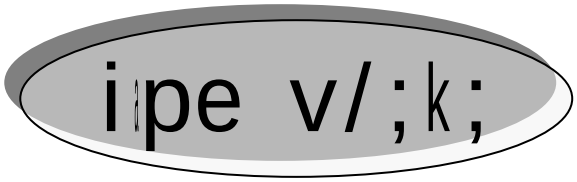

iape v/;k;

jkT; ,oa jk"Vªh; ifjos'k esa çpfyr laxhr f'k{kk dh n'kk o fn'kk

jkT; ,o jk"Vh; ifjos'k e çpfyr lxhr f'k{kk dh n'kk o fn'kkA

वैदिक युग का आरम्भ आर्यो के आगमन से माना जाता है। भारतीय संस्कृति का आधार वेदों को ही माना गया है। घरों में सभी लोग संगीत के द्वारा ही ईश–आराधना किया करते थे। संगीत की दो धारायें इस युग में प्रचलित थी तथा गायक, वादक तथा नर्तक तीनों ही प्रकार के कलाकार विधमान थे।

इस काल में वीणा का अत्यधिक महत्व था और वीणा स्त्रियों द्वारा बजाया जाने वाला वाद्य माना जाता था। वैदिक काल में रज्जू नृत्य, अरूण नृत्य, पुष्व नृत्य तथा वसन्त नृत्य आदि नृत्य प्रचलित थे। इस काल में कई धार्मिक मण्डलियाँ कार्य करती थी जिनका प्रमुख कार्य आध्यात्मिक तथा शास्त्रीय स्तर को विकसित कर पूर्णतया प्रदान करना था।

वैदिक काल में संगीत भक्ति के लिए ही था एवं कला तथा धर्म को पूरी तरह मिला दिया गया था ताकि कलाकार धर्म से विमुख ना हो। वैदिक काल में विभिन्न्न प्रकार के वाद्य यन्त्रो का भी प्रचलन था एवं वीणा के कई प्रकार थे जैसे महती, पिनाकी, कात्यानी, रावणी घोषावती जेष्ठा इत्यादि।

संगीत मुख्य रूप से यज्ञों का एक अभिन्न अंग बन गया था एवं यज्ञों के अवसरों पर नृत्यों का आयोजन किया जाता था। वैदिक काल में सप्त स्वरों का विकास हो चुका था जिन्हे क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र, अतिस्वार्य आदि नामों से पुकारा जाता था। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता स्वर साधना रही है। भारतीय संगीत यहाँ के पवित्र मन्दिरों के प्रांगण में ही विकसित हुआ है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में सांगीतिक उपासना का विशेष महत्व माना गया है।

iwtk dksfV xq.k LÙkks=] LÙkks=kRdksfVxq.kks tik!
tikRdksfVxq.k xkua] xkukRijrja ufgAA[1]

अर्थात स्तोत्र पूजा से करोड़ गुना अधिक फलदायक है तथा स्तोत्र से करोड़ गुना अधिक फलदायक जप है। जप से करोड़ गुना अधिक फलदायक गायन है तथा गायन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।

इस प्रकार भारतीय आध्यात्मिक जगत में यज्ञादि अवसरों पर सामगायन का विशेष महत्व था तथा जो गायक यज्ञों में सामगायन करते थे वे विशेष आदर एवं सत्कार के पात्र समझे जाते थे।

oSfnd laxhr dh f'k{k.k ç.kkyh

वैदिक काल में संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही था। इस परम्परा में शिष्य अपने गुरूजनों से सीखकर अन्य शिष्यों को सीखाता था।

शिक्षा ग्रन्थों में ऐसे संकेत निहित है जिनसे ज्ञात होता है की आरम्भिक युग में वैदिक शाखा, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद, सूत्र, आदि विषयों का अध्ययन अध्यापन विद्यालयों में होता था जिन्हे प्राचीन साहित्य में चरण कहते थे। वैदिक साहित्य में साम प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित थे।[2]

1. पिता पुत्र के रूप में
2. गुरू शिष्य परम्परा के रूप में
3. गुरूकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करना

1. डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत मासिक अंक, मार्च 2014 पृष्ठ संख्या 21
2. डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 382

fofHkUu mikf/k;k ,oa f'k{k.k l=

वैदिक काल में 12 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले को स्नातक, 24 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वालों को अधिस्नातक, 36 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वाले को रूद्र तथा 48 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले को आदित्य कहा जाता था। शिक्षा सत्र श्रावण मास की पूर्णिमा से लेकर पौष मास की पूर्णिमा तक चलता था। शिक्षा संस्थानों प्रातः काल का समय स्वाध्याय व अध्ययन के लिए छोड़कर 7 बजे से 11 बजे तक तत्पश्चात भोजनोपरान्त 2 बजे से सांय 6 बजे तक अध्यापन कार्य चलता था।[1]

शिक्षण शुल्क व परीक्षा विधि

संगीत व अन्य विषयों की शिक्षा प्रदान करने के पारितोषिक के रूप में वैदिक काल में आधुनिक समय की भॉति आर्थिक शुल्क का कोई प्रावधान नहीं था। शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् शिष्य अपने गुरू के समक्ष अपने सामर्थ्य के अनुसार कुछ भी उपहार स्वरूप प्रस्तुत करते थे। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ विद्यार्थी आगन्तुक शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे। परीक्षा विधि भी अनोखी थी। शिक्षा सम्पूर्ण होने पर विद्यार्थी गुरूजनों एवं गुणीजनों के समक्ष बैठकर उनके प्रश्नों के उत्तर देता था और सही उत्तर देने पर ही वह योग्य कहलाता था।

इस सन्दर्भ में डॉ. महेश सिंघल कहते है कि गुरू ऋण से उन्मुक्त होने हेतु शिक्षण कार्य निःशुल्क किया जाता था। शिक्षा समाप्ति पर गुरू दक्षिणा के रूप में शिष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार कुछ भी दे देता था। शिक्षा प्रणाली में आज के समान परीक्षाओं की व्यवस्था नहीं थी एवं शिक्षा समाप्ति पर विद्यार्थी को विद्वानों द्वारा किए गए प्रश्नों के उत्तर देने होते थे। इस प्रकार उस काल में विद्यार्थी का उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण करना न होकर ज्ञान प्राप्त करना होता था। अतः वह बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न होता था।[2]

---

1. डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 383
2. डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल वही पृष्ठ

शिक्षा समाप्ति के पश्चात् समावर्तन संस्कार आधुनिक दीक्षान्त समारोह के समकक्ष होता था जिसमें योग्य घोषित विद्यार्थी को नए वस्त्र, आभूषण, पगड़ी, छात्ता, आदि दिया जाता था तथा एक विशेष होम का आयोजन करके कुल देवता तथा गुरू की पूजा के उपरान्त स्नातक विद्यादान का व्रत लेता था। इस समय गुरू–शिष्य को जो अन्तिम उपदेश देता था उसे समावर्तन उपदेश कहा जाता था। संगीत एवं अन्य विषयों के शिक्षण संस्थान कोलाहल से दूर होते थे तथा एकान्त में स्वच्छ तथा शुद्व वातावरण में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे तथा शिष्यों की साधना में लग्न, कुशाग्र बुद्वि, गुरूजनों के प्रति निष्ठा आदि अनिवार्य गणु माने गए थे।[1]

भारतीय संगीत की प्राचीन शिक्षण व्यवस्था

भारत में वेंदो के समय से ही संगीत शिक्षा गुरूमुख से दी जाती थी। गुरूकुल में रहकर गुरूमुख से निःसृत वाणी को कठोर अनुशासन, नियमित एवं संयम जीवन व्यतीत करते हुए अनवरत रूप से ग्रहण करते जाना ही शिक्षा का एक मात्र साधन था। संगीत की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा उचित है क्योंकि संगीत एक ऐसी कला है जो मस्तिष्क द्वारा कम तथा हृदय द्वारा अधिक ग्राह्य है।

अतः मौखिक रूप से प्राप्त तथा अभ्यास व साधना द्वारा परिपोषित यह विद्या योग के समान ही साधन व साध्य बनकर संगीत को आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचा देती है। संगीत साधना में योग के लिए निर्दिष्ट आठ अंगो का समन्वय संगीत को स्वतः योग साधना से जोड़ देता है अन्तर केवल इतना ही है कि योग साधना अनाहत नाद को साध्य व साधक मानते है जबकि संगीत साधना का आधार नाद है।

अतः वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा में उनके आध्यात्मिक धरातल को अत्यन्त महत्व दिया गया था।[2]

1. डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 383
2. डॉ. मधुबाला सक्सैना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप पृष्ठ संख्या 105

संगीत की शिक्षण प्रक्रिया में उस समय साम संगीत का शिक्षण देते समय भावी उद्गाता को पहले आर्चिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी जिससे गान की आधारभूत ऋचाएँ उनके लिए कण्ठगत हो जाए तत्पश्चात् ही इनमें यथायोग्य परिवर्तन व परिवर्धन करने की शिक्षा दी जाती थी।

सामगान में प्रस्ताव, उदगीथ, प्रतिहार, उपद्रव व निधान आदि साम विभागों के माध्यम से ओम्, हूम, ओंमकार आदि शब्दों का उच्चारण करना महत्वपूर्ण समझा जाता था। गायन को सुदृढ़ बनाने के लिए दीर्घ–श्वास क्रिया का अभ्यास किया जाता था।[1] रामायण काल के पाठ्यक्रम में वेद तथा षट् वेदांगों का अन्तर्भाव था, इसके स्पष्ट प्रमाण रामायण में प्राप्त होते है।

संगीत के संदर्भ में मुनि व्याल्मिकी के द्वारा लव–कुश को दी गई स्वर–पद ताल, प्रमाण, मूर्च्छना आदि की शिक्षा के उल्लेखों से ज्ञात होता है की उस समय में संगीत शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप था जिसके अन्तर्गत संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष दोनो ही समाविष्ट थे। इस काल में संगीत शिक्षा का आन्तरिक पक्ष भी प्रबल व व्यवस्थित था। रामायण में ही व्याल्मिकी मुनि द्वारा मेघावी तथा मधुर स्वर सम्पन्न लव–कुश को अपना शिष्य बनाने का उल्लेख मिलता है। यथा–

d`'khyoks rq /keZKkS jktiq=kS ;'kfLoukS
HkzkrjkS Loj lEiUukS nn”kkZfJeokfluks
l rq es?kkfoukS n`'V~;k osns'kq ifjfuf'BrkS
osnksic`ag.kkFkkZ; rkoxzkã;r izHkq%!![2]

1. डॉ. मधुबाला सक्सैना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप पृष्ठ संख्या 105
2. डॉ. मधुबाला सक्सैना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप पृष्ठ संख्या 106

महाभारत काल में संगीत शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त व्यवस्थित था। इस काल के राजाओं में रसास्वादन की पर्याप्त क्षमता विधमान थी। क्योंकि उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम में भी धनुर्विधा, हस्त विधा, रथ विधा आदि के साथ–साथ गार्न्धव तथा अन्य कलाओं का भी समावेश होता था। स्त्रियों को संगीत शिक्षा देने के लिए गुणीजनों को राजभवनों में नियुक्ति दी जाती थी। विश्व बन्धु गार्न्धव की परम्परा से ही अर्जुन गीत वाद्य व नृत्य की सशक्त शिक्षा प्राप्त कर गार्न्धव विशारद कहलाए। बड़े–बड़े नगरों में संगीत शालाओं का प्रबन्ध शासन की और से किया जाता था एवं युवतियों की नृत्य शिक्षा के लिए ही मतस्यराज की राजधानी में ऐसी शालाओं का निर्माण किया गया था। तत्पश्चात् पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी गीत के लिए गीति तथा वृन्दवादन के लिए तूर्य शब्द का उल्लेख किया गया है तथा हाथ से ताल देने वालों को पाणिध्र कहा जाता था। पाणिनि के काल में संगीत शिक्षा की दशा उत्कृष्ट रूप में विधमान थी। पुराण तथा तन्त्र ग्रन्थों में भी अनेक प्रसंगों मे संगीत का महत्व बताया गया है। इस प्रकार भारतीय संगीत को प्राचीन काल से ही सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता था।[1]

बौध काल में तक्षशिला विद्या दान का प्रमुख केन्द था, जिसमें वैदिक विद्यालय 'अष्टादश विद्यालय आदि विभिन्न अध्ययन–विभागों में पाँच– पाँच सौं विधार्थी शिक्षा पातें थे। वाराणसी बौद्व काल का एक दूसरा विद्या केन्द्र था जिसमें संगीताध्यापन का एक स्वतंत्र विभाग था। नालन्दा, विक्रमशिला तथा तदन्तपुरी जैसे अन्य विश्वविद्यालयों में भी गार्न्धव का स्वतन्त्र निकाय अथवा फैकल्टी थी तथा इसके अधिष्ठाता के रूप में भारत विख्यात संगीतज्ञों की नियुक्ति की जाती थी। कोटिल्य के अर्थशास्त्र के साक्ष्य से स्पष्ट है कि नाट्य तथा संगीत कला को राजाश्रय प्राप्त था। गणिका, दासी तथा नटों को गीत, वाद्य, नृत्य नाट्य, नृत वैशिक आदि कलाओं की शिक्षा देने वाले व्यक्तियों को शासन की और से द्रव्य दिया जाता था। इनके पाठ्यक्रम में गीत, वाद्य, नृत्य नाट्य, वीणा, वेणु तथा मृदंग की शिक्षा सम्मिलित थी। इस युग में संगीत कला को यथेष्ट राजाश्रय सम्मान प्राप्त था एवं राजगृहों में संगीत शालाओं का संचालन बड़ी ही सफलता पूर्वक किया जाता था।[2]

1. भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ शरदचंद्र श्री धर पंराजये पृष्ठ संख्या 163–64
2. डॉ अमरेश चन्द्र चोबे, संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली पृष्ठ संख्या 18

e/; ;qx esa laxhr dk 'kkL=h;&f'k{k.k

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल सांस्कृतिक विकास एवं उन्नति का स्वर्णिम काल था। इसके उपरान्त राजपूत काल सांस्कृतिक संक्रमण काल बन गया। इस काल में हमारें देश पर तुर्को के आक्रमण प्रारम्भ हो गये, जिनके परिणाम स्वरूप देश में राजनैतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई एवं सांस्कृतिक विकास अवरूद्व हो गया। गुलाम, खिलजी, तुगलक, शैयद एवं लोदी वंशों के अल्पकालिक शासन क उपरान्त मुगल शासन का सूत्रपात हुआ। इन सभी शासन कालों में चिश्ती–परम्परा के सूफी सन्तों ने धर्म प्रचार हेतु संगीत को प्रभावी माध्यम के रूप में ग्रहण किया। इन संतो का प्रभाव तत्कालीन सुल्तानों एवं बादशाहों पर पूरी तरह था। इन विभिन्न वंशों के अनेक सुल्तान या बादशाह संगीत प्रेमी तो थे परन्तु उन्हे अपने अस्तित्व रक्षा की चिन्ता इस और बहुत अधिक आकृष्ट नहीं कर सकी।

हिन्दुस्तानी दास तथा दासियों को बादशाहों एवं रईसों के मनोरंजनार्थ संगीत की शिक्षा दी जाती थी। उनकी प्रंशसा में गज़लें तथा कोलों की रचना की जाती थी। मुसलमान शासकों ने अपने धर्म एवं संस्कृति के प्रचारार्थ जगह–जगह मस्जिदे, मदरसे एवं खानाकाहों (सूफी मठो) की स्थापना करवाई थी और ये मस्जिद एवं मदरसे ही शैक्षणिक संस्थानों का कार्य करते थे। इसी बीच ग्वालियर राज्य के राजा मानसिंह तोमर हुए इनका काल ग्वालियर राज्य का उत्कर्ष काल रहा है और यही तानसैन का स्वाध्याय काल भी रहा है। मानसिंह गुणियों के आश्रयदाता रहे है और संगीतकला को विशेष आश्रय उनके हाथों से मिला एवं संगीत के अध्यताओं के लिए संगीत शाला खोलने का श्रेय उन्ही को है।[1]

मानसिंह ने संगीताचार्य बैजू, बक्सू, महमूद, लोहंग, कर्ण प्रांडवीय आदि की सहायता से ही ''मानकुतूहल'' संगी ग्रन्थ की रचना करवाई थी। जिसके द्वारा ध्रुवपद गायकी का प्रचार हुआ था। तत्कालीन सांस्कृतिक केन्द्र तथा ध्रुवपद गायकी के गायन–विद्यालय में इन्ही आचार्यो से तानसेन ने संगीत शिक्षा पाई थी।[2]

1. डॉ. अमरेशचन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत व उसका वर्तमान स्वरूप' पृष्ठ संख्या 20
2. डॉ. अमरेशचन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत व उसका वर्तमान स्वरूप' पृष्ठ संख्या 21

?kjkuk d: i e lxhr dh f'k{k.k 0;oLFkk

वैदिक काल के पश्चात् भारत में मुगल साम्राज्य का आगमन हुआ। भारत में देशी व विदेशी सभ्यताओं के मिश्रण से एक नवीन प्रकार के समाज का उदय हुआ। नई प्रकार की शिक्षण पद्वतियाँ व राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित जन–जीवन का नवीन स्वरूप प्रकट हुआ। मगल शासक संगीत प्रेमी थें परन्तु संगीत के प्रति प्रयत्नशील नहीं थे। इसी कारण संगीत एक भोगविलास की वस्तु बनकर रह गया। हिन्दू तथा मुसलमान गायको में संर्कीण मनोवृति उत्पन्न हो गयी थी वह भी भारतीय संगीत के लिए लाभ्रपद सिद्व हुई। इसकी बदोलत मुगल काल के अन्तिम चरण में घरानों का उदय हुआ।

अंग्रेजों के आगमन से सामाजिक परिवेश में पुनः परिवर्तन हुआ और संगीत घरानों के अन्तर्गत फलता–फुलता रहा। घराने में निहित संकिर्णता के कारण संगीत शिक्षा प्रमुख व योग्य शिष्यों को ही दी जाती थी एवम् शिष्य से इस बात का वचन भी लिया जाता था कि वह गुरू द्वारा सीखी हुई विद्या को किसी अन्य को नहीं सीखायेगा अर्थात संगीत को छुपाकर रखा जाता था।

इन घरानों में संगीत का प्रयोगात्मक पक्ष काफी प्रबल रहा परन्तु उस्तादों की संर्कीण विचारधारा के कारण संगीत का विकास अवरूद्ध हो गया। इस पद्धति में गुरू को शिष्य के कंठ को अत्यधिक सुरीला व लचीला बनाने में काफी समय लग जाता था एवं गुरू अपने शिष्य को हु बहु अपने जैसा ही बनाना चाहता था। शास्त्रीय संगीत केवल घरानेदार संगीतज्ञों की धरोहर बनकर ही रह गया। परन्तु संगीत के विकास व संरक्षण की दृष्टि से घरानों की महत्ता को नकारा भी नहीं जा सकता है। क्योंकि घराने ही भारतीय संगीत के मार्ग दर्शक व पोषक रहे है।

लेकिन जैसे–जैसे राज्याश्रयों का संरक्षण घरानों को मिलना बंद हो गया वैसे ही संगीत का मार्ग अवरूद्व हो गया और घराने बिखरने लग गए। राज्यों में नियुक्त सभी संगीतज्ञ जनता के बीच आ गए परन्तु राजनैतिक परिस्थितियों के कारण उन्हे जीविका का प्रबन्ध करना अनिवार्य हो गया। फलस्वरूप साधना के लिए उपयुक्त वातावरण व नए नए प्रावधान संगीत के लिए आज भी दिया गया है।

घराना शिक्षा पद्धति की मुख्य विशेषता यह थी कि गुरू शिष्य को अपने जैसा ही धुरन्दर कलाकार बनाना चाहता था। गुरू द्वारा शिष्य का परिक्षण किया जाता था। उसके बाद ही उसे शिक्षा प्रदान करते थे। गुरू एवं शिष्य के बीच पुत्र तथा पिता जैसे संबंध कायम रहता था। शिष्य को अपने घराने व घराने में प्रचलित नियमों तथा परम्पराओं का पालन करना अनिवार्य समझा जाता था। इन विशेषताओं के कारण ही घरानों ने संगीत को सुरक्षित रखते हुए अपनी जड़े इतनी गहरी जमा रखी है जिसका प्रभाव वर्तमान समय में भी दिखाई पड़ता है। अर्थात वर्तमान में भी यह परम्परा जीवित है।

vk/kfud dky e lxhr dk 'kkYk; f'k{k.k

आधुनिक समय में राज्य एवं राष्ट्रीय परिवेश में प्रचलित संगीत शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। संगीत शिक्षा में नए–नए उपक्रम, संगीत, शिक्षा की सुलभता विभिन्न संगीत संबंधी पाठ्य पुस्तकों की रचनाएँ आदि क्रान्तिकारी परिवर्तन आज हमारे समक्ष प्रकट हुए है।

वर्तमान परिवेश में संगीत को बढ़ावा देने हेतु देश की सभी राज्या सरकारों व भारत सरकार द्वारा इसे ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षा से जोड़ा गया है। आज देश के सभी राज्यों में स्थित संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में संगीत विषय को भी अन्य विषयों की भांति पढ़ाया जा रहा है। इसकी बदोलत आज देश के सभी राज्यों में संगीत विद्यार्थियों की भरमार है। ये सभी संगीत विद्यार्थी संगीत साधना के साथ–साथ संगीत विकास एवं प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

आज देश के विभिन्न राज्यों में स्थापित विश्वविद्यालयों में संगीत को स्नातक, स्नातकोत्तर व पीएच.डी. पाठ यक्रमों में सम्मिलित किया गया है। आज कई संगीत विधार्थी संगीत में अधिस्नातक व पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके है एवं कुछ लोग कार्य में संल्गन है। आज कोई भी व्यक्ति या संगीत विद्यार्थी किसी भी उम्र में संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

क्योंकि संगीत को सर्वसुलभ बना दिया गया है। वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त देश में अनेक संगीत संस्थाओं की भरमार है जो संगीत के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इन प्रमुख संस्थाओं में भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय लखनऊ, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, सुर सिंगार ससंद मुम्बई, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई, माधव संगीत विद्यापीठ ग्वालियर एवं इन्द्रा कला संगीत विश्वविद्यालय खैराबाद, मध्यप्रदेश का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है, जो प्रति वर्ष लाखों संगीत विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ उन्हे उपाधियाँ भी प्रदान करता है।

संगीत विकास हेतु देश की सुप्रसिद्ध संगीत संस्था स्पिक मैके जो लगातार संगीत के प्रचार–प्रसार व संगीत विरासत को संरक्षण प्रदान कर रही है। यह संस्था ख्याति प्राप्त कलाकारों को आंमत्रित कर संगीत विद्यार्थियों को उनसे अवगत करवाती है। आज यह संस्था संगीत की नवीन प्रतिभाओं को रंगमंच प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निभा रही है। संगीत शिक्षा को बढ़ावा देने व लोग कलाओं के संरक्षण हेतु प्रत्येक राज्य में भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमियों की स्थापना की गयी है। इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलाओं कों संरक्षण प्रदान कर संगीत की नवीन प्रतिभाओं को रंगमंच प्रदान करना है।

ये संस्था संगीत, नृत्य, नाटक व संगीत संबंधी विभिन्न गोष्ठियों व संगीत सम्मेलनों का आयोजन करती है जिससे संगीत विकास में निरन्तरता बनी रहती है। संगीत के क्षेत्र में राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर, जवाहर कला केन्द्र जयपुर, रविन्द्र मंच जयपुर, भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर व जयपुर कथक केन्द्र आज भी संगीत की दिशा को सजाने संवारने में प्रयत्नशील है।

संगीत की इस महान् विकास यात्रा के पश्चात् आज भी इस विषय की दशा में सुधार करने की आवश्यकता है। आज सरकार द्वारा विभिन्न पुरस्कार दिए जा रहे है लकिन ये पर्याप्त नहीं है। आज कई संगीत विद्यालयों के अपने निजी भवन नहीं है जिससे संगीत विद्यार्थियों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कई संगीत विभाग ऐसे है जिनमें केवल एक तबला वादक से ही काम चलाया जा रहा है।

अर्थात पर्याप्त मात्रा में सुविधाएँ नहीं दी जा रही है। आज कई संगीत विद्यार्थी संगीत में **M.A/Ph.D/NET/SLET** की उपाधियाँ प्राप्त करने के पश्चात् भी उन्हे रोजगार प्राप्त नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है की संगीत विषय को केवल उच्च शिक्षा में ही सम्मिलित नहीं करके इसे प्राथमिक स्तर से उच्च शिक्षा तक सम्मिलित किया जाना चाहिए। राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर प्राथमिक तथा माध्यमिक, संगीत शिक्षक, स्कूल व्याख्याता एवं कॉलेज व्याख्याताओं की भर्तीयाँ करनी चाहिए। इससे संगीत विद्यार्थियों का रूझान संगीत की और बढ़ेगा और उन्हे रोजगार के अवसर भी मिलते रहेगें।

वर्तमान समय में लगभग 500 विद्यार्थी प्रति वर्ष संगीत अधिस्नातक की उपाधि प्राप्त कर लेते है। ऐसे में बेराजगार की संख्या बढ़ जाती है। एक प्रसिद्ध कहावत है, एक अनार सौं बीमार अर्थात संगीत में सरकारी सेवाओं में रोजगार नही ंके बराबर है। अतः ऐसे में संगीत विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी अपने आपको ठगा सा महसूस करता है अतः सरकार का दायित्व है कि वह संगीत की दयनिय स्थिति में सुधार करते हुऐ इसमें रोजगार के अवसर बढ़ाना का प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा धीरे–धीरे संगीत विद्यार्थियों का रूझान इसकी और कम होता चला जायेगा एवं संगीत का विकास अवरूद्व हो जायेगा। अतः संगीत कला की विरासत को बरकरार रखने हेतु सरकार को हर सम्भव प्रयास करने चाहिए।

वर्तमान समय में टी.वी. के छोटे पर्दे पर बच्चों तथा बड़ी उम्र के लोगों के लिए डाँस रियलिटी शो आयोजित किए जा रहे है। जिसमें संगीत की नवीन प्रतिभाओं को अवसर प्राप्त हो रहा है। इसके अतिरिक्त आज भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अनेकों देशों के विश्वविद्यालयों में भी भारतीय संगीत को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। इन विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त वहाँ की निजी संस्थायें भी भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पंड़ित रविशंकर द्वारा स्थापित किन्नर स्कूल ऑफ इण्डियन क्लासिक म्यूजिक तथा कैलीफोर्निया में संचालित अली अकबर खाँ स्कूल ऑफ म्यूजिक भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जा सकती है।

भारत सरकार ने सन् 1950 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद सन् 1953 मे संगीत नाट्क अकादमी तथा सन् 1979 मे सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की।[1] फलस्वरूप आज देश के ख्याति प्राप्त कई कलाकारों द्वारा संगीत में नयी–नयी रागों व नए–नए वाद्य यन्त्रों का निर्माण किया जा रहा है। भारत के सुप्रसिद्ध मोहन वीणा वादक पंडित विश्वमोहन भट्ट जिन्होने पाश्चात्य गिटार पर नवीन कार्य करके उसे मोहन वीणा का स्वरूप प्रदान किया जिसकी गूंज देश तथा विदेशों में गुंजायमान हो रही है।

भारत के सुप्रसिद्ध ध्रुपद व धमार विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तेलंग व सुप्रसिद्व ध्रुपद गायिका डॉ. मधु भट्ट तेंलग व सुप्रसिद्व ध्रुपद विशेषज्ञ प्रोफेसर ऋत्विक सान्याल जिन्होने ध्रुपद तथा धमार में विभिन्न नवाचारों को जन्म देकर संगीत को एक नवीन दिशा प्रदान की जो संगीत विकास की और बढ़ते कदम का शुभ संकेत माना जा सकता है।

---

1. डॉ लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत मासिक अंक पृष्ठ संख्या 26, (मई 2013)

lxhr f'k{kk esa b.VjusV dk egRo

वर्तमान वैज्ञानिक युग में संचार माध्यमों के प्रयोग ने क्रान्ति पैदा कर सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँध दिया है। देश की संस्कृति, कला, शिक्षा इत्यादि को समद्व एवं विकसित करने व उच्च शिक्षा को विकसित करने मे संचार माध्यम अत्यन्त लोकप्रिय एवं लाभप्रद सिद्व हुये है।

विज्ञान, साहित्य, मनोविज्ञान, चिकित्सा, तकनीकी तथा कला इत्यादि अनेक क्षेत्रों में दूर संचार साधनों का प्रयोग बढ़ा है। जिससे शिक्षण पद्वति में भी परिवर्तन आया है। निःसन्देह इन माध्यमों के प्रयोग में शैक्षिक ज्ञान की व्यापकता को बढ़ाया है। संचार माध्यमों में रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, टेपरिकार्डर, सी.डी. के अतिरिक्त वर्तमान में इण्टरनेट भी अपनी सशक्त एवं प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह कर रहा है।[1]

भारतीय संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाता है। वर्तमान समय में संगीत कला क साथ–साथ एक विषय के रूप में भी मान्य है। अन्य विषयों की भाँति संगीत कला का शिक्षण भी जनसाधारण को सुलभ है। इस युग में संचार के अनेक इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के प्रयोग ने शिक्षा के विविध क्षेत्रों में तेजी से प्रगति की है, वहीं संगीत शिक्षा भी इससे प्रभावित हुई है।

इन माध्यमों के प्रयोग से संगीत कला अन्तराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुई है। संगीत शिक्षा का क्षेत्र व्यापक हो, ख्याति प्राप्त संगीत विदो की कला से संगीत जिज्ञासु परिचित हो एवं साथ ही साथ संगीत शिक्षा रोजगार पूर्ण हो, इस हेतु भी यह माध्यम महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में इण्टरनेट का प्रयोग प्रायः शिक्षा के सभी क्षेत्रों मे हो रहा है। अतः संगीत में भी इण्टरनेट का प्रयोग संभव है।[2] संगीत शिक्षा (गायन, वादन, तथा नृत्य) पूर्व से ही गुरू शिष्य परम्परा द्वारा मौखिक पद्वति पर आधारित रही है।

---

1. संगीत कला विहार अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल,मुम्बई, पृष्ठ संख्या 24, मई 2006
2. .....वही पृष्ठ.

अर्थात संगीत में औपचारिक एवं पारस्परिक शिक्षा प्रणाली सदियों से ही अभिजात भूमिका का निर्वाह करती रही है। परन्तु वर्तमान वैज्ञानिक युग में सूचना तकनिकी के नवीन प्रयोग अर्थात् इंटरनेट द्वारा संगीत कला के सैद्वान्तिक एवं क्रियात्मक पक्ष को विश्व के किसी भी स्थान पर सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। संगीत शिक्षण को विश्व व्यापी बनाने हेतु इण्टरनेट की प्रमुख सेवायें जैसे –ई–मेल, ऑनलाईन, चैटिंग, वीडियों कॉन्फ्रन्सिंग, एजूसेट एवं व्यवसाय हेतु ई–कामर्स का प्रयोग किया जा सकता है।

इन सभी के साथ ही इण्टरनेट के माध्यम से संगीत कला विकास की नवीन प्रवृतियों में वृद्वि, अभिवृति, प्रोत्साहन, संगीत शिक्षा क्षेत्र में परिमाणात्मक एवं संख्यात्मक विस्तार, अनुसंधान की गतिविधियों में वृद्वि, शास्त्रीय एवं सैद्वान्तिक आधार की व्यावकता, प्रामाणिकता व्यवसायीकरण में सहायता, विशेषज्ञता चुनने की स्वतंत्रता एवं संगीत संबंधी कार्यक्रम का विश्व स्तर पर प्रसारण इत्यादि में भी इण्टरनेट सहायक सिद्व हो सकता है।

आधुनिक समय में संगीत शिक्षा को विद्यालयों महाविद्यालयों में एक ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। जिसकी बदौलत संगीत सभी के लिए सुलभ हो गया है। भारतीय विश्वविद्यालयों व देश के विभिन्न शिक्षा बोर्डो ने इस विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलत कर इसे मान्यता प्रदान की है। आज संगीत में एम.ए/पीएच.डी. व अन्य डिग्री डिप्लोमा प्राप्त संगीत विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर चुके है और वर्तमान में भी कर रहे है।

देश में अनेक संगीत संस्थाओं ने भी अपने–अपने संगीत विद्यालय स्थापित कर रखे है। इन प्रमुख संस्थाओं में अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई, भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय लखनऊ, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर, प्राचीन कला केन्द्र चड़ीगढ़ इत्यादि। इन सभी संगीत संस्थाओं में गायन, वादन व नृत्य की कक्षाओं का संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा है।

इन सभी शिक्षण संस्थाओं में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) जो देश एक मात्र संगीत विश्वविधालय है जो क्रियात्मक तथा शास्त्रात्मक दोनों की ही शिक्षा प्रदान करता है एवं विभिन्न डिग्री व डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन कर संगीत शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है।

आधुनिक विद्यालयी, संस्थागत तथा विश्वविद्यालयी संगीत शिक्षण व्यवस्था पर दृष्टिपात किया जाये तो इसके सहारनीय परिणाम हमारे सामने प्रकट होते है। इस पद्वति में निष्पक्ष भाव से किसी भी संगीत जिज्ञासु को निर्धारित शुल्क पर संगीत शिक्षा प्राप्त हो जाती है। वह व्यक्ति विशेष शिक्षा को ग्रहण करने में कितना सक्षम है यह उसकी व्यक्तिगत विशेषता कहलाती है।

संगीत के क्रियात्मक पक्ष के साथ–साथ इस प्रणाली में संगीत शास्त्र को भी पर्याप्त मात्रा में महत्व दिया गया है। पाठ्यक्रम में कक्षा स्तर के अनुसार ही क्रियात्मक पक्ष एवं शास्त्र पक्ष का अध्ययन करवाया जाता है। कक्षाओं का संचालन समय सारणी के आधार पर किया जाता है।

सामूहिक शिक्षण होने के कारण विद्यार्थियों में परस्पर प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती है और वे अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने की इच्छा रखते है। राज्य सरकार एवं भारत सरकार द्वारा प्रखर तथा कुशाग्र विद्यार्थियों को छात्रवृतियाँ प्रदान की जाती है। संस्थाओं द्वारा समय समय पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास हेतु प्रतिवर्ष संगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जाता है। जिसके द्वारा विद्यार्थियों के आत्मबल में वृद्वि होती है। विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थी परिपक्व होता है वह संगीत की सूक्ष्मताओं का गहन अध्ययन कर अच्छा रचनाकार, आलोचक शिक्षक व संगीत शोधक अर्थात वह कुछ भी बन सकता है।

वैदिक काल में संगीत का स्वरूप स्थिर हो चुका था तथा संगीत को शिक्षा का एक अंग स्वीकार किया गया था। वैदिक काल में सप्त स्वरों का विकास एवं उनका नामकरण हो चुका था। संगीत को आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझा जाता था। घरों में लोग संगीत के द्वारा ही पूजा अर्चना किया करते थें तथा स्त्रियाँ वीणा बजाने में निपुण मानी जाती थी।

वैदिक युग में सामगान का महत्वपूर्ण स्थान था एवं विभिन्न प्रकार के वाद्ययन्त्रों का विकास हो चुका था। वैदिक कालीन संगीत शिक्षा हेतु मूल रूप से गुरू शिष्य परम्परा का ही प्रावधान था। वैदिक काल से पौराणिक काल तक आते–आते संगीत में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। इस युग में वैदिक युग के ही वाद्य यन्त्रों को उपयोग में लाया गया था। प्राचीन काल में नवीन वाद्य यन्त्रों का विकास नही हुआ। केवल गायन एवं नृत्य की नवीन पद्वतियाँ निकाली गई।

प्राचीन काल में संगीत सामान्य जन–जीवन से लेकर धार्मिक क्षेत्र एवं राजघरानों तक प्रचलित था तथा संगीत जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विधमान था। इस युग में स्वर, ग्रम, मूर्च्छना आदि का विकास हो चुका था। प्राचीन कालीन सप्त स्वरों का नाम इस प्रकार से बताया गया है। कुष्ट प्रथम द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, मन्द्र अतिस्वार्य आदि इस युग की सबसें बड़ी विशेषता स्वर साधना रही है।

प्राचीन काल में जहाँ संगीत शिक्षा का व्यवस्थित रूप था वैसा मध्यकाल में नहीं था। मध्यकाल में संगीत शिक्षा की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी तथा संगीत शिक्षा केन्द्रों की उचित व्यवस्था नहीं थी एवं संगीत केवल राजदरबारों की शोभा बनकर ही रह गया। इस दृष्टि से यह काल भारतीय संगीत का दुर्भाग्य पूर्ण काल रहा है। अर्थात इस काल में संगीत की दशा अच्छी नहीं थी।

फिर भी मुसलमानों के आगमन से भारतीय संगीत में विदेशी प्रभाव के मिश्रण से संगीत का नवीन स्वरूप निर्मित हुआ। संगीत मन्दिरों से निकलकर राजदरबारों में पहुँच गया और देव स्तुति का स्थान बादशाहों एवं शंहशाहों तक सीमित हो गया। संगीत आध्यात्मिक दृष्टि से हटकर मनोरंजन का साधन बन गया। इस युग में गायन–वादन एवं नृत्य ये तीनों ही कलाएँ प्रभावित हुई फलस्वरूप अनेक वाद्य यन्त्रों तथा गीत शैलियों का विकास हुआ। वाद्यों में तबला, सितार, सांरगी, रबाब आदि वाद्यों का विकास हुआ। गायन में ख्याल शैली का जन्म हुआ। इसके साथ ही ठुमरी दादरा एवं अन्य अद्भूत गीत शैलियो ने जन्म लिया। कथक नृत्य का विकास इसी युग की देन माना समझा जाता है। मध्ययुग मे विभिन्न गीत शैलियों तथा वाद्यों यन्त्रों के प्रचार के कारण इसें संगीत का स्वर्ण युग भी कहा जा सकता है।

मध्यकाल में संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही था एवं मुगल काल के पश्चात् भारत में आधुनिक काल का आगमन हुआ तथा इस काल में घरानों का अन्त होने लगा और संगीत शिक्षा विद्यालय शिक्षा में परिवर्तित हो गयी। आज भी संगीत को संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की भाँति पढ़ाया जा रहा है। इन शिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त सरकार द्वारा कुछ शिक्षण संस्थानों पर आधारित शिक्षण संस्थानों का संचालन भी किया जा रहा है अर्थात गुरू–शिष्य परम्परा वर्तमान में भी जीवित है। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारी भारत सरकार ने संगीत उत्थान हेतु हर सम्भव प्रयास किया है।

आज संगीत को आकाशवाणी, दूरदर्शन, शिक्षा, टैक्नोलॉजी आदि सभी क्षेत्रों से जोड़ा गया है जिससे संगीत अपने कदम विकास की ओर निरन्तर बढ़ा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् संगीत का कार्य क्षेत्र गायन, वादन तथा नृत्य तीनों ही क्षेत्रों में अत्यन्त विस्तृत हो गया है अर्थात संगीत की उन्नति निरन्तर प्रगति पर है। राज्य एवं राष्ट्रीय परिवेश में भारतीय संगीत नवीन युग की और अपने कदम बढ़ा रहा है। संगीत की संस्थागत शिक्षा को उचित बढ़ावा देना एवं समाज में भारतीय संगीत को सम्मान दिलाना एक चुनौति बनी हुई है।

आज के नवीन युग में वैज्ञानिक तकनीक का प्रभाव हमारे संगीत पर दिखाई देता है एवं संगीत की सभी विद्याओं मे नई–नई प्रवृतियाँ उभरकर हमारे सामने प्रकट हुई है। संगीत आज तक कैरियर बन चुका है संगीत, व्यवसायिक विज्ञान शिक्षा में संगीत का प्रयोग, आदि ऐसे क्षेत्र है जिनमें आर्थिक दृष्टि से आकर्षक कैरियर उपलब्ध है। आज अनेकों संगीत कम्पनीयों द्वारा ऑडियों एवं विडियों के एलबम बनाकर उन्हे बाजार में बेचकर अच्छे धन लाभ के साथ–साथ संगीत के प्रचार व प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योग्दान दे रहे है। राजस्थान में वीणा कैसेट्स कम्पनी एक अनुपम उदाहरण है। जिन्होने राजस्थान की संस्कृति को गीतों क माध्यम से सजाया व संवारा है। आज राज्य व देश के विभिन्न भागों में स्थापित शिक्षण संस्थाओं में उच्च उपाधि की दृष्टि से संगीत शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। देश में समझदार संगीत शिक्षक तैयार हो रहे है और संगीत शिक्षा को प्रगति की ओर अग्रसर कर रहे है।

वर्तमान समय में हमारा देश टेक्नॉलाजी की और निरन्तर बढ़ रहा है। देश में टेक्नॉलोजी के विकास से संगीत स्वर लिपि, ध्वनि मुद्रण व ध्वनि संग्रह शोध के कारण संगीत संग्रहीत होने लगा है। आज देश ने इतनी प्रगति की है जो नेचुरल तानपुरे की जगह इलेक्ट्रॉनिक तानपूरे या तबले की वजह से संगीत विद्यार्थी कहीं पर भी अपना अभ्यास कर सकता है।

आज कम्पूटर तथा इण्टरनेट के माध्यम से विद्यार्थी बड़े–बड़े संगीत कलाकारों को सुन–सुन कर संगीत की बारीकियों को समझने का प्रयास कर रहे है तथा संगीत शिक्षा की अनेक बेवसाइटें तैयार की गयी है। जिसके द्वारा कीसी भी इच्छित कलाकार का गाना डाउनलोड कर संगीत का आनन्द प्राप्त कर सकते है।

वर्तमान समय में कुछ युवा कलाकारों का झुकाव फ्यूजन म्यूजिक की तरफ भी दिखाई देता है। देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में गुणीजनों के सांगीतिक लेखों को प्रकाशित किया जा रहा है। आज आकाशवाणी व दूरदर्शन के केन्द्रों से भी संगीत के कंई कार्यक्रम तैयार कर प्रसारित किए जा रहे है। राज्यों की संगीत नाटक अकादमियों द्वारा संग्रहालयों की स्थापना कर भारतीय संगीत की मूल्यवान धरोहर को सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है।

आज शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न संस्थाएँ अपना योगदान दे रही है जिनमें केन्द्रिय संगीत नाटक अकादमी, सांस्कृतिक मन्त्रालय, आई.सी.टी./यू.जी.सी. का संगीत विकास में सहारनीय कार्य रहा है। देश के कई स्थानों पर संगीत महोत्सव, संगीत सेमिनार एवं संगीत कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है जो संगीत के बढ़ते कदमों का शुभ संकेत है।

mi lgkj

,d Hkkoh ’kk/k

lEHkkouk,¡

mi lgkj] ,d Hkkoh 'kk/k lEHkkouk,¡

राजस्थान को भारत का सबसे बड़ा राज्य होने का गौरव प्राप्त है तथा यहाँ की संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था का विकास, ऐतिहासिक एवं भौगौलिक परिस्थितियों की देन मानी जाती है।

यहाँ की कला एवं संस्कृति को विश्व में सर्वोच्य स्थान दिया गया है तथा यहाँ के दुर्ग तथा किले हमारे साहस एवं सौन्दर्य के परिचायक समझे जाते है। राजस्थान की कला एवं संस्कृति ने सदैव पर्यटको को अपनी और आकर्षित किया है। इस प्रदेश के विभिन्न भू–भागों को अलग–अलग नामों से जाना जाता था। जैसे मारवाड़, मेवाड़, शैखावटी, हाड़ौती, ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत, कोटा, बून्दी, झालावाड़, बारां तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत टोंक जयपुर तथा दौसा जिले गणना की जाती है।

स्वतन्त्रता से पूर्व हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा द्वारा ही दी जाती थी। परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् क्षेत्र में सरकार का गठन होते ही सरकार द्वारा संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत विषय का अध्ययन करवाया जाने लगा तथा कई शिक्षार्थी इन शिक्षण संस्थानों में संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इन शिक्षण संस्थानों में राजकीय तथा निजी शिक्षण संस्थाएँ संगीत प्रचार–प्रसार हेतु प्रयासरत है।

मानव प्रारम्भ से ही सौन्दर्य का प्रेमी रहा है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह सुन्दरता की कामना चाहता है। मानव अपने मन–मस्तिष्क तथा शरीर द्वारा जो भी कार्य करता है। उसे कला कहा जाता सकता है। कला ही मानव के भावों तथा विचारों को प्रकट करने का साधन है। अतः मानव द्वारा जो भी कार्य किया जाता है उसे कला कहा जा सकता है।

कला का क्षेत्र व्यापक होता है। जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, काव्यकला एवं संगीत कला इत्यादि। इन सभी कलाओं में रूप विधान के द्वारा ही कला प्रकट होती है। हमारे देश की संस्कृति बड़ी ही अनूठी मानी जाती है तथा इसकी गोद में असंख्य

दुलर्भ चीजों का समागम है। कला के द्वारा हमारी सभ्यता व संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होता रहता है।

संगीत अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी तक पहुँचाता हैं। क्योंकि संगीत एवं संस्कृति दोनो ही एक दूसरे पर निर्भर करते है। अतः सभी ललित कलाएँ हमारे समाज एवं संस्कृति से घनिष्ठ संबंध रखती है। हमारे समाज में संगीत का स्थान सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत मानव से जुड़ा हुआ है अतः संगीत कला को सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। संगीत एक ऐसी कला है जो देशी–विदेशी लोगों को अपनी और आकर्षित करता है। आज कई लोग संगीत के माध्यम से अपना जीवन यापन कर रहे है।

वर्तमान समय में कई लोग राजकीय तथा निजी शिक्षण संस्थाओं में संगीत शिक्षकों के रूप में अध्यापन कार्य कर अपना जीवन यापन कर रहे है। इसके अतिरिक्त, वृन्दवादन, फिल्म संगीत, संगीत से ओत–प्रोत विभिन्न विज्ञापनों में कार्य कर अपना जीवन यापन कर सकते है। अतः संगीत जीवन यापन करने में भी सहायक सिद्व हुआ है।

प्राचीनकाल से लेकर मध्यकाल तक संगीत शिक्षण गुरू शिष्य–परम्परा द्वारा ही दी जाती थी। मुगलकाल के पश्चात् आधुनिक काल का आगमन हुआ और घरानों का अन्त होने लगा। फलस्वरूप संगीत शिक्षा विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा में परिवर्तित होकर यह सभी के लिए सुलभ हो गई। गुरू शिष्य परम्परा आज भी जीवित है।

इस परम्परा ने असंख्य कलाकारों को ईजाद किया है। संस्थागत शिक्षण का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि यह पद्वति क्रियात्मक तथा शास्त्रात्मक दोनों ही पक्षों पर बल देती है।

आज देश में संगीत के कई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय संगीत विभागों में संगीत शिक्षा प्रदान की जा रही है।प्रस्तुत शोध संगीत के उन्नयन में हाड़ौती

एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की शिक्षण संस्थानों की भूमिका, को उजागर करने एवं उनका परिचय करवाने हेतु शोधार्थी द्वारा एक प्रश्नावली तैयार की गई।

प्रश्नावली के माध्यम से शोधार्थी ने सभी संगीत विभागाध्यक्षों से साक्षात्कार कर प्रश्नावलियाँ भरवाई एवं प्रश्नावलियों द्वारा प्राप्त उत्तरों के आधार पर महाविद्यालय, विश्वविद्यालय संगीत विभागों का मूल्यांकन करने के पश्चात् शोधार्थी को जो निष्कर्ष प्राप्त हुये वह निम्न प्रकार से है।

हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित संगीत शिक्षण संस्थाओं में दस निजी महाविद्यालय तथा चार राजकीय महाविद्यालय है जहाँ संगीत विषय को स्नातक तथा अधिस्नातक स्तर तक अध्ययन करवाया जा रहा है। विश्वविद्यालय स्तर के संस्थानों में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर एवं बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली जिनमें संगीत विषय को स्नातक, अधिस्नातक शिक्षण के अतिरिक्त शोध कार्य करने की सुविद्या भी प्रदान करते है। इनके अतिरिक्त हाड़ौती क्षेत्र में दो राजकीय संगीत विद्यालय संचालित है जिनमें भूषण एवं प्रभाकर, गायन, वादन एवं नृत्य की कक्षाएँ संचालित है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित दौसा तथा हाड़ौती क्षेत्र स्थित बारां एवं झालावाड़ जिलों में महाविद्यालय स्तर का एक भी शिक्षण संस्थान नहीं है जहाँ संगीत विषय का अध्ययन करवाया जाता है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित निजी महाविद्यालयों में सत्य सांई महाविद्यालय एवं वैदिक कन्या महाविद्यालय ऐसे महाविद्यालय है जहॉ संगीत विषय का अधिस्नातक स्तर तक अध्ययन करवाया जाता है। हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की संगीत शिक्षण संस्थाओं में संगीत शिक्षकों, प्राध्यापकों तथा तबला वादकों के पद पर रिक्त चल रहे है। कुछ निजी शिक्षण संस्थाओं में स्नातक व अधिस्नातक स्तर पर एक ही प्राध्यापक से अध्यापन कार्य करवाया जा रहा है तथा समय–समय पर तबला वादको को आवश्यकतानुसार रख लिया जाता है।

हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी राजकीय एवं निजी महाविद्यालय अपने निजी भवन में संचालित है। परन्तु कोटा का राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय

आज भी अपने निजी भवन में नहीं चल रहा है। इस विद्यालय को सरकार द्वारा जवाहर नगर कोटा में भूमि आंवटित की गई है लेकिन भवन निर्माण का कार्य अभी भी शुरू नहीं हुआ है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी शिक्षण संस्थाओं की परीक्षाओं का आयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, बनस्थली विद्यापीठ की परीक्षाएँ बनस्थली विद्यापीठ तथा हाड़ौती क्षेत्र स्थित शिक्षण संस्थाओं की परीक्षाओं का आयोजन कोटा विश्वविद्यालय, कोटा एवं प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा आयोजित किया जाता है।

हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की संगीत शिक्षण संस्थाओं में गायन, वादन तथा कथक नृत्य की कक्षाएँ संचालित की जा रही है एवं इन शिक्षण संस्थाओं से उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों में से लगभग 50 प्रतिशत संगीत विद्यार्थियों ने संगीत को अपना व्यवसाय बनाया है।

हाड़ौती एवंम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी शिक्षण संस्थाओं में संगीत विषय में प्रवेश से पूर्व सभी छात्र–छात्राओं का सांगीतिक परीक्षण किया, जाता है तथा संगीत के सभी विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन की सुविधा प्रदान की जाती है।

संगीत विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने हेतु संगीत प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण के दौरान दृश्यात्मक व श्रव्यात्मक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

सभी संगीत विभागों में समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत विद्यार्थियों के लिए सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है तथा संगीत विभाग में विद्यार्थियों के उचित अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था की गई है।

संगीत की सभी शिक्षण संस्थाओं में सभी विद्यार्थियों को खरज साधना का गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आवाज में माधुर्य का भाव उत्पन्न किया जाता है। संगीत की सभी शिक्षण संस्थाओं में संगीत के सैद्वान्तिक व क्रियात्मक शिक्षण की अलग–अलग व्यवस्था की गई है। संगीत के कई महाविद्यालय संगीत विभाग ऐसे है जिनमें केवल छात्राएँ ही अध्ययन करती है तथा कुछ महाविद्यालय सह शिक्षा पर आधारित है एवम् कुछ संगीत विभागों में शोध कार्य करने की उचित व्यवस्था है। इन सभी शिक्षण

संस्थानों ने संगीत विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है एवम् देश को राष्ट्रीय स्तर के कलाकार प्रदान किये है।

Hkkoh ‘kks/k laHkkouk,¡

''संगीत उन्न्यन में हाड़ौती एवम् ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों की भूमिका'' प्रस्तुत शोध शीर्षक विषय पर पूर्व में कोई भी कार्य नहीं हुआ है। इस उद्धेश्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं की भूमिका को उजागर करने का प्रयत्न किया है। वस्तुतः यह शोध कार्य सम्पूर्ण राजस्थान स्तर पर होना चाहिए था, किन्तु कार्य क्षेत्र की विस्तृता एवं सीमा के कारण हाड़ौती तथा ढूंढ़ाड़ क्षेत्र को ही मैने अपना कार्यक्षेत्र चुना है।

परन्तु नवीन शोधार्थियों द्वारा राजस्थान के अन्य क्षेत्र जैसे मेवाड़, शेखावाटी, डॉग, मारवाड़ इत्यादी। इन सभी क्षेत्रों में स्थित संगीत शिक्षण संस्थाओं पर अग्रिम शोधार्थियों द्वारा शोध कार्य करवाया जा सकता हैं तथा इन सभी क्षेत्रों में प्रचलित शिक्षण संस्थाओं की भूमिका को उजागर किया जा सकता है। अतः आगे भी संगीत में शोध कार्य करवाने की अपार संभावनाएँ निहित है।

Ekafty;s mUgh dks feyrh gS ftudks liuks esa tku gksrh gSA
ia[kks ls dqN ugh gksrk] gkSlyks ls mM+ku gksrh gSAA
vHkh rks vlyh eafty ikuk ckdh gS] vHkh rks bjknks dk bfErgku ckdh gSA
vHkh rks rkSyh eqBh Hkj tehu] vHkh rkSyuk आसमाँ ckdh gSAA

हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की कुछ शिक्षण संस्थाएँ सहशिक्षा पर आधारित है एवं कुछ शिक्षण संस्थाओं में केवल महिलाएँ ही अध्ययन करती है।

ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित विश्वविद्यालय संगीत विभागों में शोधकार्य की व्यवस्थाएँ है एवं हाड़ौती में राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय में ही शोध कार्य करने की व्यवस्था है एवं सभी शिक्षण व्यवस्थाओं में संगीत जगत को बड़े–बड़े कलाकार प्रदान किए है। राजस्थान का हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र सांगीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय संगीत के विकास में यहाँ की अनेक संस्थाएँ स्वतन्त्रता से पूर्व व पश्चात कार्य कर रही है एवं प्रस्तुत शोध का महत्व रहा है की कोई भी संगीत शोधार्थी यदि हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं व कलाकारों के संबंध में जानकारी प्राप्त करना चाहे तो वह इस शोध प्रबन्ध से जानकारी प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

lxhr f'k{kk dk uohu f'k{kk inku dju gsrq lq>ko

आधुनिक संगीत शिक्षण प्रणाली के सुदृढ़ बनाने व संस्थाओं को सुचारू शिक्षण कार्य हेतु निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान आकृष्ट करना परम आवष्यक है।

1. हाड़ौती व ढूंढ़ाड़ क्षेत्र स्थित सभी शिक्षण संस्थाओं में रिक्त चल रहे संगीत शिक्षकों, प्राध्यापकों व तबला वादकों के पदों पर सरकार द्वारा शीघ्र ही नियुक्ति करनी चाहिए। जिससे संगीत विद्यार्थियों के अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं हो।

2. जो शिक्षण संस्थाएँ अपने निजी भवन में संचालित नहीं है उन शिक्षण संस्थाओं को सरकार द्वारा भवन उपलब्ध करवाना चाहिए इससे संगीत के उपकरणों को सुरक्षित रखने एवं संगीत विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान किया जा सके।

3. हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र की कुछ शिक्षण संस्थाओं में कंठ संगीत के अतिरिक्त वादन में सितार, वायलिन व तबले की कक्षाएँ संचालित की जा रही है। इनके

अतिरिक्त पाठ्यक्रम में और भी वाद्य यन्त्र जैसे बांसुरी दिलरूबा, सांरगी, आदि के नाम दिए होते है। अतः सरकार को चाहिए की इन वाद्य यन्त्रों की भी संगीत विभागों में नियमित कक्षाएँ प्रारम्भ करनी चाहिए। फलस्वरूप इन वाद्य यन्त्रों के भी शिक्षक एवं कलाकार संगीत जगत को प्राप्त हो सकें।

4. उपयुक्त पाठ्यक्रमों का चुनाव :– संगीत की विभिन्न कक्षाओं के लिए उनके स्तर के अनुसार ही पाठ्यक्रमों का निर्धारण करना चाहिए। पाठ्यक्रमों के निर्धारण में संगीत के योग्य शिक्षकों की मदद लेनी चाहिए। क्योंकि संगीत विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्यक्रम होने से वह परीक्षा की तैयारी अच्छे से कर सकता है एवं विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में तो राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर समान पाठ्यक्रम ही होना चाहिए।

5. संगीत विद्यार्थियों के अभ्यास पर बल देना :–संगीत विद्यार्थियों का यह नैतिक कर्तव्य है की कक्षा में संगीत शिक्षक द्वारा करायें गयें रागों व स्वर समुदायों का उचित ढ़ंग से अभ्यास करें एवं अभ्यास करते समय उत्पन्न होने वाले शारीरिक दोषों से बचे। कम से कम 4–5 घन्टे रोज नियमित अभ्यास की आदत बना लेनी चाहिए। मैनें एक संगीत गुरूजी के मुख से ऐसा कहते हुए सुना है कि साधों तो स्वर है ना साधो तो जीवन बेसुरा है। अर्थात अगर संगीत का उचित व नियमित अभ्यास नहीं करेगें तो जीवन बर्बाद हो सकता है। क्योंकि बिना अभ्यास के उसमें निखार लाना सम्भव नहीं है अतः सभी संगीत शिक्षकों को संगीत अभ्यास पर अत्यधिक बल देना चाहिए।

6. संगीत शिक्षकों को अपने शिक्षण में विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग कर संगीत विषय को रूचिकर बनाना चाहिए एवं शिक्षक को प्रायोगिक व शास्त्रात्मक दोनों ही पक्षों पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। संगीत शिक्षक को इस बात का ध्यान रख कर ही स्वरों को अभ्यास करवाना चाहिए कि वह उसे आसानी से ग्रहण कर सके। कई बार शिक्षक आनन्द की आनन्द में बहुत ही आकर्षक स्वर समुदाय गाने लग जाते है ऐसे में उनको स्वंय को ही आनन्द आता रहता है पर उसे संगीत

विद्यार्थी ग्रहण ही नहीं कर पाते है अतः संगीत शिक्षक को बार–बार विद्यार्थियों को गवाकर देखते रहना चाहिए।

7. देश के विभिन्न संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के संगीत शिक्षकों तथा संगीत कलाकारों को आमन्त्रित कर संगीत गोष्ठियों का आयोजन करवाना चाहिए। जिससे विशेषज्ञों द्वारा दिए गए व्याख्यानों से संगीत विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।
8. राज्य एवं भारत सरकार को चाहिए की संगीत शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इस क्षेत्र में रोजगार के उचित अवसर भी बढ़ाऐं। आज संगीत में रोजगार केवल उच्च शिक्षा में ही है। वह भी बहुत ही सीमित अर्थात सरकार द्वारा जिस प्रकार अन्य विषयों के शिक्षकों व प्राध्यापकों की भर्ती की जाती है। ठीक उसी प्रकार संगीत में भी पर्याप्त मात्रा में शिक्षकों को रोजगार देना चाहिए। आज कई संगीत विद्यार्थी एम.ए., पीएच.डी. करने के बाद भी बेरोजगारों की लम्बी कतार में खड़े–खड़े अपनी आयु सीमा ही पार कर जाते और उनमें संगीत के प्रति उदासी का भाव उत्पन्न होने लगता है। ऐसे में युवा संगीत की और आकर्षित नहीं होते तथा पहले से ही लाईन में खड़े बेरोजगार संगीत शिक्षको को देखकर नये विद्यार्थी इस और आना ही नहीं चाहते है। अतः इस और सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए।
9. प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत विषय का संचालन :–वर्तमान समय में संगीत विषय को केवल उच्च माध्यमिक व महाविद्यालय स्तर पर ही संचालित किया जा रहा है। यहाँ परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि इस विषय को यदि प्राथमिक स्तर से ही पढ़ाया जाए तो विद्यार्थी को संगीत का परिचय आसानी से हो सकेगा। इस विषय को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप में लागू करना चाहिए। यदि प्राथमिक स्तर पर ही विद्यार्थी को संगीत का ज्ञान हो जायेगा तो माध्यमिक, उच्च माध्यमिक कक्षाओं तक संगीत की बारीकियों को समझने लगेगा और संगीत की और आकर्षित होगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति तक वह एक योग्य कलाकार बन कर संगीत जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ सकता है।

बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली एक ऐसा अनुपम उदाहरण है जहाँ संगीत को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अध्ययन करवाया जाता है। यहाँ भारत के विभिन्न प्रदेशों से आकर छात्राएँ संगीत की शिक्षा प्राप्त कर रही है। अतः सरकार को इस और विशेष ध्यान देना चाहिए।

10. केन्द्रिय विद्यालयों एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों की भाँति राजस्थान सरकार को भी प्राथमिक संगीत शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाहिए। अर्थात प्रत्येक प्राइमरी, मिडिल व माध्यमिक विद्यालय में एक संगीत शिक्षक नियुक्त होना चाहिए। तभी जाकर हमारे देश के बच्चे संगीत से परिचित हो सकेगें।

11. सरकार द्वारा राज्य के हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं के संगीत विभागों में अनुकुल वातावरण स्थापित करना चाहिए तथा पर्याप्त मात्रा में वाद्य यन्त्रों की व्यवस्था करनी चाहिए।

12. शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों में संगीत पुस्तकों का अभाव नहीं होना चाहिए तथा शोद्यार्थियों को उचित आर्थिक सहायता भी सरकार द्वारा दी जानी चाहिए तभी जाकर संगीत विद्यार्थी इसकी ओर आकर्षित होंगें। सरकार द्वारा इन संगीत विभागों में अभ्यास हेतु उचित तबला वादकों की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। अर्थात सरकार को संगीत कला को विकसित करने हेतु हर सम्भव प्रयास करना चाहिए तभी जाकर ये शिक्षण संस्थाऐं उन्नति कर पायेगी।

13. संगीत में कंठ साधना पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। संगीत विद्यार्थियों को प्रारम्भिक कक्षाओं से ही अलंकारों एवं पल्टो का गहन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा योग्य विद्यार्थियों का कार्यक्रम मंच पर प्रस्तुत करवाया जाना चाहिए।

14. भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर संगीत विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संगीत के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम को मध्य नजर रखते हुए उन्हें सम्मानित किया जाना चाहिए।

15. सभी सरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थाओं में संगीत विषय को अनिवार्य शिक्षा के रूप में लागू किया जाना चाहिए।

16. राजस्थान संगीत नाटक अकादमी तथा संस्कृति विभाग द्वारा जरूरत मंद संगीत शिक्षार्थियों एवं शोद्यार्थियों को आर्थिक सहायता के रूप में विशेष छात्रवृति दी जानी चाहिए जिससे संगीत विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान आर्थिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ें।

17. संगीत की उच्च कक्षाओं में उन्ही शिक्षार्थियों को प्रवेश देना चाहिए जो संगीत सीखने की वास्तविक क्षमता तथा श्रद्वा रखते है।

18. संगीत के पाठ्यक्रम में अधिस्नातक स्तर पर संगीत के विभिन्न घरानों में सें एक घराने को चुनकर उसकी बारीकियों को सीखने पर अत्यधिक बल देना चाहिए। क्योंकि संगीत शिक्षार्थी किसी भी एक घराने की गायकी को सीखेगा तो संगीत जगत को अमुख घराने का कलाकार प्राप्त हो सकता है।
19. हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र में प्रचलित सभी विश्वविद्यालयों में संगीत विषय का पाठ्यक्रम स्नातक तथा अधिस्नातक स्तर पर (सैद्वान्तिक तथा प्रायोगिक) समान होना चाहियें।
20. राज्य सरकार द्वारा विद्यालय शिक्षा विभाग (संगीत व्याख्याता) तथा कॉलेज शिक्षा विभाग (संगीत व्याख्याता) भर्ती परीक्षाओं में संगीत विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक अभिलेख **(Good Acadmic Record)** के नियम से मुक्त रखा जाना चाहिए। क्योंकि संगीत एक कला है और कला में साधना की आवश्यकता होती है। अतः सरकार द्वारा कला को प्रोत्साहन देते हुए इस और अवश्य ध्यान देना चाहिए।

उपयुक्त सभी सुझावों पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो निश्चय ही संगीत की उन्नति एवं प्रचार–प्रसार होगा।

!! t ; lxhr !!

हाड़ौती एवं ढूंढ़ाड़ क्षेत्र के संगीत शिक्षण संस्थाओं की प्रमुख (झलकियाँ)

संगीत के छात्र – छात्राओं को संगीत अध्ययन करवाते हुए संगीत विभागाध्यक्ष डा0 निशि माथुर, राजकीय महाविधालय, बून्दी।

संगीत विभागाध्यक्ष डॉ0 निशि माथुर के साथ संगीत शोधार्थी

संगीत की छात्राओं को संगीत अध्ययन करवाते हुए संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती प्रेरणा शर्मा, राजकीय जानकी देवी बजाज कन्या महाविधालय, कोटा।

संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती प्रेरणा शर्मा के साथ संगीत शोधार्थी

संगीत की छात्राओं को संगीत अध्ययन करवाते हुए संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती प्रभा बजाज, कानोड़िया महिला महाविधालय, जयपुर।

संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती प्रभा बजाज एवं संगीत छात्राओं के साथ संगीत शोधार्थी

संगीत विभागाध्यक्ष डॉ0 श्याम शर्मा के साथ संगीत शोधार्थी

संगीत विभागाध्यक्ष (श्री सत्य सांई, महिला महाविद्यालय, जयपुर) के साथ संगीत शोधार्थी

संगीत की छात्राओं को संगीत अध्ययन करवाते हुए संगीत विभागाध्यक्ष

श्री घनश्याम जादौन, भवानी निकेतन महिला महाविधालय, जयपुर।

ध्रुपद विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग से आर्शीवाद प्राप्त करते हुए शोधार्थी

कथक नृत्य का अभ्यास करवाते हुए नृत्य प्राध्यापिका, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

डॉ. संगीता गोकटे एवं संगीत छात्राओं के साथ संगीत शोधार्थी

वैदिक कन्या महिला महाविद्यालय जयपुर

संगीत विधार्थियों को अध्ययन करवाते हुए डॉ0 गौरव जैन, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

डॉ0 गौरव जैन के साथ संगीत शोधार्थी

MkO vkjrh HkV'V rSyax fo/kkfFk;ksa dks laxhr dk vH;kl djokrs gq, Lkaxhr foHkkx] jktLFkku fo'ofo|ky;] t;iqj

Lkaxhr foHkkx] cuLFkyh fo|kihB esa laxhr xk;u dk vH;kl djrh gqbZ Nk=k,¡

I anHkl xiUFk Iph

1. राजस्थान अध्ययन भाग–1 डॉ. हरिमोहन सक्सैना, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर
2. राजस्थान अध्ययन भाग–3, डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर, 2011
3. लक्ष्य, डॉ. महावीर जैन, मनु प्रकाशन न्यू सांगानेर रोड़ जयपुर
4. राजस्थान संजीवनी, श्री गजेन्द्र सिंह, हर्ष प्रकाशन, कोटा राजस्थान
5. राजस्थान धरोहर, कुवँर कनक सिंह राव, पिंकसिटी पब्लिशर्स राम भवन चौड़ा रास्ता, जयपुर राजस्थान
6. शिखर, जी.सी. जाखड़, राघव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स नाटाणियाँ का रास्ता जयपुर राजस्थान
7. राजस्थान सुजस, डॉ. अमर सिंह राठौड़, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान जयपुर 2010–11
8. राय, नवरंग राय, राय पब्लिकेशन्स, चौड़ा रास्ता जयपुर, 2013
9. राजस्थान की संगीत परम्परा, डॉ. मंजुश्री क्षीर सागर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर राजस्थान, 2004
10. पत्रिका इयर बुक, आनन्द जोशी, राजस्थान पत्रिका प्रा. लिमिटेड 5–ई झालाना क्षेत्र जयपुर राजस्थान, 2013
11. सम्राट रूपप्रद चित्रकला के मूलाधार, डॉ. आर.डी.लाटा. अनन्त पब्लिकेशन्स चौड़ रास्ता जयपुर, 2013
12. संगीत मैनुअल, डॉ. मृत्युजंय शर्मा, एच.जी. पब्लिकेशन्स न्यू दिल्ली, 2013
13. कला सिद्वान्त एवं भारतीय मूर्तिकला, डॉ. ममता चतुर्वेदी, राजस्थान राज्य पुस्तक मण्डल, जयपुर 2012
14. संगीत मासिक अंक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, जून–2013
15. भारतीय संगीत कलाकार, वंशानुक्रम और पर्यावरण, डॉ. निशि माथुर, पब्लिकेशन्स स्कीम, मिश्रराजाजी का रास्ता, जयपुर, 2000

16. राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य, डॉ. जयसिंह नीरज राजस्थानी ग्रन्थकार, जोधपुर, 2000
17. सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ, डॉ. सरोज भार्गव, कला प्रकाशन न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू. वाराणासी (उत्तर प्रदेश) 1999
18. मध्यकालीन संगीत और तत्कालीन समाज पर प्रभाव नमिता बेनर्जी,
19. संगीत पॉपुलर मास्टर गाइड, डॉ. गुजंन सक्सैना, रमेश, ओ.पी. गुप्ता , रमेश पब्लिशिन्ग हाऊस नई दिल्ली
20. भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. शरद चन्द्र श्री धर पंराजये, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 2010
21. संगीत मे नेट सफलता के पथ, डॉ. निशा रावत, संजय प्रकाशन नई दिल्ली (भारत) 2010
22. संगीत विशारद, बसन्त, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तरप्रदेश)
23. संगीत मासिक अंक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तरप्रदेश)
24. संगीत निबन्ध संग्रह, प्रो. हरिशचन्द्र श्री वास्तव, संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका, इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) 2003
25. बूंदी राज्य के ऐतिहासिक स्थल, पीताम्बर दत्त शर्मा, राजस्थानी ग्रन्थाकार, जोधपुर
26. कोटा एक विंहगम दृष्टि, धर्मेन्द्र भटनागर, मंजु प्रकाशन, कोटा
27. जयपुर का इतिहास, चन्द्रमणि सिंह, राजस्थानी ग्रन्थकार, जोधपुर
28. नेट,. <<kM विकिपीडीया,
29. विवरणिका एवं पाठ्यक्रम राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर राजस्थान जयपुर–2013
30. बनस्थली विद्यापीठ विवरणिका पत्रिका, विद्यालय शिक्षा, 2009–10
31. राजस्थान के दरबारी संगीतज्ञ, डॉ. कौमुदी बर्डे, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर (राज.) 2006
32. रसमंजरी शतक, पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग, ध्रुवमद धाम प्रकाशन जयपुर, 2013

33. संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली डॉ. अमरेश चन्द्र चौबे, जय कृष्ण ब्रदर्स, महात्मा गाँधी मार्ग, अजमेर
34. संगीत परीक्षा अंक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तरप्रदेश) जनवरी–फरवरी 1987
35. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप डॉ.मधुबाला सक्सैना, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्ड़ीगढ़, 1990
36. संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षण प्रणाली, डॉ. पुष्पेन्द्र शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, न्यू चन्द्रवाल, जवाहर नगर, दिल्ली –1992
37. ध्रुवावाणी, रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र ब्रहमपुरी जयपुर, 2013
38. संगीत मासिक अंक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तरप्रदेश) मार्च–2014
39. हमारा आधुनिक संगीत, डॉ. सुशील कुमार चौबे, (उत्तरप्रदेश) हिन्दी संस्थान, लखवऊ, 2005
40. संगीत परीक्षा अंक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस (उत्तरप्रदेश) जनवरी–फरवरी, 1987
41. संगीत कला विहार, श्रीरधुनाथ केरकर, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मिरज महाराष्ट्र, मई 2006
42. संगीत कला बिहार, श्रीरधुनाथ केरकर, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मिरज महाराष्ट्र, मई 2005
43. संगीत स्मारिका परम्परा, श्री चन्द्रमोहन सक्सैना, संगीतिका–कोटा, 2005
44. हाड़ौती व.<I<kM़ क्षेत्र स्थित सभी संगीत शिक्षण संस्थाओं के संगीत विभागों व शिक्षक कलाकारों का प्रश्नावली द्वारा व्यक्तिगत साक्षात्कार।
45. .banasthaliveedhyapeeth.org